Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

।। ओ३म ।।

जन ज्ञान

383

(मासिक)

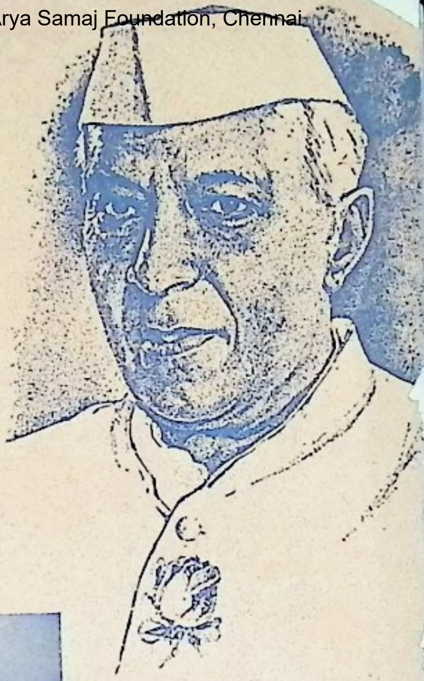

कार्तिक संवत् २०२७

नवम्बर सन् १९७०

भूत और भविष्य

मूल्य १)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नैटाल (दक्षिणी अफ्रीका) में
आर्यसमाज के आधार-स्तंभ
श्री ईश्वरसिंह जी आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—संरक्षक—
—चौ० प्रतापसिंह—
—संचालक—
भारतेन्द्रनाथ

★

[भा]रती के प्रत्येक मानव के हृदय मन्दिर पर 'वेद-[ज्ञा]न' की पावन पताका फहराने के लिए

आर्य जनता का

अपना

प्रतिनिधि प्रकाशन

'जन-ज्ञान'

(मासिक)

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
(निकट ३१ नाईवाला)
करोलबाग, नई दिल्ली-५

★

फोन : ५६६६३९

★

संपादक
—राकेश रानी—

★

वार्षिक मूल्य	१०)
एक प्रति	१)
विदेश में	एक पौण्ड
वर्ष ३	अंक ७

प्रिय पाठक गण !

मैं यहां अकेला बैठा सोच रहा हूं कि कैसे मेरे गुरु देव दयानन्द का कार्य पूरा हो। उन्होंने मनुष्य मात्र की विचारधारा बदलने का जो महान् कार्य आरम्भ किया था उसे कैसे मूर्त रूप दिया जा सके?

सबसे ज्वलन्त प्रश्न तो केवल यह है कि जिन-पर दायित्व था ऋषि का कार्य पूरा करने का, वे पथभ्रष्ट हो गए हैं। बड़ी-बड़ी सभाओं, समाजों और संस्थाओं के मान्य अधिकारी ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को भुला चुके हैं। उन्हें 'ऋषि-लक्ष्य' पूर्ति के स्थान पर चिन्ता रहती है पदों की, स्वार्थ की!

चारों ओर आग लगी है, मेरा प्यारा देश जल रहा है और रक्षा में समर्थ आर्य समाज सो रहा है। मैं सोए सिंह—आर्य समाज को सिंह की तरह दहाड़ते हुए, वीर की तरह शत्रु सेना को ललकारते हुए देखना चाहता हूं।

मेरा आर्य समाज, मेरे गुरु दयानन्द का उत्तराधिकारी आर्य समाज, सत्य का प्रहरी, रक्षक आर्य समाज जाग जाए तो देश धर्म, और मानवता बच सकती है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप भी सोए आर्य समाज को जगाने में मेरा साथ दें।

आर्य समाज के नेताओं, अधिकारियों से कहें, उनके पैर पकड़-पकड़ कर कहें, नेताओ! दया करो दयानन्द पर, देश और धर्म पर, आपस में लड़ना छोड़ो। गद्दियां और पद छोड़ो, दयानन्द के सैनिक बनकर उठो! लड़ो अधर्म से अज्ञान से।

आप इस जागरण यज्ञ में भाग लें। सोए, भटके आर्य नेताओं को जगाएं, यह मेरी इच्छा है। और प्रार्थना यह भी कि आप जो भी हों. अपनी पूरी शक्ति गुरुदेव दयानन्द के कार्य पूरी करने में लगाएं।

आपका
भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेज़ी सत्यार्थ प्रकाश के बाद

अब

"जन-ज्ञान प्रकाशन" सगर्व भेंट करता है

महर्षि दयानन्द का सबसे प्रामाणिक अंग्रेजी जीवन-चरित्र

Swami Dayananda Saraswati

(Life and Teachings)

By

Late Shri Chhajju Singh

पुस्तक को पं० लेखराम जी के जीवन-चरित्र के आधार पर लाला लाजपतराय आदि के सहयोग से तैयार किया गया था।

अनेक आकर्षक चित्रों सहित : २३ × ३६ साइज़
वढ़िया कागज़ : सजिल्द मूल्य केवल ८) ।

किन्तु १५ दिसम्बर १९७० तक केवल ४) प्रति

अपनी प्रतियां आज ही सुरक्षित करा लें : शीघ्रता करें

१५ दिसम्बर के बाद रियायती दर पर कोई आदेश स्वीकार्य न होगा

जन-ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

—भारतेन्द्रनाथ
संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरे भाई !

तुम सारे बंधन तोड़ रहे हो, तुम्हारी मर्यादाएं समाप्त हो रही हैं। 'धर्म' शब्द का महत्व, रक्षा-कवच के साथ ही समाप्त हो गया है। पता नहीं क्या हो गया है तुम्हें······

अपनी बेटियों की बिक्री पर तुम्हारा रक्त खौलता नहीं, जिस "गौ" को तुम मां कहते हो, उसकी हत्या प्रतिदिन कराते हो। जिस भारत मां की तुम आराधना करते हो, उस पर आततायी के पद प्रहार से भी तुम हुंकार नहीं करते।

विदेशी पादरी बढ़ रहे हैं और तुम सो रहे हो, माओ के चेले लाल झंडा लेकर तुम्हारा सब कुछ जला रहे हैं और तुम मौन हो। तुम्हारा संपूर्ण गौरव, धर्म और सभ्यता दांव पर लगी है और तुम शांत हो।

समझ नहीं आता कि तुम्हें क्या कहूं···भाई भी कहूं या न कहूं ? क्योंकि भाई शब्द में वह पवित्र भाव छिपे हैं जिनकी उपमा नहीं। बहन की पुकार पर भाई सर्वस्व न्योछावर कर देता है और अब लाखों बहनों की कराह भी तुम्हारी नींद नहीं खोल पा रही। बहन या बेटी सब तुमने भुला दीं। मां भी भूल गये तो फिर और शेष क्या रहा ?

तुम राम-कृष्ण के वंशज आज वृहन्नला की भाषा में क्यों बोलते हो ? स्वार्थ ने तुम्हें क्यों मार दिया है···मेरे भाई ! तुम्हारी स्थिति देखकर मेरा हृदय रो रहा है।

मैं तुम्हें वीर-पुत्र के रूप में देखना चाहती हूँ। राम-कृष्ण, अभिमन्यु, शिवा और प्रताप का रक्त तुम्हारी शिराओं में प्रवाहित होना चाहिए।

भाई मेरे !

उठो······अभी कुछ नहीं बिगड़ा, उठो······काल जो सिर पर मंडरा रहा है उससे टक्कर लेने के लिए उठो ! आततायी शत्रु दलों के संहार के लिए उठो ! तुम्हें माँ बुला रही है, बहन बुला रही है—तुम्हारी बेटियाँ, विदेशी-चंगुलों में फंसी बुला रही हैं।

आर्य पुत्र होने की लाज तुम्हीं नहीं संभालोगे तो कौन संभालेगा ? गुरुदेव दयानन्द का काम तुम नहीं करोगे तो कौन करेगा ? आपस में लड़ना छोड़ो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्रौर आगे बढ़ो—शत्रु से लड़ने के लिए।

हर घर-ग्रांगन में युद्ध होगा। तुम सोते रहे या ग्रापस में लड़ते रहे तो सब कुछ मिट जाएगा। तुम जाग गए तो फ़िर वे हारेंगे तुम जीतोगे।

तुम्हारी विजय के लिए मैं तुम्हें जगाना चाहती हूं। मैं तुम्हें दयानन्द के वीर सैनिक के रूप में देखना चाहती हूँ। मैं तुम्हारे हाथ में वेद की ज्योति ग्रौर पाखंड-खंडिनी-पताका देखने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।

मेरे भाई उठो! तुमने भारत माँ का दूध पिया है, तो आज उसका मोल भी तुम्हीं चुकाग्रोगे। हाथों में चूड़ियां मत पहनो……वीर बनो। विजय वरो ग्रागे बढ़ो, देखो शत्रु जीतने न पाए।

बहिन के, प्रभु के ग्राशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं—

—राकेशरानी

अंग्रेजी भाषा में

महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र

जिसका पहला संस्करण ७०० से ग्रधिक पृष्ठों में है।

स्व० छज्जूसिंह जी द्वारा लिखित

ग्रापके, प्रभु के विश्वास पर प्रेस में दे दिया है
हमारे पास एक पैसा भी नहीं ग्रौर इसे छपाने के लिए
हजारों रुपया चाहिए।

जैसे आपने अंग्रेज़ी सत्यार्थप्रकाश छपा दिया—उसी तरह इसे भी छपाइए।

ग्रापका ग्राशीर्वाद ही हमारी शक्ति है।

गुरुदेव दयानन्द का अंग्रेज़ी जीवन-चरित्र छपाने हेतु ग्राज ही अपनी आहुति भेजिए

—राकेश रानी
संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र नाथ

इस धरती पर अमृत क्या है ?
आनन्द और संगीत का स्रोत क्या है ?
मानव मन का वांछित स्वर्ग क्या है ?
वह क्या है, जिसे पाकर मनुष्य—"देव" बन जाता है ?
वह क्या है जो अन्धकार का शत्रु है ?
वह क्या है जहां प्रकाश निरंतर नृत्य करता है ।

इन प्रश्नों का उत्तर है ':अध्यात्म"

'अध्यात्म' वह शब्द है जिसमें जीवन की सफलता का सार छिपा है । अणुबम से भी अधिक शक्तिशाली शस्त्रों का सामना करने का सामर्थ्य उत्पन्न करने वाला ब्रह्मास्त्र है "अध्यात्म"

अध्यात्म अर्थात् "आत्म-ज्ञान" । मनुष्य क्या है ? क्यों है; किसलिए है और जो वह है वह वस्तुत: क्या है, यह जानना ही अध्यात्म है । अपने को जानना कितना साधारण किन्तु कितना कठिन है; इसकी कल्पना भी सावारण नहीं । व्यक्ति की महत्ता का स्रोत इस विज्ञान में है, इसीलिए ज्ञान की अनन्त महिमा ऋषि मुनियों ने गायी ।

ब्राह्मण इसीलिए पूज्य था कि वह 'अध्यात्म' जानता था । विद्या का लक्ष्य ही था आत्म-विज्ञान (scince of soul) । इस विज्ञान द्वारा मनुष्य-मनुष्य बनता था, वह सब कुछ पा लेता था, जिसे पाने के लिए उसने धरती पर जन्म लिया था ।

समय के हेर-फेर ने आत्म-विज्ञान के स्थान पर प्रकृति-विज्ञान science of nature को महत्व दिया है । हमने आत्मा को भुलाकर शरीर की उपासना आरंभ की है । शरीर का उपासक पशु बन सकता है, मनुष्य नहीं ।

सचमुच बिना अपने को जाने हम कितना भटक जाते हैं । हमारे मन और मस्तिष्क सभी बदल जाते हैं । हम मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देखते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। निर्माण में विनाश और महानाश में निर्माण हमें प्रतीत होता है। शब्दों के अर्थ बदल जाते है। दृश्यों का रूप बदल जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है इन दो मार्गों के अन्तर में।

शरीर सत्य नहीं, इसका मूल्य भी कुछ नहीं, यह तो जलेगा, हम प्रतिदिन देखते हैं। फिर भी नहीं देखते। एक पल भी तो नहीं लगता, मैं चला जाता हूं तो सभी कुछ समाप्त हो जाता है और मेरे प्यारे-प्यारे शरीर को सभी जलाने हेतु उत्सुक हो उठते हैं। क्यों······कभी सोचा है आपने ? क्या कारण है, इसका······शरीर को जीवन भर सजाया, आत्मा को भुलाया, पर आत्मा गया तो शरीर भी जलाया। सत्य तब प्रगट होता है जब "सत्य" समाप्त हो जाता है।

आज मनुष्य अंधा हो चुका है। प्रकृति विज्ञान की सीमा लांघ उसने अपने को प्रभु से भी महान् समझ लिया है। किन्तु पशुता के उभार के अतिरिक्त इस विज्ञान की देन और क्या है ?

आत्म-विज्ञान देवता उत्पन्न करता है और प्रकृति विज्ञान राक्षस। परिणाम सामने है। आज की दुनियां राक्षसों की नगरी बनती जा रही है हमने गहरायी में बैठ कर सोचा है। जीवन के सत्य को समझने का यत्न किया हैं, और अनुभवों के आधार पर हमारा यह सुदृढ़ मत है कि अध्यात्म-विज्ञान का पंडित हुए बिना कोई भी व्यक्ति मनुष्य की संज्ञा से दीक्षित नहीं किया जा सकता।

योग क्या है, आत्मा-परमात्मा का संयोग और भोग क्या है देह-प्रकृति मिलन। देह-प्रकृति मिलकर जब आत्म तत्व विस्मृत कर देती है तब महानाश नृत्य करता है किन्तु देह-प्रकृति मिलन में जब देह की ज्ञानेन्द्रियां "आत्म-तत्व" जान, देह द्वारा प्रकृति से लाभ उठा कर भी कभी 'मैं' को विस्मृत नहीं करतीं, तब प्रकृति साधन बन जाती है, साध्य नहीं रहती। आत्म तत्व अपने उत्कर्ष के लिए प्रकृति का लाभ प्राप्त करता है, प्रकृति में लीन नहीं होता।

आत्म तत्व को जान मैं देह का, प्रयोग आत्म तत्व के उत्कर्ष हेतु कैसे करूं ? प्रकृति के विशाल भंडार से कैसे वह साधन खोजूं जो आत्म-तत्व के उत्कर्ष का कारण बनें ? अपने को जान कर अपने प्रकाश से मैं स्वयं ज्योतित हो प्रकाश पुंज, प्रभु के आनन्द का पान कैसे करूं ? यह सब ज्ञान ही आत्म-विज्ञान है।

आत्म-विज्ञान की शिक्षा का प्रबंध आज कहीं नहीं। जो हैं भी वह भी बहकाने वाले। भूमंडल की सारी शक्ति आज अज्ञान को ज्ञान समझ उसी के प्रसार में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगी है। आर्य समाज का कार्य अज्ञान को ज्ञान में बदलना या यं कहिए अध्यात्म विज्ञान की शिक्षा देना है। दुर्भाग्य यह हुआ कि इस पवित्र आन्दोलन के संचालक स्वयं अध्यात्म—शून्य हो गए। और अध्यात्म विहीन वैदिक धर्म के यह ठेकेदार पशुओं की तरह आपस में संघर्षरत हैं। संस्थापक का महान् लक्ष्य भुला दिया। प्रभु का दिव्य संदेश ज्ञान भूल गए। ऋचाओं के गीत गाने याद नहीं रहे, रह गयी स्मरण गद्दियां, पद और स्वार्थ।

'आत्मा' को मारकर, अंधकार में डालकर कौन आगे बढ़ा है, और आत्मा को जानकर कौन पीछे रहा, या हारा है।

हम अपने को मिटा रहे हैं तो कभी जीत नहीं सकते। हे आर्य पुत्र ! अपने को जान ! अपने को समझ। देख तो सही तू कौन है ? आंखें खोल, अंधा मत बन। हे ईश्वर पुत्र ! प्रभु की शरण में आ, और उस मार्ग को जान, जो मार्ग देवताओं का है।

जिसे हम अपना-अपना कहकर जीवन की अनमोल घड़ियां नष्ट कर रहे हैं, वह सब हमारा नहीं है। जो हमारा है उसे जान ! जो साथ जाएगा वह एकत्र कर। अपने को सजा, उठ ! अपना शृंगार कर ! मत बहक, मत भटक, देख तो सही, तेरे गुरु ने अपने जीवन में कुछ भी करने से पहले कितनी साधना की थी।

आत्म-तत्व के ज्ञान के लिए बालक पढ़ता था। पढ़ कर अपने को जान जब वह कर्म क्षेत्र में आता था तो उस ज्ञानी बालक की पवित्रता से सर्वत्र महक उठती थी। जीवन में स्वर्ग साकार थिरकता था। और आज मन करता है कह दूं मैं इस दुनियां से यह कि—

लौटो जीवन की ओर,
और अध्यात्म-विज्ञान की उपासना करो।
अपने को जानो।
विद्या वह पढ़ो जो तुम्हें आनन्द दे सके।
जो तुम्हें मनुष्य बना सके।
जो तुम्हें ज्योति दे।
जो तुम्हें बताए यह
कि तुम कौन हो ?
यहां, धरती पर क्यों आए हो ?

कार्तिक संवत् २०२७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और तुम्हें, यहां से।
क्या लेकर जाना है ?

सर्वोच्च न्यायालय पर सत्याग्रह

१२ अक्तूबर को दिल्ली में सर्वोच्च न्यायालय पर हिन्दी में सुनवायी की व्यवस्था के लिए सत्याग्रह हुआ। आर्य नेता श्री रामगोपाल जी संसद् सदस्य, श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा, और श्री भगवान देव आर्य सहित ३६ व्यक्ति गिरफ्तार भी हुए और शाम को रिहा भी।

यह कितना विचित्र प्रतीत होता है कि अपने २३ वर्षों से स्वतंत्र देश में, अपनी राष्ट्र भाषा का तिरस्कार हो और इसके लिए सत्याग्रह करना पड़े। वस्तुत: राजनैतिक स्वतंत्रता मिलने के बाद भी मानसिक परतंत्रता हम पर अधिकार किए हुए है।

भारत की सोई आत्मा यदि न जागी तो यह मानसिक परतंत्रता राजनैतिक परतंत्रता भी न बन जाएगी यह कौन कह सकता है। आज जितनी विभिन्न समस्याएं हैं उन्हें पृथक्-पृथक् सुलझाना तो पत्तों को पानी देने के समान ही प्रतीत हो रहा है।

हमारी दृष्टि में आज संपूर्ण समस्याओं का हल देश में वैचारिक क्रांति का आवाहन करने से ही संभव है, और इस क्रांति का नेतृत्व यदि कोई कर सकता है तो केवल आर्य समाज।

हम आर्य समाज के सर्वोच्च संघटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से साग्रह निवेदन करना चाहते हैं कि वह इस संक्रांति काल में राष्ट्र का नेतृत्व करे और उस महान क्रांति यज्ञ को आरंभ करे जिस का आरंभ स्वयं गुरुदेव दयानन्द ने किया था। **"एकै साधे सब सधै, सब साधै सब जाय"** की लोकोक्ति स्मरण रखते हुए हम आर्यजन राष्ट्र को सबल सफल विचारधारा दें, राम-कृष्ण की, ऋषि मुनियों की पवित्र वैदिक-विचारधारा।

हम जब भी किसी आन्दोलन का चिन्तन करें तो वह होना चाहिए, विचारधारा की क्रांति का आन्दोलन ! क्या सभा के कर्णधार हमारी पुकार पर ध्यान देंगे ?

वाममार्ग : वाम पंथी : कम्यूनिस्ट

धीरे-धीरे सदियों के पश्चात् भारत पर वाममार्ग की छाया का आवरण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर छाता जा रहा है। विचार हों या आचार, व्यवहार हो या नैतिकता सभी की प्रेरणा का स्रोत वाममार्ग ही बन रहा है। ऐसा अनुभव हो रहा है कि क्रांति का झुकाव वामपक्ष की ओर हो गया है। समाजवाद का नारा इसका प्रबल सहायक है।

भारत में वामपंथी का अर्थ स्वयं उन्हीं के द्वारा प्रगतिवादी बताया जा रहा है और प्रगतिवाद से तात्पर्य है सभी नैतिक-सामाजिक परंपराओं का उन्मूलन। द्रमुक हो या लीग, अकाली हों या नक्सली, उपद्रवी हों या राजनीतिज्ञ, वे सब जो भारत की गरिमा पर प्रहार करने के इच्छुक और उत्सुक हैं वे सभी वामपक्ष के झंडे के नीचे एकत्र होकर **"वाम-घूम"** का आदेश प्रसारित कर रहे हैं।

चीन, रूस और संसार के कम्यूनिस्ट देश वाममार्ग की प्रत्येक क्रिया के संवाहक हैं। विचार-क्रांति हो या नक्सली अग्निदाह, सर्वत्र ये सब विराजमान हैं। नेता से जनता तक, प्रधान मन्त्री से पटवारी तक, इनका राज्य है।

और लाली की ललायी से सारा देश लाल-लाल करने की योजनाएं लेकर वाम पक्ष बढ़ रहा है। शासक दल गद्दियों के लिए अपना ईमान ही नहीं भारत का संविधान भी दांव पर लगा रहा है। शब्द जाल और नारे, विघटन और असंतोष इनके अस्त्र हैं। आग लगाने में दक्ष यह सब हमारे पवित्र देश की आहुति देने का पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं—

किन्तु.........

क्या वाम—दक्षिण के संघर्ष में, राष्ट्र भक्त और देशद्रोही के युद्ध में, सत्य हार जाएगा ? नीति छल की चलेगी या सत्य की, इसका निर्णय १९७२ का निर्वाचन करेगा या राष्ट्र भक्तों का बुद्धिबल ! किन्तु एक बार तो वाम-दक्षिण की राजनीति ने राष्ट्र के अस्तित्व पर काल घटाएं ला दी हैं।

निर्णय तो यह करना है कि गांधी रहे या माओ ? राम-कृष्ण की जय ध्वनि गूंजे या रावण की, हमारी महिला प्रधान मंत्री जिस मर्दानगी के साथ वामपक्ष के प्रबल स्वरों में गीत गाती बढ़ रही हैं हम उसमें बहकते हैं या—भारतमां के भविष्य का स्वर्ण भाग्य हमें प्रेरित करता है, इस पर भारत का भविष्य निर्भर होगा।

वाम मार्ग के उत्कर्ष से भीत जन मानस को समझ लेना चाहिए सत्य अजेय है, और भारत भी। भारत को जो मिटाना चाहेगा उसका नामों निशां नहीं रहेगा, इतिहास साक्षी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवाद जिन्दाबाद...

समाजवाद के मोहक नारे ने मोह लिया सभी को और झटका दिया देश को। समाजवाद क्या है इसकी व्याख्या संभवतः बड़े-से-बड़ा समाजवादी भी न कर सके। हम तो आज तक यही समझ सके हैं कि मिनिस्टर नाम के व्यक्तियों की सेना को जनता को लूट, घर भरने का यह ब्रह्मास्त्र है।

गरीब की गरीबी बढ़ रही है। नयी दिल्ली रानी बन रही है और ग्राम भिखारी। पूंजी का केन्द्रीकरण बढ़ता जा रहा है। उद्दाम वासना धर्म विहीन अर्थ-व्यवस्था की गाड़ी पर सवार होकर जनता का चीर हरण कर हर्षोन्मत्त हो रही है।

समाजवाद कहां है, केवल शब्दों में या मंत्रियों की कोठियों में। भूखी जनता की कठिनाई का रोना एयरकंडीशंड कमरों में बैठकर रोने की कला का नाम है समाजवाद। समाज का गला घोंटने के शास्त्र को कहते हैं भारत में समाजवाद।

समाजवाद ने मेरे भारत की हत्या का षड्यन्त्र किया है। धर्म की लाश पर अधर्म राज्य की स्थापना का स्वप्न देखने वाले मनुष्य रूप धारी राक्षसों की राजनीति ने गांधी के सपनों की, शहीदों के अरमानों की हत्या की है, इसलिए आज हम भी कहते हैं समाजवाद जिन्दाबाद...

मैं अभी जीवित हूं . . .

कुछ लिखने की सोच रहा था, सूझता नहीं था कि कानों में आवाज आयी छम-छम नृत्य की...कोई उच्च स्वरों में कह रही थी मैं अभी जिन्दा हूं...मैं अभी जिन्दा हूं। जिधर से आवाज आयी मैं उधर चला तो दिखायी पड़ी एक भयानक राक्षसी आकृति......मैंने पूछा कौन है तू...उत्तर मिला—मैं अभी जिन्दा हूं सारा घरबार जलाने को......मेरा नाम है साम्प्रदायिकता। फिर उसने एक तीव्र अट्टहास किया, जिसे सुन मैं बेहोश हो गया। नींद खुल गयी और अनुभव किया यह सब एक सपना था।

किन्तु नींद फिर नहीं आयी सोचने लगा तो स्वप्न सत्यप्रतीत होने लगा। देश पर दृष्टि दौड़ायी तो स्तब्ध रहा गया कि वह राक्षसी साम्प्रदायिकता जिसने राष्ट्र का अंग-भंग किया, फिर पनप रही है। शासन की दुर्नीति ने उस विषधर को जन्म दिया जो आज फिर सर्वत्र फुंकार रहा है।

केरल में मुस्लिम लीग से गठजोड़ किसने किया? अहमदाबाद और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिहार, महाराष्ट्र में खून किसने बहाया ? कौन है वह जो आज भी शत्रु देश पाकिस्तान की हर विजय पर हंसता है और भारत की विजय पर रोता है ?

प्रयाग नगर पालिका के चुनाव देश का मापदंड बन हमारे सम्मुख हैं। वहां नई कांग्रेस को ६, हिन्दू सभा को ६, जनसंघ को ५, मुस्लिम मजलिस को ११, संसोपा को १३, भारतीय क्रान्तिदल को केवल १ सीट मिली। परिणाम किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं करते।

शासन को साम्प्रदायिक केवल हिन्दू नज़र आते हैं और मुसलमान दूध के धोए। सत्ता की राजनीति ने शासक दल को अन्धा बना दिया है। स्वार्थ के अतिरिक्त और उसे कुछ भी तो नहीं दीखता।

"हर-हर महादेव" और "नारये तकबीर" के नारों ने वंदे मातरम् का, भारत माता की जय का स्वर भुला दिया है। देशभक्ति की हत्या सांप्रदायिक विषधर ने कर दी है। धर्म का सच्चा स्वरूप भुलाकर शासन ने मज़हब के जिस घिनौने मुखड़े को उजागर करने का पाप किया है उसका दंड समूचे देश को पता नहीं क्या भोगना पड़ेगा।

अभी तो हमारी नींद इस राक्षसी ने खराब कर दी है—

English सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में

इंगलिश सत्यार्थ प्रकाश अब तैयार है और हम २० नवम्बर से उसका भेजना आरम्भ करेंगे। जिन्होंने १—२ या ३ प्रतियों का आदेश दिया हुआ है उन्हें डाक से भेजा जाएगा। और डाक व्यय जो भी लगेगा उतने की वी० पी० पी० भेजी जाएगी। कृपया सभी अंकित करलें।

क्योंकि कार्य बहुत है इसलिए भेजने में समय लगेगा, फिर भी हम यत्न करेंगे कि ३० नवम्बर तक सभी को भेज दिया जाए। कृपया इस सम्बन्ध में कोई पत्र व्यवहार न करें।

अंग्रेजी में ऋषि जीवन

प्रैस में दे दिया। बोझ भी उठा लिया। धन का प्रबंध प्रभु करेंगे या ऋषि भक्त। मेरे पास तो पैसा है नहीं, मैं तो निमित्तमात्र हूं, जितना सहयोग देंगे उतना कार्य करता जाऊंगा।

स्वामी जी का बड़ा जीवन चरित्र २०-२५) में बिक रहा है। मैं ४) में देना चाहता हूं। अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश ५) में दिया। अब और बड़ा बोझ लिया और ४) में जीवन चरित्र देना ही है। इच्छा है इसमें बहुत से चित्र हों, बहुत अच्छा छपे। मेरी इच्छा पूरी प्रभु करेंगे इसी विश्वास पर कार्यारंभ कर दिया है।···देरी का समय नहीं—सहयोग तुरन्त चाहिए।

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नियंत्रित ऋतपथ

ओ३म् । अर्दर्शि गातुरुरवे वरीयसी पन्था ऋतस्य
समयंस्त रश्मिभिश्चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः ।
द्युक्षं मित्रस्य सादनमर्यम्णो वरुणस्य च ।
अथा दधाते बृहदुक्थ्यं वय उपस्तुत्यं बृहद्वयः ।।

ऋ० १। १३६ : २

(वरीयसी) अतीव श्रेष्ठ (गातुः) गति (उरवे) विशाल चित्त के लिए (अर्दर्शि) दिखाई जाती है (ऋतस्य) ऋत का (पन्थाः) पथ, मार्ग (रश्मिभिः) ज्ञान किरणों से ऐसे (सम्-अयंस्त) नियन्त्रित होता है जैसे (चक्षुः) नेत्र (भगस्य) सूर्य्य की (रश्मिभिः) रश्मियों से नियन्त्रित होता है (च) और उसी भांति (मित्रस्य) सर्वस्नेही (अर्यम्णः) श्रेष्ठों के मान्यकर्त्ता (वरुणस्य) वरणीय अन्तर्य्यामी भगवान् का (द्युक्षम्) द्युस्थिय==मस्तिकस्थ ब्रह्मरन्ध्रस्थानीय (सादनम्) ठिकाना नियन्त्रित होता है। (अथ) और तब (बृहद्) बहुत बड़ा (उक्थ्यम्) प्रशंसनीय (वयः) भोग को तथा (उपस्तुत्यं) स्तुतियोग्य (बृहत्) महान् (वयः) कान्ति को धारण करते हैं।

इस मन्त्र में कई तत्व एक साथ एकस्थ उपदिष्ट हुए हैं—

(१) **अर्दर्शि गातुरुरवे वरीयसी**=अतीव श्रेष्ठ गति विशाल चित्त को दिखाई देती है।

सभी श्रेष्ठ गति पाना चाहते हैं। निकृष्ट गति किसी को भी पसन्द नहीं है। परन्तु श्रेष्ठ गति का साधन प्रायः कोई नहीं करना चाहता। इस मन्त्र में एक अत्यन्त छोटा सा उपाय बतलाया है वह है उरु=विशालचित्त होना। श्रेष्ठ गति विशाल होती है, उसे संकीर्ण हृदय, थुड़दिला, तुच्छ चित्त कैसे पा सकता है? संकीर्णता तो पाप है। पाप वाला श्रेष्ठ गति का अधिकारी कैसे?

(२) **पन्था ऋतस्य सयंमस्त रश्मिभिः**=ऋत का मार्ग रश्मियों से नियन्त्रित है। बहुत महत्व का तत्त्व यहाँ प्रातपादित हुआ। ऋत का अर्थ है भगवान् के अबाध्य नियम। वेद में दूसरे स्थान में इस तत्त्व को इन शब्दों में व्यक्त किया गया है—वरुणस्य अदाभ्यानि व्रतानि=वरुण के अटूट व्रत हैं अर्थात् भगवान् की व्यवस्था का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। भगवान् का आदेश तो उल्लंघन किया जा सकता है किन्तु उसकी व्यवस्था को कोई भी तोड़ नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता। यथा भगवान् का आदेश है—सत्य बोलो। कोई इसका उल्लंघन करना चाहे तो अनायास कर सकता है। भगवान् की व्यवस्था है कि मनुष्य आंख से देखें, कान से सुने। शक्तिशाली से शक्तिशाली भी मनुष्य इसका उल्लंघन नहीं कर सकता। इसी लिए वेद कहता है—**पन्था ऋतस्य समयंस्त रश्मिभिः।**

(३) **चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः (समयंस्त)**=नेत्र सूर्य्य की रश्मियों से नियन्त्रित है।

अर्थात् नेत्र बाह्यलोक के बिना अपना कार्य्य नहीं कर सकती। सूर्य्य, चन्द्र, अग्नि आदि कोई प्रकाशक पदार्थ जब तक न हो, आंख देख नहीं सकती। घटाटोप अन्धकार में चक्षु बेकार हो जाता है। विशाल ऋत का एक बहुत छोटा सा निदर्शन यहाँ दिखलाया गया है जो हमारा सब से बड़ा सहायक है। संकेत है कि इसी प्रकार भीतर के बुद्धिनेत्र को भी वेद सूर्य्य की रश्मियों से संयत करे केवल नैसर्गिक बुद्धि से कार्य्य नहीं चल सकता। बुद्धि के विकास के लिए नैमित्तिक ज्ञान अनिवार्य्य है। नैमित्तक ज्ञान का प्रथमोत्पादक **'ऋतस्य प्रथमजा'** स्वयं भगवान् है। ऋत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेद का ज्ञान अनिवार्य्य है।

द्यु क्षं मित्रस्यार्यम्णो वरुणस्य च=स्नेहमय, न्यायनिष्ठ, सर्वोत्कृष्ट भगवान् का तेजोयुक्त स्थान में सादन=स्थापन भी सुनियन्त्रित है।

इसमें बताया है भगवान् का प्राप्तिस्थान ब्रह्मरन्ध्र है जिसे योग में मूर्धज्योति कहा जाता है। तेजोमय प्रभु की प्राप्ति तेजोमय स्थान में होनी चाहिए। अर्थात् भगवान् को पाने के लिए बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है। ध्यान के लिए सर्वोत्कृष्ट स्थान मूर्धज्योति=द्युक्ष है।

भगवान् तुम्हारा ही मित्र है। अहेतुक प्रेमी है साथ न्यायनिष्ठ भी है, यह न समझ लेना कि वह मित्र होने के नाते कोई पक्षपात या अन्याय तुम्हारे लिए कर देगा, वह अर्यमा है, इसी कारण वह वरुण है, स्वीकरणीय है। मनुष्य को वरणीय वर बनने के लिए निस्स्वार्थ प्रेम तथा न्यायनिष्ठा अपने जीवन में लानी चाहिए।

(५) जब इस प्रकार मनुष्य विशाल हृदय, ऋताभ्यासी, ऋतानुगामी, संयतेन्द्रिय=जितेन्द्रिय तथा मूर्धज्योति में धारण ध्यान का निरन्तर अभ्यासी बन जाएगा, तब **अवाधाते बृहदुक्थ्यं वय उपस्तुत्यं बृहद्वयः**=तब वह महान् प्रशंसनीय भोग तथा स्तोतव्य महान् मोक्ष तेज कान्ति को प्राप्त करता है।

अर्थात् संयत जीवन में जो भोगसामग्री मिलती है वह महत्त्वयुक्त एवं प्रशंसनीय होती है। साथ ही संयम का फल महान् मोक्ष मिलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिच्छू की तरह जहर या मधु मक्खी की तरह शहद क्या इकट्ठा करेंगे आप ?

आओ !

धरती स्वर्ग बनाएँ !

—प्रो० रामचरण महेन्द्र, एम० ए०

पृथ्वी में जल, आकाश, प्रकाश, वायु, मिट्टी, सामर्थ्य सब के लिए समान है, किन्तु इसी पृथ्वी से जीव तत्त्व लेकर गन्ना मीठे गुण एकत्रित कर हमें शक्कर, गुड़, रस, मिठाई देता है; नीबू, नारंगी, टमाटर, इमली खटाई एकत्रित करती हैं; करेला कडुवे तत्त्व इकट्ठे करता है; मिर्च तीता, अदरख तीखा बन जाता है। कडुवा, मीठा, खट्टा, तीता, ये नाना प्रकार के गुण एक ही पृथ्वी से बीजों के अनुसार उत्पन्न होते हैं। प्रत्येक बीज अपनी-अपनी प्रकृति और गुण कर्म के अनुसार पृथ्वी से जीव तत्त्व खींचा करते हैं। इनमें पृथ्वी, वायु, जल, आकाश समान होने पर भी नवीन वस्तु की पृथक्ता रहती है। यही हाल मानव जगत् में बसने वाले मनुष्यों का भी है।

सब मनुष्यों के लिए संसार एकसा है। इसमें सब के लिए कर्म, प्रतिष्ठा, सुख, स्वास्थ्य, जीवन तत्व, समृद्धि बिखरे पड़े हैं, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव तथा मानसिक सम्मान के अनुसार सुख-दुःख एकत्रित कर रहे हैं। कितने ही जीवन का आनन्द लूट रहे हैं, तो कितने ही नरक की कुत्सित यातनाएँ भोग रहे हैं। हम स्वयं अपने मनोभावों, रुचि, स्वभाव, गुण कर्म, जीवन-विषयक दृष्टिकोणों से अपना-अपना पृथक् संसार बनाया करते हैं।

स्वर्ग-नरक की जो कल्पनाएँ मानव के मन में चक्कर लगाया करती हैं, वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसी बाह्य जगत् में पूर्ण होने वाली नहीं हैं; वे हम में से प्रत्येक व्यक्ति के विचारों तथा कर्म के अनुसार इसी दुनिया में निर्मित होते हैं। हम नरक की यातनाएँ, अथवा स्वर्ग के आनन्दों के स्रष्टा स्वयं ही हैं।

आप आश्चर्य करेंगे कि मनुष्य कैसे स्वर्ग बना सकता है? स्वर्ग तो परमेश्वर की अमूल्य सृष्टि है। मानव का उसमें कैसे हाथ लग सकता है? मनुष्य तो निर्बल हाड़-माँस का पुतला है; इसके किये क्या हो सकता है!

लेकिन ये शंकाएँ व्यर्थ हैं। अपने जगत् को बनाने में प्रधान हाथ हमारा ही है। हमारा मन स्वर्ग-नरक के ताने-बाने बुना करता है। आनन्द, हम मरने के पश्चात् नहीं, किन्तु इसी सांसारिक जीवन में जीते-जी, इसी मानव शरीर द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। मन स्वयं स्वर्ग को नरक बनाता है; तथा दृष्टिकोण में अन्तर आते ही नरक को दिव्य प्रकाश से आलोकित स्वर्ग में परिवर्तित कर देता है।

आप पूछेंगे, "पृथ्वी पर स्वर्ग कैसे बने? हमारे किये क्या हो सकता है। भाग्य चक्र स्वयं सब कुछ किया करता है। नियति क्रम को कौन संचालित कर सकता है?"

पृथ्वी पर स्वर्ग निर्माण करने का प्रथम उपाय है—स्वस्थ शरीर। शरीर वह यन्त्र है, जिससे आप पृथ्वी से स्वर्ग-नरक के जीवाणु तत्त्व खींचते हैं। रोगी, दुर्बल, कृशकाय, ढीला-ढाला, पौरुषहीन शरीर ऐसा बिगड़ा हुआ यंत्र है, जो पृथ्वी से निराशा, ईर्ष्या, क्रोध, द्रोह, असूया, वासना की कड़ुवाहट ही खींच सकता है। उसमें गन्दगी खींचने और तदनुकूल कुत्सित वातावरण उत्पन्न करने के ही तत्त्व हैं। रोगी शरीर का मन रोगी है। रोगी मन नरक के अतिरिक्त और किस अच्छी चीज़ की सृष्टि करेगा? वासनाप्रिय शरीर व्यभिचार को ही सोचेगा; लोभी मन रुपया पैसा ही देखेगा; क्रोधी अपनी उत्तेजना का सामान जलने-कुढ़ने दुःखी रहने के लिए स्वयं एकत्रित कर लेगा। रोगी शरीर को संसार बन्धन रूप, दुःख कठिनाई, आन्तरिक क्लेश से परिपूर्ण प्रतीत होगा। इसके विपरीत जिसका शरीर पूर्ण स्वस्थ है, उसे यही संसार स्वर्ग जैसा सुन्दर प्रतीत होगा?

दूसरा तत्त्व है, मनुष्य का जीवन के प्रति दृष्टिकोण। निराशावादी दृष्टिकोण लेकर जीवन में प्रविष्ट होने वाले व्यक्तियों को निराशा, कठिनाई, असफलता के अतिरिक्त क्या मिलेगा? उन्हें रोने-पीटने के लिए कहीं भी मसाला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिल ही जायगा। वे दुःखी रहने के आदी हैं। यही मानसिक नरक की सृष्टि करेगा। इसके विपरीत आशावादी व्यक्ति प्रसन्न रहने, उत्साहित हो जीवन कार्य में प्रविष्ट होने का सहारा ढूंढ़ लेगा। मानसिक दृष्टि से दोनों की आशा-निराशा का दृष्टिकोण स्वर्ग-नरक का स्रष्टा है। जैसा हमारे मन के भीतर है, वैसा ही हमें आसपास, इधर-उधर सर्वत्र प्रतीत होता है। अपने अन्तर की प्रतिच्छाया ही हमें संसार में सुखी-दुःखी बनाया करती है।

हम चाहें तो उत्तम मन्त्रणाओं द्वारा अपने अन्दर बाहर सर्वत्र प्रेम का, आनन्द और उत्साह का स्वर्ग निर्मित कर सकते हैं, आस-पास के वातावरण को अपनी पवित्र भावनाओं से स्वर्ग के सौरभ से युक्त कर सकते हैं। इसके विपरीत कुत्सित इच्छाओं से हम अन्दर-बाहर नरक ही नरक बना सकते हैं।

विच्छू की तरह आप विष एकत्रित करेंगे, या मधुमक्खी की तरह मीठा शहद ?

हमारा संकल्प

वेद-धर्म की अमर पताका, धरती पर लहरायेंगे।
मानवता की अमृतवाणी, सब तक हम पहुँचायेंगे।।
दयानन्द के सैनिक हैं हम, आगे बढ़ते जायेंगे।
पाखंडों के गढ़ दुर्गम सब, चूर-चूर कर आयेंगे।।

युग बदला है, बदल रही है, आज मनुज की तरुणाई।
सत्य कांपता खड़ा द्वार पर, पशुता की है बन आई।।
वीरों ने अंगड़ाई ली है, ध्वजा न झुकने पायेगी।
धर्म-न्याय की विजय पताका, लहर-लहर लहरायेगी।।

यह दयानन्द के दिव्यस्वप्न, साकार बनाने की वेला।
अमर शहीदों की बलि का है, मोल चुकाने की वेला।।
एक ओर है पाप, एक ओर है पुण्य, पुण्य की लाज बचाओ।
बलि जाकर भी "वेद ध्वजा" का गौरव, उठो! गुंजाओ।।

—राकेश रानी—

मुद्रक-प्रकाशक-संपादक श्रीमती राकेशरानी द्वारा रायसीना प्रिंटरी, दिल्ली व कुंसलन प्रेस, दिल्ली में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१

विषय-प्रवेश

स्वर्गीय प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपने निबन्ध 'What is Culture'? (संस्कृति क्या है ?) में विभिन्न संस्कृतियों के तुलनात्मक और वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता बताते हुए लिखा है—"A person who cannot understand another's view-point is, to that extent, limited in mind and culture, because no body, perhaps, barring some very extra-ordinary human beings, can presume to have the fullest knowledge & wisdom. The other party or other group may also have some inkling of knowledge or wisdom or truth and if we shut our minds to that then we may not only deprive ourselves of it but we cultivate an attitude of mind which, I would say, is opposed to that of a cultured man. The cultured mind, rooted in itself, should have its doors and windows open. It should have the capacity to understand the other's view-point fully even though it cannot always agree with it. The question of agreement or disagreement only arises when you understand a thing. Otherwise, it is blind negation which is not cultured approach to any question." अर्थात् जो व्यक्ति दूसरे के दृष्टिकोण को नहीं समझ सकता वह उस सम्बन्ध में अपने मन और संस्कृति में सीमित होता है, क्योंकि कुछ असाधारण व्यक्तियों को छोड़कर सम्भवत: कोई भी व्यक्ति पूर्ण ज्ञान और बुद्धि से युक्त होने की कल्पना नहीं कर सकता। दूसरा व्यक्ति अथवा वर्ग भी कुछ ज्ञान अथवा बुद्धि अथवा सत्य का संकेत रख सकता है और यदि हम उसके प्रति अपने मन के द्वार बन्द रखते हैं तो हम न केवल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने आपको ही उससे वञ्चित रखते हैं वरन् हम अपने मन की एक ऐसी स्थिति बना लेते हैं जो मेरे विचार से एक सुसंस्कृत व्यक्ति के विपरीत है। एक सुसंस्कृत मन के, जो अपने आप में बद्धमूल होता है, द्वार और खिड़कियाँ खुली होनी चाहियें। उसमें यह क्षमता रहनी चाहिये कि वह दूसरों के दृष्टि-कोण को समझे, चाहे वह उससे सहमत न हो। किसी बात से सहमत होने या न होने का प्रश्न तब उत्पन्न होता है जब हम उस बात को समझें, अन्यथा यह बिना सोचे-समझे इनकार करना है जिसे किसी भी प्रश्न के विषय में सांस्कृतिक दृष्टिकोण नहीं कहा जा सकता।"

संस्कृति के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये पं० जवाहर लाल नेहरू के ये वचन विभिन्न धर्मों और मतों के तुलनात्मक और वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता पर भी लागू होते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि विभिन्न धर्मों, मतों और सम्प्रदायों के अनुयायी केवल अपने ही धर्मग्रन्थ पढ़ते और सुनते हैं; अन्य धर्मों और मतों के धर्मग्रन्थों के पढ़ने और सुनने को वर्जित समझते हैं जैसे उनके पढ़ने अथवा सुनने से उनके अपने धर्म अथवा मत में बाधा उपस्थित होती हो अथवा धर्महानि होती हो। उनकी ऐसी धारणा उनके दृष्टिकोण को संकुचित तथा अनुदार बना देती है। और कभी-कभी उनकी संकुचित दृष्टि और अनुदारता यहाँ तक बढ़ जाती है कि वे अपने धर्मग्रन्थों में से भी किन्हीं विशेष एक-दो ग्रन्थों को ही अच्छा समझने लगते हैं, उन्हीं को पढ़ते अथवा सुनते हैं तथा दूसरे ग्रन्थों की अवज्ञा करते हैं। उनकी ऐसी प्रवृत्ति उनके लिए कितनी घातक हो सकती है, इसका वे अनुमान भी नहीं लगा सकते। वे कूप-मण्डूक बन जाते हैं और अपने ही धर्म अथवा मत को भी ठीक और पूरी तरह से नहीं समझ सकते, दूसरे धर्मों एवं मतों के विचारों का समझना तो बहुत दूर की बात है। यदि अपने और दूसरों के धर्मग्रन्थों को पढ़ा अथवा सुना ही नहीं जायेगा, यदि उन्हें समझने तथा मनन करने का यत्न ही नहीं किया जायेगा और यदि उनके सिद्धान्तों एवं मान्यताओं की जानकारी ही प्राप्त नहीं की जायेगी तो उनका वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक अध्ययन तथा विश्लेषण कैसे किया जा सकेगा? उनके गुणों और दोषों को कैसे आँका जा सकेगा? उनके साथ सहमत होना या न होना अपनी इच्छा पर निर्भर है। परन्तु सहमत होने या न होने का प्रश्न तो तभी उत्पन्न होगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब हम उन्हें पढ़ेंगे, उन्हें समझने का यत्न करेंगे और उनका तुलनात्मक विश्लेषण करेंगे।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि विभिन्न धर्मों, मतों एवं सम्प्रदायों के प्रवर्तकों ने अपने-अपने देश और समय की परिस्थितियों से प्रभावित होकर तथा अपने-अपने देश के और अपने समकालीन समाज के सुधार के लिए अपने नये मत, सम्प्रदाय और विचारधारा को प्रवर्तित किया। प्रत्येक देश और प्रत्येक समाज में ऐसे अनेकों महापुरुष हो चुके हैं और आगे भविष्य में न जाने कितने और उत्पन्न होंगे। किसी भी देश और समाज की तत्कालीन परिस्थितियाँ ऐसे महापुरुषों को जन्म देती हैं। वे उनका सुधार करते हैं, नई विचारधारा देते हैं और कभी-कभी नये मत अथवा सम्प्रदाय का भी प्रवर्तन करते हैं। उनके अनुयायी उन्हें ऋषि, मुनि, अवतार, गुरु, पीर, पैगम्बर आदि नामों से अभिहित करते हुए उनकी पूजा-अर्चना, स्तुति-वन्दना आदि आरम्भ कर देते हैं। उन महापुरुषों का उद्देश्य अपने समकालीन समाज का सुधार करना होता है, अपने पूर्वजों अथवा पूर्व मनीषियों और सिद्धान्तकारों का खण्डन करना नहीं होता। इसके विपरीत वे बहुधा पूर्व मनीषियों के सिद्धान्तों का न केवल अनुकरण ही करते हैं, बल्कि उनके वचनों और सिद्धान्तों को अपने सिद्धान्तों का आधार बनाते हैं। उनके उपदेशों और प्रवचनों में भाव बहुत हद तक पूर्व मनीषियों और आचार्यों का ही रहता है, केवल शब्दों में और भाषा में अन्तर होता है, क्योंकि वे अपने समकालीन समाज के हित और बोध के लिए समकालीन भाषा का प्रयोग करते हैं। दूसरों शब्दों में कहा जा सकता है कि वे पूर्वाचार्यों और मनीषी गुरुओं के वचनों और सिद्धान्तों को ही नये ढंग से और नई भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं एवं परिस्थितियों के अनुसार उनमें यथावश्यक परिवर्तन भी करते हैं तथा उनकी व्याख्याएँ भी करते हैं।

इसी तथ्य का समर्थन करते हुए स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि "Every prophet is the creation of his times ; created by the past of his race; he himself is the creator of the future" अर्थात् प्रत्येक पैग़म्बर अपने समय की रचना होता है। वह अपनी जाति के भूतकाल द्वारा उत्पन्न होता है और स्वयं भविष्य को उत्पन्न करता है।" कई बार कुछ मत-प्रवर्तक समकालीन परिस्थितियों और रीति-रिवाजों को ही प्रमुखता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देते हुए पूर्वाचार्यों द्वारा मान्य आध्यात्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों की अवहेलना भी कर देते हैं। ऐसे महापुरुषों द्वारा प्रवर्तित मत अथवा सम्प्रदाय के पुनरुद्धार की आवश्यकता पड़ जाती है और कोई दूसरा महापुरुष उसका पुनरुद्धार करता है अथवा यदि परिस्थिति उसके अनुकूल हो तो वह अपना नया सम्प्रदाय खड़ा कर देता है। उनके वचनों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह बात सर्वथा स्पष्ट हो जाती है और साम्प्रदायिक संकुचित दृष्टिकोण असंगत-सा प्रतीत होने लगता है। अवेस्ता की सूक्तियों पर ऋग्वेद के मन्त्रों का; जैन सूत्रागमों (सूत्तागमे) तथा बौद्ध त्रिपिटकों (तिपिटकों) पर वैदिक सूक्तियों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों और महाभारत आदि की उक्तियों का; ईसा (क्राईस्ट) के प्रवचनों और उपदेशों पर बौद्ध सिद्धान्तों का; हज़रत ईसा, मूसा और मुहम्मद पर हज़रत ज़ारथुस्त के सिद्धान्तों का; हज़रत मुहम्मद के सिद्धान्तों पर हज़रत ईसा और मूसा के वचनों का; शिन्तो मत पर महात्मा बुद्ध और कन्फ़्यूशियस के सिद्धान्तों का; लाओ-त्से के सिद्धान्तों पर भारतीय निवृत्तिवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। वैज्ञानिक ढंग पर किये गये तुलनात्मक अध्ययन से इसे समझा जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन जहाँ अपने धर्मग्रन्थ में आस्था को दृढ़ करेगा वहाँ दूसरों के धर्मग्रन्थों के प्रति सम्मान की भावना को जागृत करेगा।

यह भी एक सर्वमान्य तथ्य है कि सभी प्रमुख धर्मों, मतों एवं सम्प्रदायों का मूल उद्देश्य अथवा जीवन-लक्ष्य एक ही है और वह है 'ईश्वर को पाना अथवा मुक्ति पाना'। स्वर्गादि की कल्पनाएँ सब इसी के परिणाम अथवा ईश्वर-प्राप्ति के फल हैं। सब धर्म तथा सम्प्रदाय ईश्वर-प्राप्ति अथवा मुक्ति-प्राप्ति के उपायों का विधान करते हैं और उनके लिए मन की पवित्रता, ईश्वर प्रार्थना, आचार संहिता तथा प्रायश्चित्त विधान की व्यवस्था करते हैं। दूसरों शब्दों में कहा जा सकता है कि लक्ष्य सबका एक ही है, मार्ग भिन्न-भिन्न हैं। मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने 'तरजमानुल कुरआन' में हज़रत ईसा और कुरआन की शिक्षाओं की तुलना करते हुए कहा है कि "फ़िलहक़ीक़त हज़रत मसीह की तालीम में और कुरआन की तालीम में असलन कोई फ़र्क नहीं है। दोनों का मेआरे अहकाम एक ही है।" यही बात अनेक अन्य मतों के विषय में भी लागू होती है। सभी का लक्ष्य एक ही है। यदि अन्तर है तो आचार संहिता में है और है उपासना पद्धति में। एक अन्तर यह भी है कि कुछ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मतों के प्रवर्तकों ने किन्हीं विशिष्ट कारणों से ईश्वर के साथ तथा अपने मत अथवा सम्प्रदाय के साथ अपने नाम को अनिवार्य रूप से जोड़ दिया है। पश्चिम के मतों को इस सम्बन्ध में उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। पारसी मत में हज़रत ज़रथुस्त ईश्वर का पैग़म्बर है और अवेस्ता ईश्वरीय पुस्तक है। यहूदी हज़रत मूसा को ईश्वर का पैग़म्बर तथा तौरात (तौरेत) को ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं। ईसाई हज़रत ईसा को ईश्वर का बेटा कहते हैं और बाईबल को ईश्वरीय पुस्तक समझते हैं। इसलाम के अनुसार हज़रत मुहम्मद ईश्वर का पैग़म्बर हैं और कुरआन ईश्वरीय पुस्तक है। हज़रत ईसा ने स्वयं मत नहीं चलाया, परन्तु उनके शिष्यों और अनुयायियों ने उनके नाम पर ईसाई मत चला दिया। पैग़म्बरों और ईश्वरीय पुस्तकों के नाम पर वहाँ अनेक भयानक तथा अत्याचारपूर्ण युद्ध हुए हैं जो उन मतों की संकुचित भावनाओं को तथा धार्मिक असहिष्णुता को व्यक्त करते हैं। भारतीय ऋषियों-मुनियों तथा धर्माचार्यों ने अपने नाम को अमर बनाने का लोभ नहीं दिखाया। गुरु केवल मार्गदर्शक बनकर सहायक बने। वे साधक और साध्य (ईश्वर) के मध्य में खड़े नहीं हुए। इसीलिए भारतीय धर्मों एवं मतों में धार्मिक सहिष्णुता अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। जब लक्ष्य में कोई अन्तर नहीं है तो साम्प्रदायिक मतभेद और लड़ाई-झगड़े अनुचित और असंगत प्रतीत होते हैं। भारतवर्ष में इस्लाम के आगमन के पश्चात् प्रचलित होने वाले छोटे-छोटे और नये-नये सम्प्रदायों के प्रवर्तकों ने अपने अनुयायियों में अवश्य अपने आपको प्रमुख गुरु अथवा ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया। इनमें से भी कुछ सम्प्रदाय उनके प्रवर्तकों से न चलाये जाकर उनके अनुयायियों द्वारा चलाये गये; जैसे कबीर पंथ। इनके धर्मग्रन्थों का अध्ययन पूर्वग्रन्थों का प्रभाव सिद्ध करता है।

मौलाना अबुल कलामआज़ाद का **'तरजमानुल कुरआन'** (पृ० १३०-१३५) में कुरआन के आधार पर कहना है कि मज़हबों (मतों एवं सम्प्रदायों) का पारस्परिक मतभेद वास्तविक नहीं है, कृत्रिम है। वे कहते हैं "कुरआन कहता है, खुदा के जितने पैग़म्बर हुए हैं, ख्वाह वो किसी ज़माने और किसी गोशा में हुए हों, सबकी राह एक ही थी और सब खुदा के एक ही आलमगीर क़ानूने सआदत की तालीम देने वाले थे। यह आलमगीर क़ानूने सआदत क्या है? ईमान और अमल सालेह का क़ानून है, यानी एक परवरदिगारे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आलम की प्रस्तिश करनी और नेक-अमली की जिन्दगी बसर करनी। इसके अलावा और इसके खिलाफ़ जो कुछ भी दीन नाम से कहा जाता है. दीन हक़ीक़ी की तालीम नहीं है।...... ...वह कहता है, दुनिया में कोई बानिये मज़हब भी ऐसा नहीं हुआ है जिसने एक ही दीन पर इकट्ठे रहने और तफ़रक़ाओ इख्तलाफ़ से बचने की तालीम न दी हो। सबकी तालीम यही थी कि खुदा का दीन बिछड़े हुए इन्सानों को जमा कर देने के लिए है, अलग-अलग कर देने के लिए नहीं है.........चुनांचे वह कहता है, खुदा के जितने रसूल पैदा हुए सबकी तालीम यही थी कि अल्लाह दीन पर यानी बनी नोअ इन्सानी के एक ही आलमगीर दीन पर क़ायम रहो, और इस राह में एक-दूसरे से अलग-अलग न हो जाओ। ....इसी बिना पर वो तमाम मज़ाहबे आलम की बाहमदगर तसदीक़ को भी बतौर एक दलील के पेश करता है, यानी वो कहता है, इनमें से हर तालीम दूसरी तालीम की तसदीक़ करती है, झुठलाती नहीं। तो इससे मालूम हुआ, इन तमाम तालीमात के अन्दर कोई एक ही साबित व क़ायम हक़ीक़त ज़रूर काम कर रही है। "कुरआन कहता है, मजहब का इख्तलाफ़ दो तरह का है। एक इख्तलाफ़ तो वह है जो पैरवाने मज़ाहब ने मज़हब की हक़ीक़ी तालीम से मुन्हरफ़ होकर पैदा कर लिया है। यह इख्तलाफ़ मज़ाहब का इख्तलाफ़ नहीं है, बल्कि पैरवाने मज़ाहब की गुमराही का नतीजा है। दूसरा इख्तलाफ़ वह है जो फ़िलहक़ीक़त मज़ाहब के अहकाम व ऐमाल में पाया जाता है। मसलन् एक मज़हब में इबादत की कोई खास शक़ल अख्तियार की गई है और दूसरी में दूसरी शक़ल। तो यह इख्तलाफ़ असल व हक़ीक़त का इख्तलाफ़ नहीं है। महज़ फ़रूअ व ज़वाहर का इख्तलाफ़ है, और ज़रूरी था कि ज़ाहूर में आता। वह कहता है, मज़हब की तालीम दो किस्म की बातों से मुरक्कब है। एक किसम तो वह जो उनकी रूह व हक़ीक़त है। दूसरी वह है जिससे उनकी ज़ाहिरी शक़ल व सूरत आरास्ता की गई है। पहली चीज़ असल है, दूसरी फरअ है। पहली चीज़ को वह 'दीन' से ताबीर करता है, दूसरी को 'शरअ' और 'नसक' से, और इसके लिए 'मिनहाज' का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल किया गया है। 'शरअ' और 'मिनहाज' के मानी राह के हैं और नसक' से मक़सूद इबादत का तौर-तरीक़ा है। वह कहता है, मजाहब में जिस कदर भी इख्तलाफ़, उनका असली इख्तलाफ़ है, वह 'दीन' का इख्तलाफ़ नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महज़ शरश्र व मिनहाज का इख़्तलाफ़ है। यानी असल का नहीं, फरअ का है; हक़ीक़त का नहीं है, ज़वाहिर का है; रूह का नहीं है, सूरत का है। और ज़रूरी था कि यह इख़्तलाफ़ ज़हूर में आता। मज़हब का मक़्सूद इन्सानी ज़मीअत की सआदत व इस्लाह है। लेकिन इन्सानी ज़मीअत के अहवालोज़रूफ़ हर अहद और हर मुल्क में यकसाँ नहीं रहे हैं और न यकसाँ रह सकते हैं। किसी ज़माने की मआश्रती और ज़ेहनी इस्तेअदाद एक खास तरह की नौइअत रखती, किसी ज़माने में एक खास तरह की। किसी मुल्क के हालात एक ख़ास तरह की माशियत चाहते हैं, किसी दूसरे मुल्क के दूसरी तरह। पस जिस मज़हब का ज़हूर जैसे ज़माने में और जैसी इस्तअदाद व तबीयत के लोगों में हुआ, उसी के मुताबिक़ शरअ व मिनहाज की सूरत भी अख़्तियार की गई। जिस अहद और जिस मुल्क़ में जो सूरत अख़्तियार की गई, वही उस अहद और उस मुल्क़ के लिए मौज़ू थी। इसलिए हर सूरत अपनी जगह बेहतर और हक़ है। कुरआन कहता है—**'ऐ पैग़म्बर ! हमने हर गिरोह के लिए इबादत का एक ख़ास तौर-तरीक़ा ठहरा दिया है जिस पर वह अमल करता है। पस लोगों को चाहिये, इस मुआमला में झगड़ा न करें। (कुरआन ६६/२२)''**। इस प्रकार मौलाना आज़ाद के अनुसार धर्मों एवं मतों में परस्पर भेद मुख्यतया उपासना-पद्धति विषयक है जो कि कृत्रिम और इसलिए त्याज्य है। अन्य धर्मों एवं मतों के प्रवर्तकों तथा आचार्यों ने भी दूसरे मतों के प्रति विरोध-भावना का समर्थन नहीं किया। **"अरे इन दोउन राह न पाई"** कहकर महात्मा कबीरदास ने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को ही बाह्याचार विषयक मतभेद दूर करने का परामर्श दिया है। भगवान् श्रीकृष्ण ने तो इन सबसे एक कदम आगे बढ़ाते हुए कहा है कि चाहे कोई जिस किसी विधि से भी उपासना करे वह सब ईश्वर को पहुँचती है। हाँ, वह पूर्ण श्रद्धा से युक्त होनी चाहिये और दूसरों के प्रति विद्वेष की भावना से रहित होनी चाहिये। ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा से युक्त होने पर वह स्वतः विद्वेष-रहित हो जाती है। उनका कहना है—

"यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥
स तया श्रद्धाया युक्तस्तस्याराधनमीहते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लभते च ततः कामान् मयैव विहितान् हि तान् ॥"

(गीता ७/२१-२२)

अर्थात् **"जो-जो (साधक) जिस-जिस शरीर को श्रद्धा से पूजना चाहता है उस उसकी उसी श्रद्धा को मैं अचल बना देता हूँ। फिर उस श्रद्धा से युक्त होकर वह उसकी आराधना करता है और उससे उन कामनाओं को प्राप्त करता है जो मेरे द्वारा ही उसके लिए रची जाती हैं।"** धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय और तुलनात्मक अध्ययन मनुष्य को उदार बनाकर उसे दूसरों की उपासना-पद्धति तथा आचार-संहिता के प्रति सहिष्णु बना देता है। वह समझ जाता है कि उपासना-पद्धतियां केवल ईश्वर प्राप्ति केविभिन्न मार्ग हैं। सत्यस्वरूप ईश्वर एक ही है। इस तथ्य को सूर्य के उदारण से समझाते हुए स्वामी विवेकानन्द कहते हैं—"Suppose twenty thousand photographs were to be taken of the same sun, all from different stand points ; these twenty thousand photographs will all certainly differ from one an other. But can you deny that each is a photograph of the same sum ? So all forms of religion, high or low, are just different stages in the journey towards that eternal state of light, which is God Himself. Some embody a lower view, some a higher, and that is all the difference" अर्थात् कल्पना कीजिये कि बिभिन्न दृष्टिकोणों से सूर्य के एक हज़ार फ़ोटो लेने हैं। निश्चय ही ये एक हज़ार फ़ोटो एक दूसरे से भिन्न होंगे। परन्तु क्या तुम इस बात से इनकार कर सकते हो कि वे सब उसी सूर्य के फ़ोटो नहीं हैं। इसी प्रकार धर्म के ऊँच नीच सभी भेद शास्वत प्रकाश के, जिसे ईश्वर कहते हैं, विभिन्न स्तर हैं। किसी का दृष्टिकोण निम्न है और किसी का उच्च। बस यही अन्तर है।

कट्टर साम्प्रदायिकतावादी साधारणतया अपने-अपने धर्म अथवा मत के वाह्याचारों और रीति-रिवाजों को ही धर्म अथवा महज़ब समझते हैं। परन्तु उनकी ऐसी धारणा भ्रान्तिपूर्ण है। धर्म कोरा वाह्याचार नहीं है। उसका सम्बन्ध आचार-व्यवहार, आध्यात्मिक और मानसिक अभ्युन्नति तथा श्रेष्ठ मानवीय गुणों से है। **"सो हिन्दू सो मुसलमान, जिसका दुरुस्त रहे ईमान"**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहकर महात्मा कबीरदास ने इसी तथ्य की ओर संकेत किया है। महाभारतकार महर्षि वेदव्यास के अनुसार धर्म मानवीय जीवन का आधार है। उनका कहना है—**"धारणाद्धर्ममित्याहुः, धर्मो धारयते प्रजाः"**। धर्म शब्द का व्युत्पत्तिनिमित्तिक अर्थ भी इसी बात की पुष्टि करता है—**"ध्रियते लोकोऽनेन धरति लोक वेति धर्मः"** अर्थात् जिसके द्वारा संसार धारण किया हुआ है वह धर्म है। महाराज मनु ने आचार को धर्म का मुख्य तत्त्व स्वीकार करते हुए **"आचारप्रभवो धर्मः"** कहा है। **"यतोऽभ्युदयनिश्श्रेयससिद्धिः स धर्मः"** कह कर महर्षि कणाद ने धर्म को सांसारिक उन्नति तथा निश्श्रेयस का हेतु माना है और **"चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः"** कहकर महर्षि जैमिनी ने उसे शुभ कर्मों तथा जीवन का प्रेरक स्वीकार किया है। मनु और वेदव्यास दोनों ने क्रमशः मनुस्मृति तथा महाभारत में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, दम, धृति, धी (बुद्धि) विद्या और अक्रोध को धर्म के दस अंग अथवा तत्त्व बताया है। ये तत्त्व मानवजीवन की यथार्थता और सफलता के लिए अनिवार्य हैं। ये किसी विशेष सम्प्रदाय अथवा धर्म अथवा मत के न होकर मानव धर्म अथवा विश्व धर्म के हैं, क्योंकि इनमें आचार-विषयक उच्चतम सिद्धान्तों का समावेश है। इसलिए कहा जा सकता है कि धर्म केवल रीति-रिवाजों और बाह्याचारों तक सीमित नहीं होता। वह मानसिक, आध्यात्मिक और आचारात्मक उन्नति का भी हेतु है। इस बात को भी धर्मग्रन्थों के स्वाध्याय तथा तुलनात्मक अध्ययन से ही समझा जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक **'धर्मग्रन्थावलोकन'** इसी दिशा में किया गया प्रयास है, परन्तु इसका उद्देश्य न तो विभिन्न धर्मों एवं मतों की परस्पर तुलना करना है और न ही गुण-दोष-प्रतिपादक खण्डन-मण्डन करना। इसमें उनका विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण भी प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसका उद्देश्य वैदिक सनातन, पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों एवं मतों के प्रमुख धर्मग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय देना है ताकि उस-उस धर्म अथवा मत के अनुयायियों को तथा दूसरे धर्मों एवं मतों के अनुयायियों को भी उनका गंभीर अध्ययन करने की प्रेरणा प्राप्त हो और वे स्वयं उन्हें पढ़कर उनका तुलनात्मक और वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करें। इसमें केवल उन्हीं धर्मग्रन्थों का परिचय दिया गया है जिन्हें ईश्वरीय (इलहामी) पुस्तकें कहा जाता है अथवा जो धर्मों एवं मतों की सबसे प्रमुख धर्म-पुस्तकें हैं, जैसे वेद, अवेस्ता, तौरात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(तौरेत), सुत्तागमे, तिपिटिक, बाईबल, कुरआन आदि। इन पुस्तकों का क्रम वही रखा गया है जिस क्रम से धर्मों अथवा मतों का संसार में आरम्भ हुआ है। इसके अतिरिक्त इस परिचयात्मक अध्ययन के लिए अपेक्षित सामग्री सम्बन्धित ग्रन्थों से, उन ग्रन्थों के विशेषज्ञों तथा सम्बन्धित धर्माचार्यों की रचनाओं से ग्रहण की गई है। प्रत्येक पुस्तक का परिचय देते समय सर्वप्रथम उस धर्म अथवा मत के प्रवर्तक का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। तदनन्तर उपलब्ध सामग्री के आधार पर पुस्तक का परिचय दिया गया है और अन्त में पुस्तक में प्रतिपादित सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

जहाँ तक वैदिक सनातन धर्म अथवा हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है, निवेदन है कि उसके अनेक धर्मग्रन्थों में से केवल वेदों को ही इस पुस्तक में स्थान दिया गया है, क्योंकि हिन्दू वेदों को ही सर्वोत्कृष्ट और ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं। यह ठीक है कि अधिकांश हिन्दू गीता, रामायण, महाभारत आदि पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। हम उनसे यह नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि गीता, रामायण आदि के अध्ययन के साथ-साथ उन्हें वेदों का भी स्वाध्याय करना चाहिये, क्योंकि इन सब धर्म पुस्तकों के मूल आधार वेद ही हैं। "**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**" कहकर महाराज मनु ने वेदों को ही समस्त धर्म का मूल आधार माना है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों को सभी सद्विद्याओं की पुस्तकें माना है। प्राचीन ऋषियों-मुनियों ने एवं मध्यकालीन धर्माचार्यों ने वेदों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और उनके अध्ययनाध्यापन को सबसे श्रेष्ठ धार्मिक कृत्य बताया है। आधुनिक युग में भी जैसे-जैसे वेदों के अध्ययन की अभिरुचि बढ़ती जाती है वैसे-वैसे भारतीय और पाश्चात्य विद्वान् मुक्तकण्ठ से यह कहने लग गये हैं कि वेदों में प्रतिपादित ज्ञान सर्वांगीण और सर्वतोमुखी है, वह अनेक अन्य धर्मग्रन्थों के ज्ञान के समान एकांगी नहीं है। वह आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सभी प्रकार का है। वेद की शिक्षाएँ मानव-जीवन की सर्वांगीण उन्नति में सहायक हो सकती हैं। इसलिए गीता, रामायण आदि के अध्ययन के साथ-साथ वेदों और उपनिषदों के स्वाध्याय को भी अपना पवित्र धार्मिक कृत्य मानना चाहिये और उसे प्राथमिकता देनी चाहिए। ऐसा करने पर ही वे वेदों के रहस्य को, ऋत और सत्य को समझ सकेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक सनातन धर्म

वैदिक सनातन धर्म संसार में सबसे प्राचीन धर्म है जिसकी उत्पत्ति पृथ्वी और मानव की उत्पत्ति के साथ ही मानी जाती है। संसार में अन्य कोई भी धर्म अथवा मत इतना प्राचीन नहीं है। वेद मूलक होने से इसे वैदिक धर्म कहते हैं और प्राचीनतम तथा शाश्वत होने के कारण इसे सनातन धर्म कहा जाता है। इसी को आर्य धर्म अथवा हिन्दू धर्म भी कहा जाता है। 'आर्य' शब्द का अर्थ है 'श्रेष्ठ' और 'हिन्दू' शब्द का अर्थ है **'प्रत्यक्षतः या परोक्षतः वेदोक्त विचारों के आधार पर बने धर्म, आचार-व्यवहार, रीति-नीति, समाज-व्यवस्था आदि में विश्वास रखने वाला और उन पर आचरण करने वाला।'**[1]

'सूर्यसिद्धान्त' आदि ज्योतिष-ग्रन्थों तथा भारतीय पञ्चांगों के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति आज से १९५५८८५०७० वर्ष पूर्व हुई।[2] प्रतिदिन सन्ध्या के संकल्प में सनातन धर्मी यही सृष्टि संवत् बोलते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार यही संवत् वेदों के आविर्भाव का संवत् है। यूरोपीय विद्वानों ने एवं उनके अनुयायी अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय विद्वानों ने वेद के उत्पत्तिकाल के विषय में विभिन्न मत प्रस्तुत किये हैं। उदाहरणार्थ जैसे—

१. मैक्समूलर	८०० पू० ई० से १,५०० पू० ई०
२. मैकडानल	१,२०० पू० ई० से २,००० पू० ई०

१. बृहत् हिन्दी कोश।

२. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** (वि० सं० १९३३) में सृष्टि एवं वेदों की उत्पत्ति १९६०८५२९७६ वर्ष लिखी है। तदनुसार सृष्टि की उत्पत्ति आज से १९६०८५८९७६ वर्ष पूर्व हुई। पं० लेखराम और बाबू निहालसिंह ने इस पर टिप्पणी देते हुए लिखा है कि इस गणना में कहीं भूल हो गई है। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि संवत् (वि० सं० १९३३ में) १९५५८८४९७६ होना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३. हेग	१,४०० पू० ई० से २,००० पू० ई०
४. ह्विटने	१,५०० पू० ई० से २,००० पू० ई०
५. विलसन	१,५०० पू० ई० से २,००० पू० ई०
६. ग्रिफ्फ्थ	१,५०० पू० ई० से २,००० पू० ई०
७. बैन्फ़ी	१,५०० पू० ई० से २,००० पू० ई०
८. वैबर	१,६०० पू० ई०
९. जैकोबी	१,५०० पू० ई० से ४,००० पू० ई०
१०. डॉ० आर० जी० भण्डारकर	२,५०० पू० ई०
११. डॉ० राधा कुमुद मुकुर्जी	२,५०० पू० ई०
१२. डॉ० ए० डी० पुश्लकर	२,५०० पू० ई० से बहुत पहले
१३. डॉ० विंटरनिट्ज़	४,००० पू० ई०
१४. बाल गंगाधर तिलक	१,५०० पू० ई० से ४,५०० पू० ई०
१५. श्री वी० आर० कारणादिकर	४,२०० पू० ई०
१६. प्रो० वेंकटेश्वर	११,००० पू० ई०
१७. श्री वाडार	१५,००० पू० ई०
१८. डॉ० अविनाशचन्द्र और उमेशचन्द पागवी	२५,००० पू० ई०
१९. पं० दीनानाथ शास्त्री चुलेट	लगभग तीन लाख वर्ष पूर्व

परन्तु प्राचीन और मध्यकालीन सभी भारतीय आचार्य वेद को अनादि अथवा सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही आविर्भूत हुआ मानते रहे हैं और वैदिक सनातन धर्मावम्बियों की आज भी ऐसी ही धारणा है।

वैदिक काल से लेकर आज तक वैदिक सनातन धर्म में सहस्रों महापुरुष जन्म ले चुके हैं और सैकड़ों ने समय-समय पर परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार धर्म और समाज में आने वाले विकारों के सुधार के लिए; वैदिक और दार्शनिक सिद्धान्तों को तत्तत्समय की जनता के लिए सुगम तथा ग्राह्य बनाने के लिए; वैदिक और दार्शनिक सिद्धान्तों की विवेचना तथा स्पष्टीकरण के लिए; धर्म, आचार और नैतिकता के प्रतिपादन के लिए; यज्ञ, योग और साधना की व्याख्या के लिए तथा सांस्कृतिक तत्त्वों और मानवीय जीवन के निरूपण के लिए धर्मग्रन्थों की रचना की है। सम्भवतः इसीलिए आर्यों अथवा हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों की संख्या अन्य धर्मों और मतो के ग्रन्थों की अपेक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहीं अधिक है। यह संख्या सैंकड़ों तक है। अधिक प्रसिद्ध और मान्य धर्म-ग्रन्थ हैं——वेद संहिताएँ, ब्राह्मण और आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग, धर्मसूत्र और गृह्यसूत्र, दर्शनशास्त्र, स्मृति ग्रन्थ, रामायण, महाभारत, पुराण आदि। वेद संहिताएं चार हैं और चारों पर इस समय छः ब्राह्मण उपलब्ध हैं—— ऐतरेय, कौषीतकि, शतपथ, तैत्तिरीय, ताण्ड्य और गोपथ। उपनिषदों की संख्या सौ से अधिक है, परन्तु मुख्य और अधिक प्रसिद्ध उपनिषद् ग्यारह हैं— ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर। वेदांग छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। इनमें से प्रत्येक वेदांग पर अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। दर्शन शास्त्र छः हैं—वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा। उत्तरमीमांसा को वेदान्त भी कहते हैं। स्मृतिग्रन्थ भी अनेक हैं, जिनमें से मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति अधिक प्रसिद्ध और मान्य हैं। गीता महाभारत का महत्त्वपूर्ण अंग है और धर्म, दर्शन, भक्ति, कर्मयोग आदि का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसे न केवल हिन्दू ही वरन् देश और विदेश के सभी धर्मों के विद्वान् बड़े आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। गीता में अठारह अध्याय हैं और सात सौ श्लोक। पुराण अठारह हैं—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, भविष्यत्, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़ और ब्रह्माण्ड।

इन सभी धर्मग्रन्थों को अत्यन्त सम्मानित स्थान प्राप्त होने पर भी ईश्वरीय ग्रन्थ अथवा इलहामी ग्रन्थ (Revealed books) केवल वेदों को ही माना जाता है। और उन्हें ही सभी धर्मों एवं धर्मग्रन्थों का मूलाधार स्वीकार किया जाता है। मनुस्मृति में मनु महाराज ने **"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"** कह कर इसी तथ्य का समर्थन किया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद को **'सब विद्याओं का भण्डार"** बताया है और **"वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म"** कहा है।

वेद

भारतीय आर्यों (हिन्दुओं) के विश्वासानुसार वेदों का स्थान सर्वोपरि है। वेदों को ब्रह्मवाक्य और आप्तवाक्य माना जाता है। भारतीय आर्य और उनका समस्त प्राचीन साहित्य मुख्यतया वेदों और उनसे सम्बन्धित ग्रंथों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से ही अनुभूति प्राप्त करता है। विदेशी विद्वानों ने भी वेदाध्ययन की महिमा को स्वीकार किया है और कइयों ने अपना समस्त जीवन इसी कार्य में लगा दिया है। सभी श्रौत और स्मार्त ग्रन्थों ने वेदों को ईश्वरकृत और अपौरुषेय स्वीकार किया है और उनकी महिमा का गान किया है। स्वयं वेदमंत्रों में वेदों की अपौरुषेयता और महिमा का प्रतिपादन किया गया है। कुछ प्रसिद्ध श्रौत एवं स्मार्त ग्रन्थों की निम्नलिखित पंक्तियों से इस तथ्य की पुष्टि होती है :—

(१) ऋग्वेद

(क) उस सर्वहुत यज्ञस्वरूप परमेश्वर से ही ऋचाएँ (ऋग्वेद) और साम (सामवेद) उत्पन्न हुए। उसी से छन्द (अथर्ववेद) उत्पन्न हुआ और उसी से यजु: (यजुर्वेद) उत्पन्न हुआ।[1]

(ख) मानव अपनी कमनीय वाणी में वेद के ज्ञान को उस तेजोमय परमात्मा से वैसे ही प्राप्त करता है जैसे पुत्र पिता के धन को प्राप्त करता है।[2]

(ग) जो तेजोमय अग्निस्वरूप परमात्मा हमें वेद (मन्त्र) प्रदान करते हैं वही हमारी सब ओर से रक्षा किया करें और हमें सब पापों से बचावें।[3]

(२) यजुर्वेद

(क) प्रजापति परमेश्वर वेद है। वह ज्ञानस्वरूप देवों के लिए वेद रूप में प्रकट हुआ है और प्रकट होता है।[4]

---

१. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
(ऋग्वेद १०/९०/९, यजुर्वेद ३१/७, अथर्व० १९/६/१३)

२. गोषु प्रशस्तिं वनेषु धिषे भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः।
वि त्वा नरः पुरुत्रा सपर्यन्पितुर्न जिव्रेर्वि वेदो भरन्त॥
(ऋग्वेद १/७०/५)

३. स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु विश्वतः। उतास्मान् पात्वंहसः॥
(ऋग्वेद ७/१५/३)

४. वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्योऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः।
(यजुर्वेद २/२१)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ख) प्रजापति विश्वकर्मा हैं। ऋक् और साम प्रजापति की एष्टि नामक अप्सराएं हैं।[1]

(ग) रथ के चक्र की नाभि में जैसे आरे लगे होते हैं वसे ही उस परमात्मा में ऋक्, यजुः और साम प्रतिष्ठित हैं।[2]

(३) अथर्ववेद

(क) उस स्कंभ के विषय में कहो जिससे ऋचाएँ प्रकट हुई और यजुर्वेद के मन्त्र प्रकट हुए, साम जिसके लोम हैं और अथर्व जिसका मुख है।[3]

(ख) वेद परमात्मा से प्रादुर्भूत होता है और उसी में लीन हो जाता है। वह ब्रह्म के धर्म का प्रतिपादक वीर्य है, तप है।[4]

(ग) वेद मृत्युतारक विश्वजित् ब्रह्मोदन में निहित हैं।[5]

(घ) वेदमाता स्तुति किये जाने पर वरों, आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति,धन और ब्रह्मवर्चस् को देने वाली तथा ब्रह्मलोकगामिनी है।[6]

(ङ) परमात्मा ऋचाओं से प्रकाशित होता है, ऋचाएँ परमात्मा से प्रकाशित होती हैं।[7]

---

१ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यपसरस एष्टयो नाम। (यजुर्वेद १८/४३)

२ यस्मिन्नृचः साम यजुंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। (यजुर्वेद ३४/५)

३ यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमान्यथर्वांगिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि। (अथर्व० १०/७/२०)

४ यस्मात् कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्नन्तरव दध्म एनम्। कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण तेन मा देवास्तपसावतेह॥ (अथर्व० १९/७२/१)

५ यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम्॥ (अथर्व० ४/३५/६)

६ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। (अथर्व० १९/७१/१)

७ स वा ऋग्भ्योऽजायत तस्मादृचोऽजायन्त। (अथर्व० १३/७/३८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) ब्राह्मण ग्रन्थ

(क) वेद की उत्पत्ति प्रजापति से हुई।[1]

(ख) समस्त प्राणियों और पदार्थों की स्थिति वेद में ही है।[2]

(ग) तपोमग्न श्रान्त प्रजापति ब्रह्म ने त्रयी विद्या को सर्वप्रथम उत्पन्न किया।[3]

(घ) प्रजापति त्रयी विद्या के साथ जलों में प्रविष्ट हुआ।[4]

(ङ) ऋक् और यजुः अमानुषी वाणी है।[5]

(च) प्रजापति ने इन वेदों का सृजन किया।[6]

(५) आरण्यक

(क) यजुः ब्रह्म का उदर, साम सिर और ऋचाएं मूर्ति हैं।[7]

(ख) ब्रह्म ही वेद पुरुष का रस है।[8]

(६) उपनिषद

(क) ऋ,क्, साम और यजुः ब्रह्म से ही प्रादुर्भूत होते हैं।[9]

---

१ प्राजापत्यो वेदः। (तै० ३/३/२/१), प्रजापतिर्वा इमान् वेदानसृजत्। (ऐतेरय० ब्रा०)

२ त्रय्यां वाव विद्यायां सर्वाणि भूतानि। (शत० १०/४/२/२२)

३ स (प्रजापतिः) श्रान्तस्तपानो ब्रह्मैव प्रथममसृजत त्रयीमेव विद्याम्। (शत० ६/१/१/८)

४ प्रजापतिस्त्रय्या विद्यया सहापः प्राविशत् (शत० ६/३/१/१०)

५ स (ब्रह्मा) यदि पुराऽमानुषीं वाचं व्याहरेत्। ततो वैष्णवीमृचं वा यजुर्वा जपेत्। (शत० १/७/४/२०)

६ प्रजापतिः वा इमान् वेदानसृजत्। (ऐतरेय ब्रा०)

७ शां० आ० ३/७

८ ऐ० आ० ३/२/३

९ मुं० उ० २/१/६, श्वेता० ४/६,६/१८.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ख) यजुः मनोमय पुरुष का सिर है, ऋक् दक्षिण पक्ष, साम उत्तर पक्ष और अथर्वांगिरस पूंछ (पिछला प्रदेश) हैं ।[1]

(ग) जो कुछ वेद में लिखा है वह सत्य है, उसी पर विद्वान् आश्रित हैं ।[2]

(घ) अग्नि ही उस परब्रह्म का सिर है, सूर्य और चन्द्र नेत्र हैं, दिशाएं श्रोत्र हैं और विवृत वेद उसकी वाणी है ।[3]

(ङ) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद उस महाभूत परब्रह्म का ही निःश्वास है ।[4]

(च) उस परमात्मा ने ही सर्वप्रथम ब्रह्मा को बनाया और उसे वेद प्रदान किये ।[5]

(७) स्मृतिग्रन्थ

(क) ईश्वर ने यज्ञ-सिद्धि के लिए ऋक्, यजुः और साम रूप वेदों को अग्नि, वायु और रवि द्वारा प्रकाशित किया ।[6]

(ख) वेद ही धर्म का मूल है ।[7]

(ग) चारों वर्ण, तीनों लोक, चारों आश्रम, भूत, वर्तमान और भविष्य सब वेद से ज्ञात होते हैं ।[8]

---

१ "तस्य यजुरेव शिरः । ऋग् दक्षिणः पक्षः । सामोत्तरः पक्षः । अथर्वांगिरसः पुच्छे प्रतिष्ठा" (तै० उ०)

२ मैत्रा० उ०

३ अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः ।" (मुण्डक० २/४)

४ एतस्य वा महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः ।।" (बृहदारण्यक० ४/५/११)

५ "यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।" (श्वेताश्वतर० ६/१८)

६ "अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् ।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थं ऋग्यजुःसामलक्षणम् ।।" (मनु० १/२३)

७ "वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ।" (मनु० २/६)

८ "चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् ।
भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ।।" (मनु० १२/९७)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(घ) वेद देवों, पितरों और मनुष्यों की आंख हैं। वे सर्वज्ञानमय हैं।[9]

(ङ) वेद अकृत्रिम ग्रन्थ-समूह हैं।[10]

(८) दर्शनग्रन्थ

(क) आत्मशक्ति द्वारा अर्थात ईश्वर की निजी शक्ति द्वारा अभिव्यक्त होने के कारण वेद स्वत:प्रमाण हैं।[11]

(ख) ईश्वर प्राचीनतम ऋषियों के भी गुरु हैं। अतः वेद नित्य हैं [12]

(ग) वेद सभी शास्त्रों के उत्पत्तिस्थान हैं, इसीलिए वे नित्य और स्वतः प्रमाण हैं।[13]

(घ) वेद नित्य हैं, क्योंकि उनकी अभिव्यक्ति औरों के लिए (संसार के उपकार के लिए) हुई है।[14]

(ङ) ईश्वरोक्त होने के कारण वेद नित्य और प्रामाणिक हैं।[15]

(च) आप्त वचन होने के कारण वेद भी मन्त्र, आयुर्वेद आदि के समान प्रमाण है।[16]

(९) पुराण और महाभारत

(क) भगवान् विष्णु ऋक्, साम और यजुर्मय हैं। ऋक्, यजुः और साम का सार ही विष्णु की आत्मा है। अथर्ववेद से सम्पूर्ण राजकर्म और ब्रह्मत्व की व्यवस्था का ज्ञान होता है।[17]

---

९ मनु० १२/९४, २/७

१० व्यास स्मृति।

११ "निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतःप्रामाण्यम्।" (सांख्यदर्शन ५/५१)

१२ "स एष पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्।" (योग दर्शन १/१/२६)

१३ 'शास्त्रयोनित्वात्" "अत एव च नित्यत्वम्"।
(वेदान्त सूत्र १/१/३, १/३/१९)

१४ "नित्यस्तु स्याद्दर्शनस्य परार्थत्वात्" (पूर्वमीमांसा० १/१/१८)

१५ "तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्।" (वैशेषिक दर्शन १/१/३)

१६ "मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्।"
(न्यायदर्शन २/१/६७)

१७ विष्णु पुराण, ३/३/२०; ३/४/१४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ख) वेद निर्गुण ब्रह्म का प्रतिपादन करते हैं और उनकी महिमा अपूर्व है ।[1]

(ग) संसार के आरम्भ में स्वयम्भू भगवान् विधाता ने अनादि और शाश्वत वेदवाणी को आविर्भूत किया। वे सभी प्रवृत्तियों के स्रोत हैं।[2]

(घ) सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्म से ब्राह्मणों, वेदों और यज्ञों की सृष्टि की गई।[3]

इन श्रौत-स्मार्त ग्रन्थों के अतिरिक्त मध्यकालीन एवं आधुनिक कालीन आचार्यों, विद्वानों, धार्मिक नेताओं तथा महापुरुषों ने वेदों की नित्यता का प्रतिपादन किया है और उनके द्वारा प्रतिपादित दिव्य ज्ञान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के कथन निम्नलिखित हैं—

मध्यकालीन कतिपय आचार्य और महापुरुष

(१) महात्मा बुद्ध

"विद्वां च वेदेहि समेच्च धम्मं ।
न उच्चावचं गच्छति भूरि पंजो ॥"[4]

[अर्थात् "भूरिप्रज्ञ विद्वान् वेदों के द्वारा धर्म को प्राप्त करके अस्थिरता को प्राप्त नहीं होता।"]

(२) कालिदास

"श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् ।"[5]

["स्मृतिग्रन्थ श्रुतिग्रन्थों का अनुकरण करते हैं।"]

---

1. भागवत पुराण, १०/८७ (पूरा अध्याय)
2. अनादिनिधना नित्या वागुत्सष्टा स्वयम्भुवा ।
आदौ वेदमयी नित्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥ (महाभारत २२/२३२/२४)
3. ओं तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविध स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥ (गीता १७/२३)
4. संस्कृत छाया—
विद्वांश्च वेदैः समेत्य धर्मं
नोच्चावचं गच्छति भूरिप्रज्ञः ॥ (सुत्तनिहत, २९२)
5. रघुवंश, ३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(३) शंकराचार्य

"महतः ऋग्वेदादेः शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवद् सर्वार्थ-द्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म नहीदृशस्य शास्त्रस्यग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यतः सम्भवोऽस्ति ।"[1]

[अनेक विद्याओं के उत्पत्ति स्थान, दीपक के समान सभी अर्थों के द्योतक, सर्वज्ञ के तुल्य महान् ऋग्वेदादि शास्त्रों का उत्पादक ब्रह्म (परमात्मा) है। इस प्रकार के सर्वज्ञ गुणों से समन्वित ऋग्वेदादि शास्त्र का जन्म सर्वज्ञ ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी से सम्भव नहीं है।]

(४) महात्मा कबीर

"वेद कतेब कहहु जनि झूठा ।
झूठा जो न विचारे ।"[2]

(५) गोस्वामी तुलसीदास

(क) "पद पाताल सीस अज धामा । अपर लोक अंग अंग विश्रामा ।
भृकुटि विलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच घनमाला ।
जासु घ्रान अस्विनी कुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपारा ।
श्रवण दिसा दस वेद बखानी । मारुत स्वास निगम निज बानी ॥"[3]

(ख) "बंदउँ चारिउ वेद भव वारिधि बोहित सरिस ।"[4]

(६) गुरु नानक देव

(क) "ओंकार वेद निरमाये ।"

(ख) "सामवेद रिग जजुर अथर्वण ब्रह्मे मुख मा इयाहे त्रैगुण ।
ताकी कीमत कीत कह न सकै, को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ।"

(ग) वेद बखान कहहि इक कहिये, ओह बे अन्त अन्त किन लइये ।[5]

---

१. शांकरभाष्य १/१/३
२. कबीर ग्रन्थावली, कबीर बीजक, गुरु ग्रन्थ साहब आदि ग्रन्थों में संकलित
३. रामचरितमानस, ६/१५/१-२
४. रामचरितमानस, १/१४ (उ)
५. गुरु ग्रन्थ साहब महला १ ओंकार शब्द; महला १ शब्द १७; बसन्त अष्टपदियां महला १ अ० ३ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(७) गुरु अर्जुन देव

(क) "हरि आज्ञा होए वेद, पाप पुन्न बिचारिया।"
(ख) "ओंकार उत्पाती। चार वेद चार खाणी॥"[1]

(८) दारा शिकोह

"निरन्तर और क्रमिक गवेषणा के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि अन्य समस्त दिव्य ग्रन्थों से बहुत पहले परमात्मा ने अपने दिव्य ज्ञान के चारों ग्रन्थ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ब्रह्मा आदि ऋषियों के माध्यम से हिन्दुओं के लिए आविर्भूत कर दिये थे।"[2]

आधुनिक आचार्य और महापुरुष

(१) स्वामी दयानन्द सरस्वती

(क) "वेद सब विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"[3]

(ख) **ब्रह्मानन्तमनादि विश्वकृदजं सत्यं परं शाश्वतं**
विद्या यस्य सनातनी निगमभृद् वैधर्म्यविध्वंसिनी।
वेदाख्या विमला हिते हि जगते नृभ्यः सुभाग्यप्रदा
तन्नत्वा निगमार्थभाष्यमतिना भाष्यं तु तन्तन्यते॥[4]

[अर्थात् "जो ब्रह्म अनन्त, अनादि, विश्व का रचयिता, अजन्मा, सत्य, पर और शाश्वत है; जिसकी वेद नामिका सनातन और निर्मल विद्या धर्म को धारण करने वाली और वैधर्म्य की नाशिका है एवं संसार तथा मनुष्यों के लिए सौभाग्यप्रद है; उस ब्रह्म को नमस्कार करके वेदार्थ-प्रतिपादन की इच्छा से मैं वेद का भाष्य आरम्भ करता हूं।"]

(२) जैनाचार्य कुमुदेन्दु

"केवल ऋग्वेद ही अनादि और अनन्त है और ईश्वरीय शब्द है। विविध

---

1. गुरु ग्रन्थ साहब, महला ५ शब्द १; महला ५ शब्द १७।
2. Dara Shekoha's Persian Quotations.
3. आर्य समाज के नियम, तीसरा नियम।
4. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, मंगलाचरण।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषाओं की इससे उत्पत्ति हुई है। सभी भाषाओं के बोलने वालों के लि
ईश्वरीय सन्देश एक ही है।"[1]

(३) दचन जी, बी० ए०, एल-एल० बी०, डी० टी० एच०

वेद ज्ञान और बुद्धि की पुस्तक है जिसमें प्रकृति, धर्म, प्रार्थनाएं चारि कता, नैतिकता आदि का समावेश है। वेद शब्द का अर्थ ही है बुद्धि और ज्ञान। वेद हमें अत्यन्त पवित्र एकेश्वरवाद, विश्वजनीन प्रेम, ईश्वरीय इ और तेज, ईश्वर द्वारा असंख्य ब्रह्माण्डों के सृजन और विनाश, जीवात्माओं हित और अनुशासन के लिए प्रकृति के शाश्वत नियम (जिसे वेद में ऋ कहा गया है) और कर्म सिद्धान्त की शिक्षा देता है।"[2]

(४) श्री एन० बी० पावगी

"वेद ज्ञान का मूल आधार है, प्रेरणा का मुख्य स्रोत है, दिव्य ज्ञान अ शाश्वत सत्यों का भण्डार है।"[3] "मैं पाठकों को निर्भय होकर यह सम कराना चाहता हूँ कि वेद में अनेक ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका अभी तक वि को भी ज्ञान नहीं, क्योंकि वेद साहित्यिक सम्पत्ति की अक्षय निधि हैं जि कुछ द्वार तो खुले हैं और कुछ सर्वथा बन्द हैं जिन्हें खोलने का प्रयास न किया गया।"[4]

(५) सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन्

"वेद शाश्वत हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं।"[5]

(६) श्री अरविन्द

"दयानन्द की इस उक्ति में कुछ भी विचित्रता नहीं है कि वेद में वैज्ञा सत्य और धार्मिक सत्य दोनों सम्मिलित हैं। मैं इसके साथ अपनी मान्य भी जोड़ता हूँ कि वेद में अन्य वैज्ञानिक सत्य भी हैं जिनका अभी आधुनिक विज्ञान को भी ज्ञान नहीं।'[6]

---

१. भूवलय, अध्याय ६।
२. Philosophy of Zoroastrianism & Comparative study Religions.
३. Vedic India Mother of Parliament.
४. The Vedic Fathers of Geology; Introduction.
५. Indian Philosophy, Vol II.
६. Dayanand & Veda.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(७) श्री ए० सी० बोस

"कुछ विशेष नास्तिक सम्प्रदायों को छोड़कर भारत के सभी धर्म जो विभिन्न युगों में विकसित हुए हैं, वेदो की प्रमुख प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं। उपनिषदों, महाकाव्यों अथवा अन्य किन्हीं भी संस्कृत ग्रन्थों को यह सम्मान प्राप्त नहीं है।"[1]

(८) श्री सुदामा प्रसाद

"वैदिक संहिताएं सभी समयों के लिए सत्य हैं। वे आधुनिक काल में भी उतनी ही उपयोगी हैं जितनी भूतकाल में थी और जितनी भविष्य में होगी।"[2]

(९) डाक्टर मोतीलाल दास

"ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त विश्व की एकता के लिए तूर्यनाद है और आजकल जब कि **'सार्वभौम अन्तर्राष्ट्रीय योजना'** की चर्चा की जा रही है, यह समस्त संसार के सम्मुख महत्त्वपूर्ण अपील है।"[3]

इन भारतीय आचार्यों और विद्वानों के अतिरिक्त विदेशी विद्वानों और धर्माचार्यों ने भी वेदों की दिव्यता और प्रामाणिकता को स्वीकार किया है। नीचे कुछ धर्माचार्यों और विद्वानों की सम्मतियाँ दी जाती हैं :—

(१) श्री जरथुस्त (पारसी मत के प्रवर्तक)

अत फ्रवख्षया अङ्‌हॅउश् अह्या वहिश्तॅम्।
अषात् हॅचा मज़्दा वए २ दा यँ ईम् दात्॥[4]

[अर्थात् "अब मैं संसार में सर्वोत्तम सार वेदों के विषय में कहूँगा जिन्हें मज़्दा ने हचा (वैदिक—**'ऋत महत'**) से संयुक्त करके मानवों को प्रदान किया।"]

(२) श्री लाबी (अरबी कवि)[5]

"भारत की पवित्र भूमि ! तू सब प्रकार से सम्मान के योग्य है, क्योंकि तुझ में परमात्मा ने अपने सत्य ज्ञान का प्रकाश किया। ये चारों पवित्र पुस्तकें

---

१. The Call of Vedas.
२. The Essence of Vedic Religion.
३. Aryan Path.
४. उश्त० गा० य० ४५/४/१/२
५. स्थितिकाल १७० पू० ई०।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे मन की आँखों के सामने कितना पवित्र प्रकाश प्रस्तुत करती हैं। :
प्रकाश उषाकाल के सुन्दर और शान्त तेज के समान है। भारत में परमात
ने चारों वेदों का ऋषियों पर (ऋषियों के मन में) प्रकाश किया। साम अं
यजु: वे निधि हैं जिनका ईश्वर ने उपदेश दिया। मेरे भाइयो ! इनकी पू
करो, क्योंकि ये हमें मुक्ति का मार्ग बताते हैं। इन चारों वेदों में से अन्य
ऋग् और अथर्व हमें विश्व-भ्रातृत्व की शिक्षा देते हैं।'[1]

(३) डा० एल्फ्रेड रस्सेल वैलेस

"आश्चर्यजनक सूक्त संग्रह जिसे वेद नाम से अभिहित किया जाता
धार्मिक शिक्षाओं की एक विस्तृत व्यवस्था है जो उतनी ही पवित्र एवं उ
है जितने हिब्रू धर्मग्रन्थों के कुछ सर्वश्रेष्ठ भाग हैं। ·········इसमें हम अत्य
उन्नत धार्मिक विचारकों की अत्यन्त आवश्यक शिक्षाएं पाते हैं। ······वै
सूक्तों में जो विचार उपलब्ध हैं वे हमारे धर्म-प्रचारकों और कवियों
विचारों से किसी प्रकार भी निम्नकोटि के नहीं हैं।"[2]

(४) श्री मोरिस फिलिप

"ओल्ड टैस्टामेण्ट की पुस्तकों के ऐतिहासिक एवं वंशपरम्परागत अध्य
और आधुनिकतम अन्वेषण के बाद हम सुविधापूर्वक कह सकते हैं कि ऋ
सबसे प्राचीन पुस्तक है, न केवल आर्यों की, बल्कि समस्त संसार की। ···अ
हमारा इस निर्णय पर पहुँचना ठीक और उचित ही है कि वैदिक आर्यों
उच्च एवं पवित्र मान्यताएं अत्यन्त प्राचीन दिव्य ज्ञान के आविर्भाव
फलस्वरूप निर्धारित की गई थीं।"[3]

(५) प्रोफैसर हीरन

"वेद निस्सन्देह संस्कृत में लिखे गये सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। संस्कृत
प्राचीनतम पुस्तकों में भी वेदों की विद्यमानता का उल्लेख किया गया
केवल वेद ही मानवीय प्रगति और ऊर्ध्वमुखी विकास के लिए दिव्य प्रक
स्तम्भ के रूप में मार्गदर्शन कर रहे हैं।"[4]

. Lavi's verses.
२. Social Environment & Moral Progress, pp. 11 to 14.
३. The Teachings of the Vedas.
४. Historical Researches Vol. II.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(६) मोन्स डियोस डैल्बोस (फ्रांसीसी विद्वान्)

"ऋग्वेद मानव के अत्युच्च विकास की सर्वश्रेष्ठ मान्यता है।"[1]

(७) मिस्टर लिअन डैल्हास (फ्रांसीसी विद्वान्)

"ऋग्वेद मानवता के सर्वोच्च मार्गों की सर्वश्रेष्ठ मान्यता है।"[2]

(८) मैक्समूलर

"वेद शाश्वत हैं और इसीलिए पूर्ण तथा निर्दोष हैं।"[3] "वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं और ईश्वर के वचन कहे जाते हैं।"[4]

(९) शोपनहावर (जर्मन विद्वान्)

"इससे यह लोकप्रिय विश्वास दृढ़ होता है कि वेद शाश्वत हैं और किसी भी मानवीय कार्यकारण-परम्परा से सम्बन्ध नहीं रखते और कि वे स्वयं विश्व के विधाता ब्रह्मा द्वारा आविर्भूत हुए हैं।"

(१०) श्री बाऊलंगर (रूसी विद्वान्)

"जहाँ तक मैं वेद की शिक्षाओं को ग्रहण कर सका हूँ, ये इतनी उन्नत हैं कि मैं इस बात को अपना अपराध समझूंगा यदि रूसी जनता वेद का परिचय इसके टूटे-फूटे अथवा संदिग्ध अनुवाद से प्राप्त करे।"[5]

(११) श्रीमती ह्वीलर विल्लैक्स (प्रसिद्ध अमरीकन विदुषी)

"हम सबने भारत के प्राचीन धर्म के सम्बन्ध में सुना और पढ़ा है। यह (भारत) वेदों की भूमि है जो न केवल जीवन को पूर्ण बनाने वाले उच्च धार्मिक विचारों से ही परिपूर्ण है, वरन् उन तथ्यों से भी युक्त है जिन्हें विज्ञान ने सत्य सिद्ध किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि विद्युत् (Electricity), रेडियम, इलैक्ट्रोन, वायुयान आदि सभी से वैदिक ऋषि परिचित थे।"[6]

---

१. हरविलास शारदा की पुस्तक 'Hindu Superiority' में उद्धृत।
२. श्री देवीचन्द द्वारा 'यजुर्वेद की भूमिका' में उद्धृत।
३. Introduction of Science & Religion.
४. Message of the Vedas.
५. श्री० टी० एल० वासवानी की पुस्तक 'टार्च बेयरर' में उद्धृत।
६. श्री देवीचन्द द्वारा यजुर्वेद की भूमिका में उद्धृत।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१२) श्री जैकोलियट

"यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि सभी ईश्वरीय पुस्तकों में से हिन्दुओं की ईश्वरीय पुस्तक वेद ही एक ऐसी पुस्तक है जिसके विचार आधुनिक विज्ञान के अनुकूल हैं। वेद ही घोषणा करता है कि विश्व की उत्पत्ति धीरे-धीरे और क्रमिक रूप में हुई है।"[1]

(१३) काऊँट बायरन्स्टजेमा

"वस्तुतः यह उच्च विचार हमें विश्वास दिलाते हैं कि वेद एक ईश्वर क स्वीकार करते हैं जो सर्वशक्तिमान्, अनन्त, अनादि, शाश्वत, स्वयस्थित, प्रकाशमय और विश्व का स्वामी है।"[2]

(१४) श्री कोलब्रुक

"प्राचीन हिन्दू धर्म जैसा कि वह हिन्दुओं की धर्मपुस्तकों वेदों में पाय जाता है एकेश्वरवादी था।"

उपर्युक्त वेदवाक्यों; ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों एवं अन्य धर्मग्रन्थों की वेदविषयक मान्यताओं; सन्तों, भक्तों और कवियों के उद्गारों; आचार्यों और विद्वानों के कथनों; विदेशी विद्वानों की धारणाओं और स्तुति वाक्यो के आधार पर कहा जा सकता है कि वेद संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ होने के साथ-साथ अपौरुषेय अथवा ईश्वरकृत हैं। वे भारत के सभी धर्मों एव धर्मग्रन्थों के मूलाधार हैं। अन्य देशीय धर्मों ने भी इनसे यथेष्ट प्रेरणा प्राप्त की है।

जैसे 'कुरआन' आदि अन्य धर्मग्रन्थों के पदों, वाक्यों और शब्दों की गणना की गई है वैसे ही वेदों के भी मन्त्रों और शब्दों की गणना की गई है; वस्तुतः यह गणना बहुत पहले ही कर दी गई थी और अनुक्रमणियों में य गणना दे रखी है।

वैदिक संहिताएँ संख्या में चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववद। इन चारों को ही वेदत्रयी भी कहा जाता है। यहाँ 'त्रयी' शब्द प्रयोग संख्यावाचक न होकर त्रिधा उपयोग वाचक है।

---

१. The Bible in India, Vol. II, Chapter I.
२. Mythology of the Hindus.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१) ऋग्वेद

ऋग्वेद का क्रम दो प्रकार से है—(१) मण्डल सूक्त क्रम और (२) अष्टक अध्याय क्रम। पहले क्रम के अनुसार ऋग्वेद में दस मण्डल है। प्रत्येक मण्डल क्रमश: अनेक अनुवाकों और सूक्तों में विभक्त है। प्रत्येक मण्डल में सूक्तों की संख्या एक सी नहीं है और न ही प्रत्येक सूक्त में ऋचाओं की संख्या एक सी है। दस मण्डलों में कुल सूक्त १०२८ (एक सहस्र अट्ठाईस) हैं और कुल ऋचाएँ अथवा मन्त्र १०४७२ (दस सहस्र, चार सौ बहत्तर) हैं। इन ऋचाओं के अन्तर्गत १५३८२६ (एक लाख, तिरेपन सहस्र, आठ सौ छब्बीस) पद हैं और ३९७२६५ (तीन लाख, सत्तानवें सहस्र दो सौ पैंसठ) अक्षर अथवा वर्ण हैं।

	मण्डल	अनुवाक	सूक्त	ऋचाएँ
	१	२४	१९१	२००६
	२	४	४३	४२९
	३	५	६२	६१७
	४	५	५८	५८९
	५	६	८७	७२७
	६	६	७५	७६५
	७	६	१०४	८४१
	८	१०	१०३(९२+११)	१६३६+८०
	९	७	११४	११०८
	१०	१२	१९१	१७५४
कुल	१०	८५	१०२८	१०४७२+८० =१०५५२

दूसरे क्रम के अनुसार ऋग्वेद में आठ अष्टक हैं और चौंसठ अध्याय हैं। परन्तु यहाँ स्मरण रखना चाहिये कि इस क्रम के अनुसार भी सूक्तों और ऋचाओं की संख्या वही है, उसमें किसी प्रकार का अन्तर नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अष्टक	सूक्त	वर्ग	ऋचाएँ
१	१२१	२६५	१५७०
२	११६	२२१	११४७
३	१२२	२२५	१२०६
४	१४०	२५०	१२८६
५	१२६	२३८	१२६३
६	१२४	३१३	१२५०
७	११६	२४८	१२६३
८	१४६	२४६	१२८१
८	१०१७	२००६	१०४७२
बाल खिल्य सूक्त	११	१८	८०
	१०२८	१०२४	१०५५२

(२) यजुर्वेद

यजुर्वेद दो रूपों में है—शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद को वाजसनेयी संहिता और कृष्ण यजुर्वेद को तैत्तिरीय संहिता भी कहा जाता है। अधिकांश वैदिक विद्वान् शुक्ल यजुर्वेद अथवा वाजसनेयी संहिता की वेदचतुष्टय में गणना करते हैं, क्योंकि कृष्ण यजुर्वेद अथवा तैत्तिरीय संहि में कुछ ब्राह्मण भाग भी सम्मिलित है। वाजसनेयी संहिता में चालीस अध्य हैं जिनमें १६७५ (एक सहस्र नौ सौ पचहत्तर) ऋचाएं और कण्डिकाएं हैं यजुर्वेद की लगभग तीस प्रतिशत ऋचाएँ ऋग्वेद के अन्तर्गत हैं। यजुर्वेद चालीसवाँ अध्याय ही ईशावास्योपनिषद् नाम से प्रसिद्ध है जिसका दार्शनि और आध्यात्मिक जगत् में सम्मानपूर्वक उल्लेख किया जाता है।

(३) सामवेद

सामवेद में १८७५ (अठारह सौ पचहत्तर) ऋचाएँ हैं जो पूर्वार्चिक उत्तरार्चिक नामक दो भागों में विभक्त हैं। दोनों आर्चिकों के मध्य में म नाम्नी नामक आर्चिक हैं जिसमें केवल दस ऋचाएं हैं। पूर्वार्चिक में च

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काण्ड हैं—आग्नेय काण्ड, ऐन्द्र काण्ड, पावमान काण्ड और आरण्यक काण्ड। उत्तरार्चिक में इक्कीस अध्याय हैं। सामवेद संहिता की १०४ ऋचाओं को छोड़कर (जिनमें से पांच की आवृत्ति पाई जाती है) शेष सभी ऋग्वेद में पाई जाती हैं। यही देखकर अनेक यूरोपीय विद्वानों ने यह कल्पना की है कि सामवेद स्वतन्त्र संहिता नहीं है और आरम्भ में तीन ही वैदिक संहिताएँ थीं। परन्तु उनकी यह धारणा ठीक नहीं है, केवल कल्पना की है क्योंकि स्वयं ऋग्वेद में चारों संहिताओं का नामोल्लेख है और **"अंगिरसां सामभिः स्तूयमानाः"** (ऋ० १/१०७/२), **"उभौ वाचौ वदति सामगा"**, **"उद्गातेव शकुने साम गायसि"** (ऋ० २/४३/१०), **"यो जागार तमु सामानि यन्ति"** (ऋ० ५/४४/१४), **"इन्द्राय साम गायत"** (ऋ० ८/९८/१), **"साम कृण्वन् सामन्यो विपश्चिद् क्रन्दन्तेति"** (ऋ० ९/९६/२२), **"परवतो न साम तद् यत्रारणन्ति गीतयः"** (ऋ० ६/१०१/२), **"अंगिरसो न सामभिः"** (ऋ० १०/७८/५), **"तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे"** (ऋ० १०/९०/९), **"ये परः साम्नो विदुः"** (ऋ० २/२३/१६) आदि अनेक ऋचाओं में सामवेद का उल्लेख है। अथर्ववेद में भी **"ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह"** (अथर्व० १७/७/२८) में भी चारों संहिताओं का उल्लेख किया गया है। ब्राह्मणों और उपनिषदों में भी चारों संहिताओं का उल्लेख है। **"वेदेषु सामवेदोऽस्मि"** (गीता १०/२२) कह कर श्रीमद्भगवद्गीता में तो अन्य वेदों की अपेक्षा सामवेद के प्रति अधिक सम्मान व्यक्त किया गया है।

(४) अथर्ववेद

अथर्ववेद में बीस काण्ड हैं जिनमें सात सौ पचास सूक्त और ५९७७ (पाँच सहस्र नौ सौ सतत्तर) मन्त्र हैं। अथर्ववेद में भी लगभग सोलह प्रतिशत ऋचाएँ ऋग्वेद की हैं। ६३ मन्त्र ऐसे हैं जो चारों संहिताओं में उपलब्ध हैं। भिन्न संहिताओं में जहाँ मन्त्रों की आवृत्ति पाई जाती है वहाँ प्रसंगानुसार अर्थ बदल जाता है।

चारों संहिताओं के मंत्रों अथवा ऋचाओं की कुल संख्या २०३४९ (बीस सहस्र तीन सौ उनचास) है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि चारों वेदों का सम्मिलित आकार वाल्मीकि रामायण के तीन चौथाई भाग से कुछ अधिक है। यदि गणना में आवृत्त ऋचाओं की पृथक् गिनती न की जाए तो कुल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संख्या लगभग सोलह सहस्र बनती है जो वाल्मीकि रामायण के दो-तिहा भाग के बराबर है। वाल्मीकीय रामायण में चौबीस सहस्र श्लोक हैं।

वेदों का विषय क्या है ? इस सम्बन्ध में अधिक मतभेद नहीं है। प्रायः सभी भारतीय प्राचीन एवं अर्वाचीन विद्वानों के अनुसार वेद धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला है अर्थात् ये चारों ही वेद के विषय है। महाराज मनु के अनुसार वेद समस्त धर्मों का मूल हैं। "धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः" कह कर उन्होंने सभी धार्मिक प्रश्नों और समस्याओं के लिये वेद को अन्तिम प्रमाण स्वीकार किया है जिस पर टीका-टिप्पणी और ननु नच नहीं किया जा सकता। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद के विषयों पर विचार करते हुए उन्हें चार भागों में विभक्त किया है—(१) विज्ञान, (२) कर्म, (३) उपासना और (४) ज्ञान। विज्ञान का अर्थ है समस्त विश्व का विज्ञान अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर से लेकर कीट-पतंग और तृणादि तक सभी पदार्थों का ज्ञान। भारतीय दर्शनशास्त्र और आध्यात्मिक चिन्तन इसी से सम्बन्धित हैं। सबसे प्रमुख और सबसे आवश्यक तत्त्व जिसे समझना चाहिए और जिसकी अनुभूति प्राप्त करनी चाहिये, वह परमात्मा है जिसे अनेक नामों से अभिहित किया जाता है। वस्तुतः सभी नाम उसी के हैं, परन्तु जिस नाम से उसे सामान्यतया अभिहित किया जाता है वह है 'ओ३म्'। योगदर्शन में लिखा है कि ओ३म् ब्रह्म का वाचक है।[1] तैत्तिरीय आरण्यक में कहा गया है कि ओ३म् ही ब्रह्म है।[2] यजुर्वेद में लिखा है कि ओ३म् सर्वव्यापक ब्रह्म का नाम है।[3] वही प्रजापति है, सब प्राणियों का स्वामी है, सारे विश्व में व्यापक है और सब प्राणियों का रक्षक है।[4] माण्डूक्योपनिषद् में कहा गया है कि ओ३म् ही अक्षर ब्रह्म है।[5] वह अविनाशी और सर्वव्यापक है। अग्नि, इन्द्र, वरुण, य-

---

१. "तस्य वाचकः प्रणवः।" योगदर्शन १/१/२७

२. "ओमिति ब्रह्म।" तैत्तिरीयारण्यक ७/८

३. "ओ३म् खं ब्रह्म।" यजुर्वेद ४०/१७

४. "यस्मान्न जातः परोऽन्योऽस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी॥"
यजुर्वेद ८/३६

५. "ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपख्यानम्।" माण्डूक्योपनिषद्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि भी सब उसी के गुणवाचक नाम हैं। वेदों में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन है और वैदिक ऋषि एकेश्वरवाद के ही समर्थक थे। यूरोपीय विद्वानों ने वैदिक ऋषियों को प्राचीन यूनानियों के समान बहुदेववादी एवं प्रकृतिदेववादी सिद्ध करने का यत्न किया है। परन्तु उनका वैदिक ऋषियों पर बहुदेवत्ववाद (Polytheism) का आरोप अनुचित एवं प्रमाणरहित है। उनकी भूल का वास्तविक कारण यह है कि उन्होंने इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि शब्दों को पृथक् देवतावाचक मानकर उन्हें पृथक्-पृथक् देवता स्वीकार कर लिया है। वे इस बात को भूल गये हैं कि वैदिक शब्दों के यौगिक अर्थ किये जाते हैं और ऐसा करना भारतीय भाष्यकारों में अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित एवं मान्य होता आ रहा है। ब्राह्मण ग्रन्थों और निरुक्त में इस पद्धति को अपनाया गया है और प्रामाणिक माना गया है। ऐसी अवस्था में वैदिक शब्दों के अनेक अर्थ किये जाते हैं और देवतावाचक शब्दों की भी यही स्थिति है। उदाहरणार्थ ऐश्वर्यार्थक √इदि धातु से व्युत्पन्न इन्द्र शब्द के तीन अर्थ हैं—(१) सूर्य, (२) अग्नि और (३) परमात्मा। अग्नि शब्द √अञ्चु धातु से व्युत्पन्न होता है जिसके अर्थ हैं (१) जानना, (२) विद्यमान होना और (३) पूजा करना। तदनुसार अग्नि शब्द के आग और सर्वव्यापक ईश्वर अर्थ हैं। इसी प्रकार √वृङ् अथवा √वर् धातु से व्युत्पन्न होने वाले वरुण शब्द के आकाश, जल और ईश्वर अर्थ किये जाते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने 'सत्यार्थ-प्रकाश' में इन्द्र, अग्नि, वरुण, विष्णु आदि अनेक शब्दों के यौगिक अर्थ दिये हैं और उन्हें ईश्वरवाचक शब्द स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त वेदमन्त्रों में परमात्मा के लिए तीनों लिंगों और तीनों वचनों का प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ एकेश्वरता-सूचक कुछ मन्त्र नीचे दिये जाते हैं—

(१)

> इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
> एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥[1]

[अर्थ—उसी (ब्रह्म) को ऋषि इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि कहते हैं। वही गरुत्मान् सुपर्ण है। एक होने पर भी ऋषि उसे अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि अनेक नामों से पुकारते हैं।]

1. ऋग्वेद १०/१६४/६४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) **सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।**[1]

[विद्वान् ब्राह्मण उस एक परमात्मा को अनेक रूपों में प्रतिपादित करते हैं ।]

(३) **तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वु वायुस्तद्वु चन्द्रमाः ।**
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ।।[2]

[वह ही अग्नि है, वह ही आदित्य है, वह ही वायु है, वह ही चन्द्र है; वह ब्रह्म ही शुक्र, आपः (जल) और प्रजापति है ।]

(४) **अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।**
विश्वे देवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ।

[अदिति ही द्युलोक है, अदिति ही अन्तरिक्ष है, अदिति ही माता-पिता और पुत्र है, अदिति ही समस्त देवता हैं; अदिति ही पंच जन हैं, अदिति उत्पाद्य है और अदिति ही उत्पादक है ।]

इसी प्रकार के अन्य मन्त्र भी अवस्था में वैदिक संहिताओं में देखे सकते हैं। वैदिक ऋषियों को अनेकेश्वरवादी अथवा बहुदेववादी अथवा बहुदेववादी कहना भारी भूल है ।

आधुनिक विज्ञान के मूल तत्त्व वेदों में उपलब्ध हैं । यहाँ तक कि सृ की उत्पत्ति से पूर्व क्या स्थिति थी, इसका प्रतिपादन भी वेद में किया गया जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार सर्वथा ठीक है । आधुनिक विज्ञान सृष्टि विकास एवं विस्तार विकासवाद के आधार पर स्वीकार करता है और सृ का आरम्भ परमाणुओं से मानता है । वह स्वीकार करता है कि सर्वप्र सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार था जिसमें अनन्त परमाणु विश्रृंखलित रू फैले हुए थे । किसी दिव्य अथवा प्राकृतिक प्रेरणा से परमाणु-जगत् में उत्पन्न हुई और परमाणुओं के मिलन से महान् अग्निपिण्ड के रूप में सूर्य उत्पत्ति हुई । उसकी तीव्र गति के कारण उससे टूटकर अनेक छोटे-बड़े अ गोलक दूर-दूर तक छिटक गये और अपनी धुरी पर घूमते हुए सूर्य के घूमने लगे । इस प्रकार सौर जगत् की सृष्टि हुई । इस प्रकार के सौर

---

१. ऋग्वेद १०/११४/५
२. यजुर्वेद ३२/१
३. ऋग्वेद १/८९/१०; यजुर्वेद २५/२३; अथर्ववेद ७/६/१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क हैं, क्योंकि परमाणुओं के मिलन से अनेक सूर्य महान् अग्निपिण्डों के रूप उत्पन्न हुए होंगे। प्रत्येक सौर जगत् में अपने-अपने सूर्य के गिर्द घूमने वाले ड ही ग्रह और नक्षत्र कहलाते हैं। चन्द्रमा, पृथ्वी, मंगल आदि हमारे सौर त् के ग्रह हैं। पृथ्वी की जब उत्पत्ति हुई तब वह एक दहकते हुए अग्नि-ड के रूप में थी। सैंकड़ों अथवा सहस्रों वर्षों तक निरन्तर मूसलाधार वर्षा श्चात् वह शीतल हुई। तब पहले वनस्पतियों की उत्पत्ति हुई और बाद मशः जीवजन्तुओं की। मानव की उत्पत्ति इन सबके बाद में हुई।

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ७२वें (देव सूक्त), ९०वें (पुरुष सूक्त), १२९वें सदीय सूक्त), १३०वें और १९०वें (सृष्टि सूक्त) सूक्तों में तथा "जीर्णं तमसा" (ऋग्वेद १०/८८/२) आदि मन्त्रों में इसी तथ्य का उद्घाटन ा गया है। विस्तार-भय से यहाँ उनकी विवेचना एवं व्याख्या करना ाव नहीं है। नासदीय सूक्त तथा सृष्टि सूक्तों में प्रतिपादित इन वैज्ञानिक ों को देखकर पाश्चात्य वैज्ञानिक और विद्वान् भी चकित होते हैं कि वैदिक पि आधुनिक विज्ञान के भी पूर्वद्रष्टा थे। श्रीमती ह्वीलर विल्लैक्स का ना है कि "वेद न केवल धार्मिक विचारों से ही परिपूर्ण हैं वरन् उन तथ्यों शी युक्त हैं जिन्हें विज्ञान ने सत्य सिद्ध किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि त (electricity), रेडियम, इलैक्ट्रोन, वायुयान आदि सभी से वैदिक ा परिचित थे।"[1] श्री जैकोलियट का कहना है कि "वेद ही एक ऐसी पुस्तक स के विचार आधुनिक विज्ञान के अनुकूल हैं। वेद ही घोषणा करता है विश्व की उत्पत्ति धीरे-धीरे और क्रमिक रूप में हुई है।"[2] प्रोफेर हीरेन ते हैं कि 'केवल वेद ही मानवीय प्रगति और ऊर्ध्वमुखी विकास के लिए

'It is land of the great Vedas, the most remarkable works ontaining not only religious ideas for a perfect life, but lso facts which all the science has produced true. Electri-ity, Radium, Electrons,. Airships, all seem to be known to e seers who found the Vedas." (Quoted by Devi Chand .A. in his introduction to the Yajurveda).

The Hindu Revelation (Veda) is of all revelations the ly one whose ideas are in perfect harmony with modern ience, as it proclaims the slow & gradual formation of he world."

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिव्य प्रकाश-स्तम्भ के रूप में मार्ग दर्शन कर रहे हैं।"[3]

वेदों का दूसरा महत्त्वपूर्ण विषय है 'कर्म'। कर्म से शारीरिक मानसिक, सकाम और निष्काम सभी प्रकार का कर्म लिया जाता है औ में सभी के सम्बन्ध में उपदेश दिया गया है मानवीय जीवन के पहलुओं पर और सभी आवश्यकताओं पर वेद मन्त्रों में उपदेश दिया है। और जीवन को सर्वथा पूर्ण बनाने का सन्देश दिया गया है। ब्रह्म शिक्षा-प्राप्ति, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, गृहस्थ धर्म, समाज व्यवस्था, राजने शासन व्यवस्था, परोपकार, सहयोगिता आदि सभी विषयों का वे प्रतिपादन है। इनके अतिरिक्त इन सभी प्रकार के कार्यों में शारीरिक मानसिक एवं ज्ञान तथा क्रिया के सत्समन्वय की प्रवृत्ति पर जोर दिया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों की उपलब्धि के लिए वेद आदेश है। मोक्ष मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है जिसे ईश्वराराधना, ईश्वर-स्तु प्रार्थना, यज्ञ, भगवद्भक्ति, त्याग, धार्मिक कार्यों के सम्पादन, आदि के प्राप्त किया जा सकता है। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए धन का उपा अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु वह धर्म के अनुकूल होना चाहिये, छल-कप अथवा दूसरों का अधिकार छीन कर या दूसरों के शोषण द्वारा नहीं चाहिये।" मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" (यजुर्वेद ४०/१), "केवलाघो भव केवलादी" (ऋग्वेद १०/११७/६) आदि वचन इसी भाव की पुष्टि करते

वेद का तीसरा मुख्य विषय उपासना है। उपासना शब्द का अ ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करना। वेद विश्व के रचयिता, रक्षक और सं ब्रह्म (ईश्वर) की उपासना पर बहुत बल देते हैं। उसके सान्निध्य की उपल ही मोक्ष है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि ब्रह्म (ईश्वर, परमा एक है। वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है। इन्द्र, अग्नि, आदि उसी के ही नाम हैं। शतपथ ब्राह्मण ने कहा है कि केवल ब्रह्म उपासना करो। यजुर्वेद में कहा गया—"**तमेव विदित्वातिमृत्युमेति, पंथा विद्यतेऽयनाय**" (यजु० ३१/१८) अर्थात् उसी को जान कर

3. "The Vedas stand alone in their splendour, standin beacon of Divine light for the onward march of humani (Historical Researches Vol. II)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यु के भय को पार सकता है, मृत्यु को पार करने का और कोई मार्ग नहीं ।" ऋग्वेद के दसवें मंडल के एक सौ इक्कीसवें सूक्त में भी कहा है कि हमें ल उसी हिरण्यगर्भ, सर्व सृष्टि के उत्पादक और धारक, समस्त प्राणियों उपास्य, अमरत्व और मृत्यु के स्वामी, विश्वनियन्ता प्रजापति की उपासना नी चाहिए ।

वेद का चौथा विषय 'ज्ञान' है । 'वेद' शब्द का अर्थ ही है—'ज्ञान' । ज्ञानार्थक विद धातु से व्युत्पन्न होता है । इस प्रकार वेद भौतिक और ध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान के भण्डार हैं । स्वामी दयानन्द सरस्वती ो जोरदार शब्दों में कहा है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ।" तुतः वैदिक ऋषि केवल आध्यात्मिक नेता ही नहीं थे, वे अनेक ऐसे निक विचारों एवं सिद्धान्तों के भी ज्ञाता और आविष्कारक थे जिन्हें र्ती विज्ञान का तथा आज के विज्ञान का भी मूल आधार कहा जा ता है । उदाहरण रूप में जैसे अथर्वा ऋषि ने अग्नि का आविष्कार ा । महर्षि विश्वामित्र ने अग्नि के उत्पादन के लिए रगड़ने की पद्धति आविष्कृत किया । महर्षि मेधातिथि ने अरब-खरब तक की संख्या का संसार को दिया । महर्षि दीर्घतमाः ने वैदिक संवत् का सूत्रपात किया । षि गार्ग्य ने नक्षत्रों और ग्रहों की गणना की । इसी प्रकार अनेक अन्य षियों ने ज्योतिष, गणित, वैद्यक, शरीर-रचना विज्ञान आदि का विकास ा । सामान्यतया कहा जाता है कि उन ऋषियों ने वैदिक सूक्तों के द्वारा दिव्यता सम्पन्न दृष्टि से उन वैज्ञानिक तथ्यों एवं सिद्धान्तों आविष्कार किया ।

इन के अतिरिक्त वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति, सौरमण्डल की व्यवस्था, ज व्यवस्था, शिल्प और उद्योग, राजा और प्रजा के कर्त्तव्य, राजसभा व्यवस्था, और उसके कार्य विविध वर्णों और आश्रमों के कर्त्तव्यों, राष्ट्र-स्था, सहकारिता और संगठन आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला है ।

क धर्म के मूल सिद्धान्त

वेदों में प्रायः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आध्यात्मवाद, भौतिकवाद, ज्ञान, विज्ञान, ट प्रलय, मानव-जीवन के सभी पहलुओं, पुनर्जन्म, यज्ञ-विधान आदि विषयों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर विचार किया गया है। साधारणतया वेद-प्रतिपादित सिद्धान्त
निम्नलिखित हैं:—

१. ईश्वर एक है जिसे इन्द्र,अग्नि, वरुण, यम आदि नामों से अभिहि
जाता है। वही ब्रह्म है। ओ३म् उसका वाचक शब्द है, सर्वोत्त
है। वह ईश्वर अथवा परब्रह्म परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वशक्ति
सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार अनादि अनन्त,अनुपम, निर्विकार, अ
सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, नित्य, निर्भय और
पवित्र है। उसी की उपासना करना मानव का धर्म है।

२. ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों अनादि, अनन्त और नित्य हैं।
सत्, चित् और आनन्द स्वरूप है। जीव में सत् और चित् दे
रहते हैं और प्रकृति में केवल सत गुण रहता है। ईश्वर संसा
उत्पत्ति, स्थिति, पालन और विनाश का हेतु है। वह अखिल ब्र
में और अणु-अणु में व्याप्त है, किसी एक ही स्थान पर
आसमान पर या क्षीर सागर में ही नहीं रहता। शुद्ध भक्ति, पवित्र
मानसिक एकाग्रता, प्राणायाम और समाधि, निष्काम कर्म, योगा
यम नियमों के पालन से कहीं भी ईश्वर की अनुभूति प्राप्त की जा

३. है। जीव चैतन्य शक्ति है एवं सूक्ष्म तथा स्वतन्त्र है। वह अपने
(अच्छे वा बुरे) के अनुसार जन्म-मरण के चक्र में फंसता
आवागमन का विषय बन जाता है। ईश्वर और जीव दोनों चि
से युक्त हैं, परन्तु दोनों में अन्तर है। ईश्वर सर्वज्ञ है और जीव
है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु उसके फल सुख-दु:ख के भो
परतन्त्र है अर्थात् ईश्वर के आधीन है। ईश्वर एक है, परन्
अनन्त हैं।

४. प्रकृति जड़ और अचेतन है। उस में स्वयं कार्य करने की शक्ति न
सांख्य दर्शन के अनुसार जब उसमें पुरुष (आत्मा और परमात्म
चैतन्य गुण प्रतिभासित होता है तब उस में संसार के सृजन
सांसारिक कार्य करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है और वह
कार्य आरम्भ कर देती है।

५. सृष्टि अथवा संसार संसरणशील है। इस का प्रवाह अनादि
चला आ रहा है अर्थात् प्रलय के बाद फिर से सृष्टि और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पश्चात् प्रलय होती चली आई है। सृष्टि की उत्पत्ति परमाणुओं से हुई है। प्रलयावस्था में परमाणु विशृंखलित एवं निश्चेष्टावस्था में रहते हैं। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त के अनुसार उस समय प्रकृति न तो नितान्त अभावावस्था में ही थी और न ही प्रकट रूप में वर्तमान थी, न अन्तरिक्षलोक था और न ही आकाश, न मृत्यु थी और न ही मृत्यु के अभावरूप में अमरता ही थी। सृष्टि से पूर्व जो कुछ भी था वह अन्धकार से आवृत्त अन्धकार रूप में था अविज्ञेय था। उस अन्धकार में अव्यक्त-प्रकृति के रूप में उपादान कारण विद्यमान था परमात्मा के ज्ञानमय तप से वह महत्तत्व के रूप में प्रादुर्भूत हुआ जिससे क्रमशः सृष्टि का विकास हुआ।

वेदों में स्वर्ग और नरक का भी उल्लेख है, परन्तु स्वर्ग और नरक जीव को अपने अच्छे अथवा बुरे कर्मों के अनुसार प्राप्त होने वाला अच्छा अथवा बुरा जन्म है। शुभ कर्मों को करने वाले स्वर्ग पा कर अच्छी एवं उत्कृष्ट योनियों में जन्म प्राप्त करते हैं और अशुभ हिंसादि कर्म करने वाले नरक को पा कर बुरी एवं योनियों में तथा पशुपक्षियों और कीट पतंगों की योनियों में जन्म प्राप्त करते हैं।

वेदों में यज्ञों पर बहुत बल दिया गया है। यज्ञ वस्तुतः वैदिक-धर्म का मेरुदण्ड है। मनुस्मृति में महाराज मनु का कहना है कि वेदों का आविर्भाव ही यज्ञ-सिद्धि के लिए हुआ है।[1] बाह्य रूप से देखने पर यज्ञ का अर्थ है किसी देवता विशेष के लिए अथवा ईश्वर की नामान्तर भूत दिव्य शक्ति के लिए आज्य, हवि आदि द्रव्यों का अग्नि में आहुत करना अर्थात् आहुति के रूप में डालना, परन्तु वस्तुतः यज्ञ विलक्षण रहस्य से संवलित है। और यह रहस्य तब और भी अधिक गम्भीर हो जाता है जब वेद स्वयं कहता है कि "देवताओं ने यज्ञ से यज्ञ का यजन किया",[2] "उस सर्वहुत यज्ञ से ही विविध प्रकार के अन्नों; वनस्पतियों; ग्राम्य तथा वन्य पशु-पक्षियों; ऋक्, यजुः, साम और अथर्व नामक वेद संहिताओं; अश्वों,

---

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम् ॥ (मनुस्मृति १/२३)
"यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः" ऋग्वेद १०/९०/१६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गौग्रों, भेड़ों, बकरियों; साध्य-साधक ऋषियों; ब्राह्मण, क्षत्रिय, और शूद्र नामक वर्णों; सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, अन्तरिक्ष, द्यु भूमि, दिशाओं, ऋतुओं, विविध लोकों आदि की सृष्टि हुई",[3] "य यज्ञ से साधना करनी चाहिये",[4] "विष्णु ही यज्ञ है",[5] "विराट् पु यज्ञ है"[6] आदि। यज्ञ का रहस्य वेद के उन वैज्ञानिक तत्त्वों में है जो आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों से भी अधिक उदात्त हैं। की उपेक्षा करने के कारण आज ये तत्त्व हमारे लिए विस्मृत प्रायः दुर्बोध हो गये हैं। यज्ञ शब्द की व्युत्पत्ति यज् धातु से होती है। पाणिनि के अनुसार यज् धातु का अर्थ है—देवपूजा, संगतिकरण दान। ये तीनों अर्थ परब्रह्म विराट् पुरुष, प्रकृति, मानव और मान आचार-व्यवहार में लागू होते हैं। यज्ञ साधारणतया दो प्रकार का है—(१) एक वह यज्ञ जो यज्ञमय परमात्मा के द्वारा और प्रकृ द्वारा निरन्तर किया जा रहा है और जिसके द्वारा इस विश्व का सृ पालन और संहार होता है। (२) दूसरा यज्ञ अग्निहोत्र के रूप में f जाता है और वह लोक व्यवहार तथा मानव-कल्याण के लिए आव है, क्योंकि उसमें अपनी प्रियतम वस्तु का देवता (इन्द्र, अग्नि, व आदि के रूप में ईश्वर) के उद्देश्य से अथवा समाज-कल्याण के उद्देश समर्पण किया जाता है। यह दूसरे प्रकार का यज्ञ पहले प्रकार के पर आश्रित सा रहता है। इससे कर्मशुद्धि, देहशुद्धि, इन्द्रिय अहंकार शुद्धि और चित्तशुद्धि होती है। यज्ञ का फल स्वार्थ नहीं, होता है। यज्ञ भावना से किये गये कर्म से कर्मों का नया आवरण बनता, प्रत्युत पहले का आवरण क्षीण होता है। इससे जीव अ कल्याण के मार्ग में अग्रसर होता है, ब्रह्म और प्रकृति के रहस्य समझता है और अन्त में महाज्ञान को प्राप्त करता है। यज्ञ विज्ञान एवं यज्ञ से उत्पन्न फल की यथार्थता को सम्यक् रूप से समझने के और त्याग और ग्रहण के सिद्धान्त का समझना आवश्यक हैं, क्योंकि

३. ऋग्वेद १०/९०/६—१३
४. "यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्" यजुर्वेद १८/२९
५. शतपथ ब्राह्मण
६. कौशीतकी ब्राह्मण १७/७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और ग्रहण दोनों कर्म के अंग हैं और सृष्टि-विज्ञान के अंग हैं। यज्ञ में मनुष्य अपनी श्रेष्ठ वस्तुओं को जिन पर उसका स्वत्व रहता है उच्चतर अथवा दिव्य स्वभाव को अर्पित कर देता है,क्योंकि यज्ञ का लक्ष्य है उच्च अथवा दिव्य सत्ता को प्राप्त करना एवं निम्न या मानवीय सत्ता को उस दिव्य सत्ता से मुक्त कर देना तथा उसके नियम और सत्य के अधीन कर देना।

वेद विश्वबन्धुत्व की भावना में विश्वास रखते हैं और मानवमात्र के लिए कल्याण की भावना का उपदेश देते हैं। वे समस्त विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनने और बनाने का आदेश देते हैं। संकीर्ण स्वार्थ की एकांगिता का वेद समर्थन नहीं करते। वे उदारता और विश्वबन्धुता की प्रेरणा देते हैं। ऋग्वेद और अथर्ववेद के सामनस्य सूक्त सौहार्द, समत्व, सह-अस्तित्व और सह-कारिता के सद्भावों के अत्युत्कृष्ट उदाहरण हैं। वेदों में अकेला खाने वाले को पाप खाने वाला बताया गया है।[1] वैदिक प्रार्थनाएं विश्वबन्धुत्व, विश्वशान्ति, मानवमात्र में परस्पर सौहदार्द, मैत्री और साहाय्य की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। उदाहरणार्थ जैसे—

(क) मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥ (यजुर्वेद ३६/१८)

[मैं मित्र की दृष्टि से सब प्राणियों को देखूं। हम सब लोग मित्र की दृष्टि से परस्पर एक-दूसरे को देखें।]

(ख) यांश्च पश्यामि यांश्च न।
तेषु मा सुमतिं कृधि॥ (अथर्ववेद १७/१/७)

[जिनको मैं देखता हूं और जिनको नहीं देखता हूं अर्थात् जो आँखों के सामने हैं और जो आँखों से ओझल हैं उन सभी के प्रति मुझे सुमति-सद्भावना से युक्त करो।]

(ग) संगच्छध्वं संवद्ध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

(ऋग्वेद १०/१९१/२)

---

1. **"केवलाघो भवति केवलादी"** ऋग्वेद १०/११७/६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे मनुष्यो ! तुम सब परस्पर मिलकर चलो, परस्पर मिलकर वा करो, आप सबके मन सहमत अर्थात् समान ज्ञान वाले हों जैसे पूर्वदेव सूर्य, चन्द्र आदि देव सनातन काल से परस्पर अविरोध भाव से और अपने कार्यों को करते चले आ रहे हैं वैसे ही आप भी एकमन होकर कर्त्तव्य पालन करो।]

(घ) समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेष
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेव वो हविषा जुहोमि ।

(ऋग्वेद १०/१९१/

[आप सबके विचार समान हों, समिति अर्थात् कार्यक्षेत्र में कार्यप्र समान हो, आप सबके मन और चित्त एक समान हों। आप सबके लि समान मन्त्र (उद्देश्य) को अभिमन्त्रित करता हूँ जिससे आप सबका कल हो। मैं समान हवि से अर्थात् यज्ञाहुति की समान भावना से आहुत स्वीकार करता हूँ।]

(ङ) समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

(ऋग्वेद १०/१९१/४; अथर्ववेद ६/६४

[आप सबकी आकृति (चित्तवृत्ति) एक समान हो, आप सबके हृदय मन एक समान हों जिससे आप सब में सह-अस्तित्व की भावना उ हों। तभी विश्व के प्राणी परस्पर सौहार्द से निवास कर सकते हैं।]

(च) सहृदयं सांमनस्यमविद्वषं कृणोमि वः ।
अन्योअन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥

(अथर्ववेद ३/३०

[हे मनुष्यो ! मैं तुम सबको समान हृदय वाला, समान मन वाल आदि की भावना से रहित करता हूँ। हनन के अयोग्य गौ जैसे अपने हुए बछड़े से प्रेम करती है वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक व्य करो।]

वेदों की विशेषताएँ

वैदिक साहित्य के भारतीय विद्वानों के अनुसार वेद अपनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

षताएं रखता है जो उसे समस्त वाङ्मय में सर्वोपरि स्थान दिलाती हैं।

वेद अपौरुषेय हैं। ऋषि मन्त्रों के केवल द्रष्टा अथवा व्याख्याता थे। वेद नित्य हैं, रहस्यमय हैं और अनन्त ज्ञान का भण्डार हैं। वेद देश और काल से अतीत हैं। वे किसी एक मानव समाज के ग्रन्थ नहीं हैं। वे विश्व के समस्त मानव समाज के कल्याणदायक ग्रन्थरत्न हैं। वेद लोक व्यवहार के उपदेष्टा हैं; अध्यात्म ज्ञान के शिक्षक हैं; परमज्योतिर्मय प्रभु का समस्त प्राणियों के लिए मधुर सन्देश हैं। वेद ज्ञान, कर्म और उपासना; यज्ञ, योग और साधना; धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष; ग्रहण और त्याग; प्रेम और श्रेय, भौतिक, दैविक और आध्यात्मिक सभी विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

इन सब विशेषताओं के साथ-साथ वेदों की एक और बड़ी विशेषता है वह यह कि वैदिक संहिताओं का जिस रूप में आविर्भाव हुआ वे उसी रूप में आज भी उपलब्ध हैं। उनमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं संसार के अन्य किसी भी ग्रन्थ के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही जा । भारतीय ऋषियों, मुनियों और ब्राह्मणों की संसार को यह बहुत न है और यह उनके महान् तप और त्याग की पराकाष्ठा है कि उन्होंने क जीवन अपना कर भी, व्रत और उपवास करके भी, निर्धन और र्ण जीवन बिता कर भी वेद की पूर्णतया रक्षा की है और उसके एक को भी स्खलित, च्युत तथा परिवर्तित नहीं होने दिया। वेद पाठियों के से आज भी वेदमन्त्रों का सस्वर उच्चारण उसी प्रकार विशुद्ध रूप में जा सकता है जैसा हजारों-लाखों वर्ष पूर्व प्राचीन वैदिक युग में किया था। इसके लिए ऋषियों ने अष्ट विकृतियों[1] की व्यवस्था की है। इन तियों के अनुसार वेदमन्त्रों का प्रत्येक पद क्रमोच्चारण तथा विलोम रण में अनेक बार आता है, जिससे उसके रूपज्ञान में किसी प्रकार की वना हो ही नहीं सकती।

---

[1] जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

१. वादक सत्संग पद्धति (हिन्दी व अंग्रेजी)
हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ, प्रत्येक मंत्र के प्रत्येक शब्द की सहित व्याख्या:अंग्रेजी और हिन्दी में मूल्य२रु० । सजिल्द का मूल्

२. वैदिक सत्संग पद्धति (हिन्दी) नया संस्करण
(केवल हिन्दी में) इसमें प्रत्येक मंत्र के साथ उसका अर्थ दिया २८ पौंड बढ़िया कागज, तिरंगा बढ़िया आवरण, महर्षि का चित्र। २८ पौंड कागज, चुने हुए भजन। ८४ पृष्ठ। मूल्य ६ ५०) सैंकड़ा।

३. **Ten Commandments of the Arya Samaj** स्व० चमूपति एम० ए० लिखित आर्य समाज के दस नियमों की पूर्ण प्रम व्याख्या, जिसका मूल्य पहले १ : ५० था अब केवल एक रु ७)५० की १० प्रतियाँ मिल रही हैं। पुस्तक में महर्षि का चा चित्र अपूर्व है।

४. **Teachings of Swami Dayanand**

५. **Vedic Way of life** —ला० दीवान चन्द कृत—

६. **Layers of life** —ला० दीवान चन्द कृत—

७. **Message of the Arya Samaj to the Univers**
—भारतेन्द्र नाथ लिखित ३० पैसे। २५ उ

८. **Vedic Sandhya & Prayer** संध्या और प्रार्थना दोनों व अंग्रेजी में व्याख्या। ३० पैसे/२५

९. वैदिक गीता (भाष्य)
महान् विद्वान् स्व० आत्मानन्द जी का यह गीता भाष्य प्रचार से अनुपम है। कर्म और प्रेरणा के अद्भुत संगम इस भाष्य की विशेषता है। योगेश्वर कृष्ण का तिरंगा चित्र और उनका देखकर आप मुग्ध हो जायेंगे।

१०. **योगेश्वर कृष्ण**—भगवान कृष्ण का यह जीवन चरित्र लाखों तक पहुँचाना चाहिये। ब्र. जगदीश विद्यार्थी एम.ए. लिखित मूल्य ३०)सैंकड़ा।

११. **क्रान्तिकारी दयानन्द**—युग प्रवंतक दयानन्द के क्राँतिकारी सभी को परिचित कराने हेतु पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। प्रोफेस एम० एस० सी० लिखित। मूल्य ७५ पैसे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२. यज्ञ प्रसाद —महात्मा आनन्द स्वामी कृत मूल्य ४० पैसे । ३०) सैकड़ा आप यज्ञ करते होंगे तो यज्ञ के बाद प्रसाद भी बाँटते ही होंगे। यह प्रेरक महात्मा जी का रचना प्रसाद है। इसे मंगाइये और यज्ञ भावना फैलाने हेतु वितरण कीजिए।

१३. गीत मंजरी...८० पैसे
ईश्वर भक्ति के गीत और प्रभु से प्रार्थना करते हुए यदि आप सचमुच अपने आप को भुलाना चाहते हैं तो गीत मंजरी का सहारा लीजिए। पुस्तक अपने ढंग की अनूठी है।

१४. ज्ञान प्रकाश —हरिशरण सिद्धाँतालंकार मूल्य १)५० पैसे
—दीनानाथ सिद्धाँतालंकार
है आर्य समाज के २ विद्वानों की लेखनी से सत्यार्थ प्रकाश का सार जिस आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है वह प्रचार के लिए अनुपम है। सत्यार्थ प्रकाश के गूढ़ रहस्यों तक पहुंचने के लिए ज्ञान प्रकाश पढ़िए, और प्रसारित कीजिए—१०)की १० प्रति और ७५)सैकड़ा। शीघ्र मंगाइए, स्टाक बहुत थोड़ा शेष है।

. वेद ज्योति—४०० मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह—मूल्य ३)।

प्रार्थना मंत्र व्याख्या—पं हरिशरण जी सिद्धांतालंकार लिखित प्रार्थना मंत्रों की अनुपम व्याख्या। मूल्य ४० पैसे

भारत की अवनति के ७ कारण—ब्र० जगदीश एम० ए० की लोह लेखनी द्वारा लिखित पृष्ठ ६८। मूल्य४० पैसे। ३५)। सैकड़ा २५०)हजार

Light of Truth...७५ पैसे।

...दिक अध्यात्म ज्योति—४०८ मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह मूल्य २)

...। जीवन ... ... मूल्य २)

...त दोहावली ... ... मूल्य ८० पैसे

यह सम्पूर्ण साहित्य भारी संख्या में मंगा कर
अपने क्षेत्र पर वेद पताका लहराइए।

जन ज्ञान प्रकाशन

९७, हरध्यान सिंह रोड, (निकट ३१ नाई वाला)
करौल बाग नई दिल्ली-५

...ने आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर कुल व्यय का २०
प्रतिशत साहित्य वितरण पर लगाइए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिशु—संसार : नारी जगत्

तीन बातें

१. इन तीनों से प्यार करो :—
ईमानदारी, पवित्रता, सच्चाई।

२. इन तीनों को उत्पन्न करो :—
प्रसन्नता, सहानुभूति, सन्तोष।

३. इन तीनों की प्रशंसा करो :—
बुद्धिमत्ता, संगीत, चरित्र।

४. इन तीनों का मूल्य समझो :—
समय, स्वास्थ्य, धन।

५. इन तीनों पर नियन्त्रण रखो:—
वाणी, कर्म, स्वभाव।

६. इन तीनों का आदर करो :—
वृद्धावस्था, धर्म, कानून।

७. इन तीनों से बचो :—
आलस्य, झूठ, अभिमान।

चार का महत्व

१. चार की सेवा करो :—
सदाचारी सन्त की, सदाचारी जन की, सदाचारी मन की, सदाचारी मत की।

२. चार का मान करो :—
निज स्वास्थ्य का, निज कर्त्तव्य का, मानव-समाज का, स्त्री-समाज का।

३. चार बातें याद रखो :—
ब्रह्मचर्य का पालन, सन्त का भाषण, स्वधर्म का पालन, परमात्मा का स्मरण।

४. चार स्वर्ग के मार्ग :—
दीनों पर दया करो, मर्यादा क[illegible] पालन करो, मृत्यु को याद रखो[illegible] और सत्य बोलो।

पंचरत्न

१. पाँच का पालन करो :—
ब्रह्मचर्य, सत्य, ब्रह्म, अहिंसा, कर्त्तव्य।

२. पाँच की सेवा करो :—
माता, पिता, गुरु, देश, प्राणी[illegible]

३. पाँच से दूर रहो :—
जुआरी, शराबी, घूसखो[illegible] पागल, स्वार्थी।

४. पाँच न बनो :—
कृतघ्न, आत्म-प्रशंसी, [illegible] कामचोर, कटुभाषी।

५. पाँच बनो :—
संयमी, स्वस्थ, देशभक्त[illegible] कर्मठ।

६. पाँच पर न हँसो :—
भिखारी, पंगु, अन्धा, क[illegible] आँसू।

७. पाँच न करो :—
ईर्ष्या, लोभ, घृणा, [illegible] चोरी।

८. पाँच से डरो :—
छली, आग, कलंक, स[illegible] दुर्जन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दे दे माँ, बन्दूक दुनाली

श्री रामनिहोर मिश्र

बेटा : सुनता हूँ मैं नित-प्रति सबसे,
दुश्मन की करतूतें काली।
जब कि देश पर संकट आया,
कैसे बैठ रहूँ मैं ठाली।
दे दे माँ, बंदूक दुनाली ।।

माँ : धन्य लाल मैं तुझपर वारी,
तू कल का सच्चा अधिकारी।
पर तुझ-से नन्हें सेनानी,
चल न सकेगी अभी दुनाली।
कैसे दूँ बन्दूक दुनाली।

बेटा : माँ, अभिमन्यु भी छोटा था,
किन्तु गजब का वह योद्धा था।
गुरु द्रोण के व्यूह की रचना,
उसने छिन्न-भिन्न कर डाली।
दे दे माँ, बंदूक दुनाली ।।

माँ : मत बन जा बेटे नादान,
पढ़-लिखकर हो जा विद्वान।
युद्ध नाश का खेल भयंकर,
और अमर है तेरी लाली !
कैसे दूँ बंदूक दुनाली ।।

बेटा : माँ देख सीमा के पास,
टेर रहा अपना इतिहास।
खून माँगती है आजादी,
बात न जाए उसकी खाली।
दे दे माँ, बंदूक दुनाली ।।

माँ : ओ मेरे नयनों के तारे !
भारत माँ के राज दुलारे।
दुश्मन धोकेबाज बहुत हैं,
चलते रहते चाल कुचाली
कैसे दूँ बंदूक दुनाली ?

बेटा : तेरा दूध रहेगा उज्जवल,
चल न सकेगा दुश्मन का छल,
नहीं दांव पर लग पाएगी,
अब मेरे घर की खुशहाली।
दे दे माँ बन्दूक दुनाली ।।

माँ : बेटा ! तुझमें जोश अपार,
माँ से तुमको सच्चा प्यार।
ले जा यह बन्दूक दुनाली,
प्रभु करें तेरी रखवाली।
ला माँ, ये बन्दूक दुनाली ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिए

पति को चाहिए

किसी ने कहा है :

"अच्छा पति ही अच्छी पत्नी बना सकता है।"

१. पति को चाहिये कि वह अपना पूर्ण प्रणय पत्नी को सौंप दे।

२. पति को पत्नी के विषय में यह नहीं सोचना चाहिये कि नारी तो एक खिलौना है, सुन्दर सी गुड़िया है, काम वासना की तृप्ति का साधन है, या मनोरंजन का साधन हैं। किन्तु पत्नी के साथ आजीवन भागीदार का वर्ताव करना चाहिये, जो पति के जीवन के सुख-दु ख का बरावरी का भागीदार है।

३. पति को चाहिये कि वह पत्नी की शालीनता का बखान करे, जब कभी अवसर आवे।

४. पति को चाहिये कि वह पत्नी के साथ समानता का व्यवहार करे, पत्नी की आवश्यक स्वतन्त्रता की हत्या न करे और अपने प्रेम से कर्त्तव्यनिष्ठ पत्नी के हृदय को जीतने का प्रयास करता ही रहे।

५. समयानुसार पत्नी के रहन-सहन, मितव्ययिता, योग्यता और सौन्दर्य की प्रशंसा करता रहे।

६. पत्नी के स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान करता रहे।

७. समय-समय पर पत्नी के पसन्द का चीज वस्तुएँ लेते आना चाहिए, चाहे जन्म दिन हो, विवाह की वर्षगाँठ हो या होली, दिवाली, तीज-त्यौहार हों।

८. नारियों के विषाद के दिनों में उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिए।

९. पति की पाक-विद्या की प्रशंसा और घर-गृहस्थी की सुघरता की प्रशंसा जब तब करते ही रहना चाहिये।

१०. पत्नी के मन वहलाव के साधनों को मुहैय्या करना चाहिए। पत्नी के धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक विचारों को उत्तेजन देना न भूलना चाहिए।

११. पत्नी की छोटी सी सेवा के लिए भी उसका हार्दिक आभार मानना चाहिए।

'जहाँ प्रीत है पत्नी से प्रिय,
पत्नी प्रीता है पति से।
उसी गेह में सकल सुभग सुख,
दोनों प्रमुदित सदा रहें जब प्रमुदित से।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्नी को चाहिए

१. पत्नी को चाहिए कि वह अपने घर को सजा कर आकर्षक बनाकर रखें। पति की इच्छा के अनुसार व्यवहार करे।

२. पत्नी को चाहिये कि यह सम्पूर्ण विवाहित जीवन में कभी फूहड़ों जैसी मैली कुचैली, फटे पुराने कपड़ों में न रहे। सर्वदा स्वच्छ प्रसन्न मुख और पति को आकृष्ट करती रहे।

३. पत्नी को चाहिये कि अपने पति के मन पसन्द पहने, ओढ़े, बिछाये, खाये पिये।

४. पत्नी को सामान्य बातों में कभी पति से उलझना न चाहिये, किन्तु सहयोग की भावना से जीवन को सुखी बनाना चाहिये।

५. पत्नी को सदा सर्वदा प्रसन्न मुद्रा में रहना चाहिये, जब कभी पति बाहर जावे या बाहर से आवे तो उसका मधुर मुस्कान से स्वागत करना चाहिये।

६. स्त्री को बच्चों की देखभाल बराबर करनी चाहिये।

७. स्त्री को भोजन में पति की इच्छा के अनुसार परिवर्तन करते जाना चाहिये।

८. नारी को चाहिए कि वह पति को अविभक्त प्रेम प्रदान करती रहे, सर्वदा पति के साथ ईमानदारी सचाई और बलिदान की भावना से कार्य करती रहे।

१०. नारी ऐसा कोई कार्य नहीं करे जिससे पति की कीर्ति में कलंक लगे।

११. नारी को दूसरों के सामने पति की त्रुटियों नहीं कहनी चाहियें, किन्तु त्रुटियों को भी दूसरों के सामने संभालने का प्रयास करते रहना चाहिये।

१२. नारी को चाहिए कि वह पति के माता-पिता और सगे सम्बधियों से सदव्यवहार करती रहे, उनका यथोचित सम्मान किया करे।

१२. नारी को चाहिये कि वह पति के आय की सीमा में व्यय करे और आर्थिक संकटों का वीरता पूर्वक सामना करती रहे, साथ ही पति को उसकी साधन हीनता के लिए कभी अपमानित नहीं करे।

१३. नारी को चाहिए कि वह अपने पति की तुलना दूसरे पुरुषों से न करे किन्तु सहयोगी बनकर साथ दे।

१४. सुशिक्षित नारी का कर्त्तव्य है कि वह पति के पसन्द के साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विचारों को समझती रहे और पति के विचारों को उजलाया करे।

१६. नारी को चाहिए कि वह अपने परिवार के रहस्यों को स्वयं तक सीमित रखे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों के निर्दोष व्याख्याकार : ऋषि दयानन्द

योगिराज श्री अरविन्द की श्रद्धांजलि

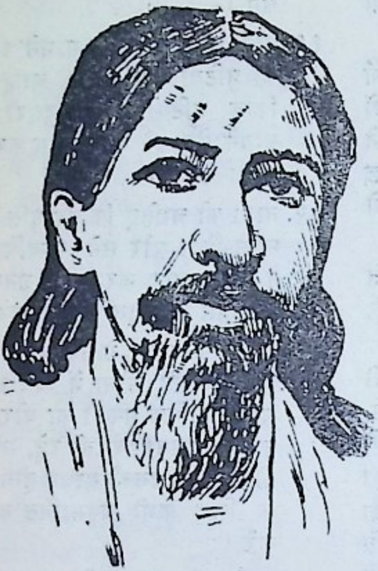

"वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का जो कि हमारी भावनाओं के अनुसार एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उसके व्यक्तित्व की व्याख्याएं की जा सकती हैं—एक मनुष्य जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म-चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन तत्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उसमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चला कर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडौल बना सकें।

वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इन बातों का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अवस्था और अज्ञान—परस्पर के अन्धकार में से सूक्ष्म और मर्मभेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर के उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुञ्जी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे और उनसे पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

शिक्षाप्रद तीन कहानियां

झूठा ग्राहक : झूठा बजाज

दृष्टांत—एक किसी अधर्मी मनुष्य ने किसी अधर्मी बजाज की दूकान पर जाकर कहा कि यह वस्त्र कितने आने गज देगा ? वह बजाज बोला कि सोलह आने, तुम भी कुछ कहो। बजाज और ग्राहक दोनों जानते थे कि वह दस आने गज का कपड़ा है, परन्तु अधर्मी झूठ बोलने में कभी नहीं डरते।

ग्राहक—छः आने गज दो और सच-सच लेने देने की बात करो।

बजाज—अच्छा तो तुमको दो आने छोड़ देते हैं, चौदह आने दो।

ग्राहक—है तो टोटा परन्तु सात आने ले लो।

बजाज—अच्छा तो सच-सच कहूँ ?

ग्राहक—हां।

बजाज—चलो एक आना टोटा ही सही, तेरह आने दो, तुमको लेना हो तो लो।

ग्राहक—मैं सत्य-सत्य कहता हूँ कि इसका आठ आने से अधिक कोई भी तुमको न देगा।

बजाज—तुमको लेना हो तो लो न लेना हो तो मत लो, परमेश्वर की सौगन्ध बारह आने गज़ तो मुझे घर पड़ा है, तुमको भला मनुष्य जानकर मैं दे देता हूँ।

ग्राहक—धर्म की सौगन्ध, सच कहता हूँ तुझको देना हो तो दे, पीछे पछतावेगा, मैं तो दूसरे की दुकान से ले लूंगा, क्या तुम्हारी एक ही दुकान है? नौ आने गज दे दो, नहीं तो मैं जाता हूं।

बजाज—तुमने कभी ऐसा खरीदा भी है नव आने गज, लाओ तो मैं सौ रुपये का लेता हूँ।

ग्राहक—धीरे-धीरे चला कि मुझको बुलाता है वा नहीं।

बजाज—तिरछी नजर से देखता रहा कि देखें वह लौटता है या नहीं। जब न लौटा तब बोला, इधर आओ।

ग्राहक—क्या कहते हो नव आने पर दोगे।

बजाज—ऐ लो धर्म से कहता हूँ कि ग्यारह आने भी दोगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्राहक—साढ़े नौ आने लो, कह कर कुछ आगे चला।

बजाज ने समझा कि हाथ से गया, अजी इधर आओ, आओ!

ग्राहक—क्यों तुम देर लगाते हो व्यर्थ काल जाता है।

बजाज—मेरे बेटे की सौगन्ध तुम इसको न लोगे तो पछताओगे अब मैं सत्य ही कहता हूँ, साढ़े दश आने दे दो नहीं तो तुम्हारी राजी।

ग्राहक—मेरी सौगन्ध तुमने दो आने अधिक लिए हैं अच्छा दस आने देता हूँ इतने का तो है नहीं।

बजाज—अच्छा सवा दस आने भी दोगे?

ग्राहक—नहीं नहीं!

बजाज—अच्छा आओ, बैठो, कितने गज लोगे?

ग्राहक—सवा गज।

बजाज—अजी कुछ अधिक लो।

ग्राहक—अच्छा नमूना ले जाते हैं। अब तुम्हारी दुकान देखली फिर कभी आवेंगे तो बहुत लेंगे। बजाज ने नापने में कुछ सरकाया।

ग्राहक—अजी देखें तो तुमने कैसा नापा?

बजाज—क्या विश्वास नहीं करते हो, हम साहूकार हैं वा ठठ्ठा है, हम कभी झूठ कहते हैं और करते हैं?

ग्राहक—हां जी तुम बड़े सच्चे। एक रुपया कहकर दस आने तक आये, छ: आने घट गये, अनेक सौगन्धें खाईं।

बजाज—वाह जी वाह। तुम बड़े सच्चे हो। छ: आने कहकर दस आने तक लेने को तैयार हो, अनेक सौगन्ध खा-खाकर आये, सौदा झूठ के बिना कभी नहीं हो सकता।

ग्राहक—तू तो बड़ा झूठा है।

बजाज—क्या तू नहीं है क्योंकि एक गज कपड़े के लिए कोई भी भला मनुष्य इतना झगड़ा नहीं करता है।

ग्राहक...तू झूठा तेरा बाप, हमारी सात पीढ़ी में कोई झूठा भी हुआ है?

बजाज—तू झूठा तेरी सात पीढ़ी भी झूठी। ग्राहक ने ले जूता एक मार दिया। बजाज ने गज चट मारा, अड़ोसी-पड़ोसी दुकानदारों ने जैसे तैसे छुड़ाया।

बजाज—चल २ जा तेरे जैसे लाखों देखे हैं।

ग्राहक—चल बे! तेरे जैसे जुवाचोर टटपूंजिए दुकानदार मैंने करोड़ों देखे हैं।

अड़ोसी-पड़ोसी—अजी झूठ के बिना कभी सौदा भी होता है? जाओ भी तुम अपनी दुकान पर बैठो और जाओ तुम अपने घर को।

बजाज—यह बड़ा दुष्ट मनुष्य है।

ग्राहक—अबे मुख सम्भाल के बोल।

बजाज—तू क्या कर लेगा?

ग्राहक—जो मैंने किया सो तैंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देख लिया और कुछ देखना हो तो दिखला दूं।

बजाज—क्या तू गज से न पीटा जाएगा। फिर दोनों लड़ने को दौड़े जैसे-तैसे लोगों ने अलग-अलग कर दिए ऐसे ही सर्वत्र झूठे लोगों की दुर्दशा होती है।

महामूर्ख

एक प्रियदास का चेला भगवानदास अपने गुरु से बारह वर्ष पर्यन्त पढ़ा। एक दिन उनसे पूछा कि महाराज मुझको संस्कृत बोलना नहीं आया।

गुरु बोले—सुन बे! पढ़ने पढ़ाने से विद्या नहीं आती, किन्तु गुरु की कृपा से आ जाती है। जब गुरु सेवा से प्रसन्न होता है जैसे कुञ्जियों से ताला खोलकर मकान के सब पदार्थ झट देखने में आते हैं, वे ऐसी युक्ति बतला देते हैं कि हृदय के कपाट खुल जाकर सब पदार्थ-विद्या तत्क्षण आ जाती है। सुन! संस्कृत बोलने की तो सहज युक्ति है।

भगवान दास—महाराज जी! वह क्या है?

गुरु—संसार में जितने शब्द संस्कृत वा देशभाषा में हों उन पर एक-एक बिन्दु धरने से शुद्ध संस्कृत हो जाते हैं।

अच्छा तो महाराज जी लोटा, जल, रोटी, दाल, शाक आदि शब्दों पर बिन्दु धरके कैसे संस्कृत हैं देखो—**लोटां। जलं। रोटीं। दालं। शाकं॥**

चेला बोला—वाह-वाह गुरु के बिना क्षणमात्र में पूरी विद्या कौन बतला सकता है! भगवान दास ने अपने आसन पर जाकर विचार के वह श्लोक बनाया—

बांपं आंजां नंमंस्कृत्यं
पंरं पांजं तंथैंवं च।
मंयां भगंवानंदांसेनं गीतां
टींकां ऊंरोंम्यंहंम्॥१॥

जब उसने प्रातःकाल उठकर हर्षित होके गुरु के पास जाकर श्लोक सुनाया तब प्रियदास जी भी बहुत प्रसन्न हुए कि जो चेले हों तो तेरे ही समान गुरु के वचन पर विश्वासी और जो गुरु हों तो मेरे सदृश हों।

शेखचिल्ली

जैसे एक दरिद्र शेखचिल्ली नामक किसी ग्राम में था। वहां किसी नगर का बनिया दस रुपये उधार लेकर घी घड़े में भर किसी मजूर की खोज में था, वहां शेखचिल्ली आ निकला। उसने पूछा कि इस घड़े को तीन कोस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर ले जाने की क्या मजूरी लेगा। उसने कहा कि आठ आने। आगे बनिये ने कहा कि चार आने लेना हो तो लेना। उसने कहा अच्छा। शेखचिल्ली घड़ा ले चला और बनिया पीछे-पीछे चलता हुआ मन में मनोरथ करने लगा कि दस रुपये के घी के ग्यारह रुपये आवेंगे, दस रुपया सेठ को दूंगा और एक रुपया घर की पूंजी रहेगी, वैसे ही दस फेरे में दस रुपये हो जायेंगे। इसी प्रकार दस से सौ, सौ से सहस्र, सहस्र से लक्ष, लक्ष से करोड़ फिर सब जगह कोठियां करूंगा, और सब राजा लोग मेरे कर्जदार हो जायेंगे इत्यादि बड़े-बड़े मनोरथ करने लगा और शेखचिल्ली ने विचारा कि चार आने की रुई ले सूत कातकर बेचूंगा, आठ आने मिलेंगे, फिर आठ आने से एक रुपया हो जाएगा। फिर वैसे ही एक से दो रुपये होंगे, उनसे एक बकरी लूंगा। जब उसके कच्चे-बच्चे होंगे तब उनको बेचकर गाय लूंगा, उसके कच्चे-बच्चे बेच भैंस लूंगा, उसके कच्चे-बच्चे बेच एक घोड़ी लूंगा, उसके कच्चे-बच्चे बेच एक हथनी लूंगा और उसके कच्चे-बच्चे बेच दो बीवियां ब्याहूँगा, एक का नाम रखूंगा प्यारी और दूसरी का नाम बे प्यारी रखूंगा। जब प्यारी के लड़के गोद में बैठने आवेंगे तो कहूँगा बच्चे आओ बैठो। जब बेप्यारी के लड़के आकर कहेंगे कि हम भी बैठे तब कहूंगा नहीं-नहीं। ऐसा कह कर सिर हिला दिया। घड़ा गिर पड़ा, फूट गया और घी भूमि में फैल के धूलि में मिल गया। बनिया रोने लगा और शेखचिल्ली भी रोने लगा।

बनिये ने शेखचिल्ली को धमकाया कि घो क्यों गिरा दिया और रोता क्यों है, तेरा क्या नुकसान हुआ?

शेखचिल्ली—तेरा क्या बिगाड़ हुआ? तू क्यों रोता है?

बनिया—मैंनें दस रुपये उधार लेकर प्रथम ही घी खरीदा था, उस पर बड़े-बड़े व्यापार का विचार किया था, वह मेरा सब बिगड़ गया, क्यों न रोऊं?

शेखचिल्ली—तेरी तो दस रुपये आदि की हानी हुई मेरा तो घर ही बना-बनाया बिगड़ गया, मैं क्यों न रोऊं?

बनिया—क्या तेरे रोने से मेरा घी आ जायेगा?

शेखचिल्ली—अच्छा तो तेरे रोने से मेरा घर भी बन जाएगा! तू बड़ा मूर्ख है.

बनिया—तू मूर्ख तेरा बाप। दोनों आपस में एक दूसरे को मारने लगे, फिर मार पीट कर शेखचिल्ली अपने घर की ओर भाग गया और बनिये ने धूल मिले हुए घी को ठीकरे में उठा कर अपने घर की राह ली। ऐसे ही स्वसामर्थ्य के बिना अशक्य मनोरथ किया करना मूर्खों का काम है और जो बिना परिश्रम के पदार्थों की प्राप्ति में उत्साही होता है उसी मनुष्य को विद्वान लोग मूर्ख कहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनमोल रत्न

एक छोटे से गांव में एक विधवा स्त्री रहती थी। उसके एक ही बेटा था। उसे वह बहुत ही प्यार करती थी। स्त्री बहुत ही गरीब थी। वह जंगल में घास काट कर अपना तथा अपने बेटे का पालन पोषण करती थी। उसका बेटा भी अपनी माँ का कहना मानता था।

एक दिन स्त्री बीमार पड़ गयी तो उसने अपने प्यारे बेटे से कहा—बेटा! आज मैं घास काटने नहीं जा सकूंगी, इसलिए तू ही जंगल में जाकर घास व लकड़ियाँ काट आ।

बस बालक जंगल की ओर चल पड़ा। उसने अपनी माँ से कहानियां सुन रखी थीं कि जंगलों में गुप्त खजाने होते हैं। क्यों न आज गुप्त खजाने की खोज कर लूं? इसी आशा से वह जंगल की तरफ आगे बढ़ने लगा। वह अभी कुछ ही दूर गया था कि एक बूढ़ा मिला।

बूढ़े ने उससे पूछा,— तुम कहाँ जा रहे हो? बालक ने कहा—गुप्त धन का पता लगाने। तुम उस गुप्त धन का पता लगाकर क्या करोगे? तुम्हारी माँ के पास ऐसा 'अनमोल रत्न' है जो कभी भी खत्म नहीं हो सकता। बूढ़ा यह कह कर अपने रास्ते पर चल दिया। बालक सोचने लगा कि उसकी मां ने उसे झूठ क्यों बताया कि उसके पास कुछ नहीं है। यदि उसके पास अनमोल रत्न है तो उसने क्यों नहीं बताया? यही सोचता हुआ वह बालक अपनी माँ के पास आया और बोला—माँ! जब तुम्हारे पास 'अनमोल रत्न' था तो तुमने क्यों नहीं बता दिया?

यह सुनकर माँ मुस्करा दी और बोली—बेटा! 'अनमोल रत्न' तो तुम्हीं हो। यह सुनकर बालक बहुत खुश हुआ।

एक बच्चा परीक्षा दे रहा था। वह परीक्षा में पीछे मुड़कर देखने लगा। मास्टर साहब ने कहा-पीछे क्या देख रहे हो?
लड़का बोला-सर! पेपर में लिखा है, पीछे देखिए।

●

लड़का--पिताजी, मैं पास हो गया, कक्षा में तृतीय हूँ।
पिताजी--शाबाश बेटे! कक्षा में कुल कितने लड़के थे?
लड़का--(धीरे से) तीन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मित्र की कामना

मैं भी वही किताबें लूंगा, जो हैं उस बच्चे के पास ।
देर क्यों करती हो अम्मा, मुझे बनाती और उदास ॥

फिर मैं इतना सुन्दर लिखकर, तुमको अभी दिखाऊंगा ।
और करूंगा पाठ याद भी, तब राजा कहलाऊंगा ।

अच्छा अम्मा अब तो मेरा, करदो तुम इतना सा काम ।
बाबूजी से विनती करके मेरा भी लिखवा दो नाम ।

मुझे बनादो शेर

जंगल-जंगल घूम-घूम कर सबको खूब डराता ।
अपनी मनमानी करता मैं; जी भर कर गुर्राता ॥

अम्मा से न पिटता, चाहे कभी स्कूल न जाता ।
मुझे देख कर सब डर जाते; मैं यों मौज उड़ाता ॥

आई निकट परीक्षा भगवन्, अब तो करो न देर ।
पेपर होने से पहले ही; मुझे बनादो शेर ॥

आविष्कार तथा आविष्कारक

आविष्कार	वर्ष	आविष्कारक
(१) बेलून	१७८३	मॉल्ट गॉल्फर
(२) फाउन्टेनपेन	१८३४	वाटर मन
(३) सिलाई की मशीन	१८३०	थिमोनियर
(४) सेफ्टी रेजर	१९०४	गिलेट
(५) सेफ्टी पिन	१८४९	व्हन्ट
(६) रिवॉल्वर	१८३७	कॉल्ट
(७) स्टेनलेस स्टील	१९००	हॉलैन्ड

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक राष्ट्र गीत

भावानुवाद

भारत वर्ष हमारा प्यारा अखिल विश्व से न्यारा
सब साधन से रहे समुन्नत भगवन देश हमारा।

हों ब्राह्मण विद्वान राष्ट्र में ब्रह्म--तेज-व्रतधारी
महारथी हों शूर धंनु धंन क्षत्रिय लक्ष्य प्रहारी।
गौएं भी अति मधुर दुग्ध की रहें वहाती धारा।।

सब साधन............

भारत में बलवान वृषभ हों बोझ उठायें भारी
अश्व आशुगामी हो, दुर्गम पथ में विचरण कारी।
जिनकी गति अवलोक लजाकर हों समीर भी हारा।।

सब साधन............

महिलाएं हो सती सुन्दरी, सदगुणवती सयानी
रथा रूढ़ भारत वीरों की करें विजय अगवानी
जिनकी गुण-गाथा से गुंजित दिग्-दिगन्त हो सारा।

सब साधन............

यज्ञ-निरत भारत के सुत हों शूर सुकृत अवतारी
युवक यहां के सभ्य सुशिक्षित सौम्य सरल सुविचारी
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र का भावी सुदृढ़ सहारा।। सब साधन.......

समय-समय पर आवश्यकता वश रस घन बरसाये
अन्नौषध में लगें प्रचुर फल और स्वयं पक जायें।
योग हमारा, क्षेम हमारा, स्वतः सिद्ध हो सारा।।

सब साधन............

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी पढ़े व्यक्तियों व विदेशों के लिए

प्रभावशाली अंग्रेजी साहित्य

1 LIGHT OF TRUTH

An English Translation of **Satyarth Prakash**

महर्षि दयानन्द के महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद १८x२२/८ साइज में, सजिल्द मूल्य १०), ५ प्रतियों का मूल्य ४५) १० प्रतियों का ८०), २५ प्रतियों का १८७)५०, ५० के ३५०) और ६००) की १०० प्रतियां।

स्टाक बहुत थोड़ा शेष है शीघ्र संगाएं।

2. TECHAINGS OF SWAMI DAYANANDA

महर्षि दयानन्द की विचारधारा और शिक्षाओं से सभी को परिचित कराने के लिए अनुपम पुस्तक। मूल्य १५ पैसे

3. TEN COMMANDMENTS

आर्य समाज के १० नियमों की अभूतपूर्व व्याख्या स्व० पं० चमूपति जी की लेखनी से— मूल्य १)

4. Message of the Arya Samaj to the Universe.

भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार लिखित—आर्य समाज का संदेश फैलाने हेतु प्रभावशाली पुस्तिका—जिसका ८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। मूल्य ३० पैसे २५) सैकड़ा

5. VEDIC PRAYER

संध्या, प्रार्थना मन्त्र—हवन स्वस्तिवा चन शांति प्रकरण आदि सभी की पूर्ण व्याख्या हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ और चुने हुए भजन भेंट के लिए अत्युत्तम मूल्य १)

[फिजी निवासी श्री स्व० हरिश्चन्द्र गाजी की पावन स्मृति में]

6. DAYANANDA THE GREAT

पं० वेद मित्र ठाकुर लिखित प्रभावशाली ट्रैक्ट मूल्य १५ पैसे

जन ज्ञान प्रकाशन

१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग, (निकट ३१ नाई वाला)

करोल बाग, नई दिल्ली-५।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—ओम्प्रकाश त्यागी, संसद् सदस्य

मेरा लक्ष्य क्या है ?

उपदेश : महात्मा जी का

आज स्कूल प्रांगण ने एक समारोह-स्थल का रूप धारण कर लिया है। विद्यार्थियों के अतिरिक्त नागरिक जन-समूह भी भारी संख्या में आया है। इस का मुख्य कारण यह है कि महात्मा जी के प्रवचन अब जीवन से सीधा सम्बन्ध रख रहे हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति रुचि ले रहा है। आश्चर्य तो यह है कि इन आध्यात्मिक प्रवचनों में वृद्धों की अपेक्षा नवयुवक अधिक रुचि ले रहे हैं।

महात्मा जी अपने स्वभावानुसार ठीक समय पर पधारे। उन्हें भी न जाने क्यों विद्यार्थियों के प्रति अधिक प्रेम व आकर्षण हो गया है। प्रारम्भ में उन्होंने केवल पन्द्रह ही दिन का समय दिया, परन्तु अब अन्यत्र के समस्त कार्य-क्रम समाप्त कर उन्होंने अपनी वर्तमान विचार शृंखला को पूर्णता प्रदान करने का निश्चय कर लिया है, बशर्ते विद्यार्थियों की रुचि व माँग बनी रहे।

मन्त्रपाठ के पश्चात् महात्मा जी ने अपने पूर्व घोषित एक प्रश्न की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा— बच्चो ! आज जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न—"मेरा (आत्मा का) लक्ष्य क्या है ?" विषय पर चर्चा करनी है। यह विषय प्रत्येक बाल, युवा वृद्ध, पुरुष, स्त्री सभी से सीधा सम्बन्ध रखता है। इस प्रश्न को समझे बिना मनुष्य अथवा राष्ट्र की प्रगति होना सर्वथा असम्भव है। यही वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य के अच्छे बुरे जीवन का आधार अथवा निर्मातृ होती है। इसके अभाव में व्यक्ति की वही स्थिति होती है जैसे बिना पतवार की नौका, जो हवा के झोंकों के सहारे नदी में इधर-उधर बह रही है; और पता नहीं किस किनारे जा लगे या मझधार में ही डूब जाए।

लक्ष्यहीन अवस्था किसी भी व्यक्ति व राष्ट्र की सबसे बड़ी शत्रु होती है। लक्ष्य के अभाव में मानव का जीवन एक जंजाल बन जाता है, जिसमें इच्छित-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनइच्छित झाड़-झंकाड़ पैदा होकर हिंसक पशुओं को आश्रय देते हैं। इसी प्रकार लक्ष्यहीन व्यक्ति अनेक विरोधी वासनाओं का घर बन कर आलस्य, प्रमाद, पुरुषार्थहीनता, चरित्रहीनता, आवारागर्दी आदि हिंसक प्रवृत्तियों का अड्डा बन जाता है। इसलिए प्रगतिशील अथवा प्रगति के अभिलाषी व्यक्ति का सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह अपने लक्ष्य को जाने या अपने लक्ष्य को किसी अपनी प्रकृति के अनुकूल किसी लक्ष्य से बाँध ले।

मनुष्य ही क्या संसार का प्रत्येक प्राणी एक निश्चित लक्ष्य से बंधा है। अज्ञानवश अधिकांश व्यक्ति इस लक्ष्य को न समझकर जीवनभर भटकते रहते हैं। प्राणी-मात्र का लक्ष्य परमानन्द अर्थात कष्टों से पूर्ण मुक्ति पाना है। उसकी समस्त गतिविधियों के पीछे यही लक्ष्य छिपा होता है। आत्मा इसी लक्ष्य की सिद्धि के निमित्त इस जगत् में बार-बार जन्म लेता है। यही वह लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति की खोज में संसार के अनेक साधु, सन्त व महात्माओं ने अपने जीवन की आहुति दे दी। इसी लक्ष्य की प्राप्ति कराने का दावा संसार के मत-मतांतर व धर्म अपनी-अपनी शैली से करते हैं। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के विभिन्न विचारों व मार्गों ने विभिन्न मत-मतान्तरों को जन्म दिया दिया है।

विद्यार्थी– महात्मा जी ! बड़े आश्चर्य की बात है कि जिस बात को आप इतना महत्व दे रहे हैं उससे संसार का प्रत्येक प्राणी स्वभाव से परिचित है। आपने स्वयं भी स्वीकार किया है कि प्राणी मात्र की समस्त गतिविधियों के पीछे कोई लक्ष्य छिपा होता है। फिर इस सर्वविदित एवं सर्वपरिचित लक्ष्य के बारे में और क्या अधिक वतलायेंगे ? मेरे विचार से आप इस विषय पर व्यर्थ समय नष्ट कर रहे हैं। खाओ, पियो, मौज उड़ाओ-इस बात को कौन नहीं जानता ? एक पागल व्यक्ति भी इस बात को जानता है।

महात्मा—मुस्कराते हुए महात्मा जी ने कहा—बच्चे ! खाओ, पियो, मौज उड़ाओ ही आदमी का लक्ष्य है—यही सबसे बड़ी भ्रान्ति है। खाना-पीना, सोना, सन्तानोत्पत्ति आदि कार्य तो पशु-पक्षी सभी करते हैं। क्या मनुष्य और पशु में आप कोई भेद नहीं समझते हैं।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! आपने स्वयं कहा है कि प्राणी मात्र का एक लक्ष्य है। फिर आपने पशु-पक्षी व मनुष्य के लक्ष्य में अन्तर का प्रश्न कैसे उठा दिया ?

महात्मा—प्राणी मात्र का लक्ष्य परमानन्द की प्राप्ति है; और इसमें भेद नहीं है, इस तथ्य को तो मैं स्वीकार करता हूँ परन्तु खाना, पीना, मौज उड़ाना परमानन्द नहीं है। खाना, पीना, सोना तो शरीर का धर्म है आत्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का नहीं। खाने-पीने से शरीर को सुख मिलता है। इस क्षणिक सुख को शरीर के सम्पर्क से आत्मा भी अनुभव करता है; परन्तु यह क्षणिक सुख परमानन्द नहीं है। शारीरिक सुख या विषय-भोग फूल और कांटे की भान्ति कष्टों से भी बन्धे हैं। रोग व्याधि, जन्म, मरण, बुढ़ापा सब शरीर के साथ सम्बद्ध हैं। अतः खाने, पीने, मौज उड़ाने को परमानन्द या मानव का लक्ष्य कहना भूल है।

पशु-पक्षी और मानव के भेद की ओर इस लिए संकेत किया गया है, क्योंकि पशु-पक्षी के पास बुद्धि न होने से वह खाने, पीने, सोने आदि को ही अपना लक्ष्य समझ लेता है; और उसका समस्त जीवन इन्हीं के चारों तरफ घूमता रहता है। परन्तु मनुष्य को ईश्वर ने सोचने-विचारने के लिए बुद्धि दी है। यदि वह भी खाने-पीने को ही अपना लक्ष्य समझ बैठे तो यह उसकी बुद्धि का अपमान है; और स्वयं अपने को इस प्रकार पशु-पक्षियों की पंक्ति में खड़ा कर देता है।

विद्यार्थी—क्या आप मनुष्य के किये खाने-पीने आदि के शारीरिक सुखों को पशुओं का सुख मान मनुष्य के किए इनका कोई महत्व नहीं मानते हैं।

महात्मा...भोले विद्यार्थी! शरीर आत्मा का वह वाहन है जिसमें बैठ कर वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने चला है। अपने वाहन शरीर को ठीक व हृष्ट पुष्ट रखने में उसे प्रसन्नता होना स्वाभाविक है, परन्तु शरीर का ही पालन-पोषण करते रहना उसी समान है जैसे कोई अपनी मोटर को साफ करना या उसे ठीक करना ही अपना धर्म समझ बैठे, और यह भूल जाय कि उसके द्वारा उसे कहीं पहुँचना है।

विद्यार्थी...महात्मा जी! आपका 'परमानन्द' एक ख्याली उड़ान है। वास्तविकता तो यही है कि मनुष्य शारीरिक सुखों में आनन्द अनुभव करता है और यही उसका एक मात्र लक्ष्य है। आप अपनी बुद्धि व युक्ति के बलपर अपने काल्पनिक आकाशी परमानन्द को भले ही थोप दें परन्तु वह सच्चाई से कोसों दूर है।

महात्मा...बच्चे! वास्तविकता यह है कि लोगों ने शरीर को प्रमुखता दे दी है और इसी की पूजा में रात दिन लगे रहते हैं। इसी शरीर में बेचारा आत्मा रहता है। उसकी भी अपनी भूख है परन्तु हम उसकी भूख की ओर ध्यान नहीं देते हैं। यही कारण है आत्मा की आवाज ही मर गई है। बहुधा लोग आत्मा की आवाज पर नहीं अपितु मन की आवाज के पीछे चलते हैं। वह मन की ही आवाज को आत्मा की आवाज समझ लेते हैं। परन्तु यही भारी भ्रम है, और स्पष्ट आत्मघात है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्यार्थी ..महात्मा जी ! क्या आप मन और आत्मा की आवाज में भेद युक्तियों से नहीं अपितु प्रत्यक्ष में समझा सकेंगे ?

महात्मा—काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि मन की आवाज़ व आवेग हैं आत्मा के नहीं। त्याग, सेवा प्रेम, दया, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, संतोष आदि आत्मा की आवाज हैं। इन दोनों आवाजों में जमीन आसमान का अंतर है।

विद्यार्थी—महात्मा जी, मन अथवा शरीर की इच्छा पूर्ति में तो सुख तथा आनन्द अनुभव होता है। परन्तु आत्मा की आवाज तो कष्टों का द्योतक है। इस आवाज को परमानन्द की आवाज कैसे मानते हैं ?

महात्मा—यह बात सत्य है कि शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति से मानव को सुख अनुभव होता है, परन्तु आत्मा की इच्छा पूर्ति में व्यक्ति को हजारों गुना अधिक सुख व आनन्द मिलता है। भौतिक पदार्थों की प्राप्ति में व्यक्ति को सुख मिलता है, परन्तु जब वह उन पदार्थों को असहायों व निर्धनों में दान रूप में बांटता है तो उसे अकथनीय आनन्द अनुभव होता है। अपने दुश्मन को पीटने में हर्ष अनुभव होता है, पर बिमार अस्वस्थ व घायल व्यक्ति की सेवा करने में उससे अधिक आनन्द अनुभव होता है। क्रोध जहाँ मानव को पागल राक्षस बना देता है, वहाँ क्षमा की भावना मानव को देवता स्वरूप बना देती है, लोभ व असंतोष जहां मानव की भूख, प्यास व नींद तक छीन लेते हैं, तब संतोष की निर्मल धारा उसे सुख शान्ति की गोद में बिठा देती है. अहंकार जहां मानव की प्रगति को रोक उसके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि कर देता है। वहां विनम्रता व्यक्ति को प्रगति व मित्र प्रदान करती है। इस प्रकार शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति भले ही व्यक्ति के क्षणिक सुखों के पीछे उसे बड़े लम्बे जाल में फंसा देती हैं। आत्मा की आवाज मानव को सदैव सुख व शांति व आनन्द की ओर ले जाती है।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! आप की बात में सत्यता है परन्तु क्या कारण है कि लोग आंतमा की आवाज़ की उपेक्षा कर शरीर अथवा मन की आवाज के पीछे भागते हैं।

महात्मा—अज्ञानता के कारण जब व्यक्ति मन और आत्मा की आवाज के परिणामों के भेद को नहीं समझ पाता तभी ऐसा होता है। ऐसा होते हुए भी शरीर पोषक लोग भी आत्मा-पोषक लोगों के ही अपना आदर्श मानते हैं। जैसे : बुद्ध, ईसा, दयानन्द, गान्धी आदि अपनी भौतिक सम्पत्ति व भौतिक वैभव के कारण नहीं अपितु भौतिक वैभवों को लात मारने के कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही पूजे जाते हैं। इसलिए शरीरिक सुखों को ही मानव जीवन का लक्ष्य मानना भारी भूल है।

विद्यार्थी... क्या आत्मा की आवाज़ के अनुकूल आचरण करना ही मानव का लक्ष्य है ?

महात्मा...लक्ष्य तो परमानन्द की प्राप्ति करना है। आत्मा की आवाज के अनुकूल आचरण करना तो इस लक्ष्य की पूर्ति का साधन है।

विद्यार्थी...यदि कोई व्यक्ति आत्मा की आवाज के अनुकूल आचरण न करें तो उसे क्या विशेष हानि हो सकती है ?

महात्मा...आत्मा की आवाज के अनुकूल आचरण न करने से परमानन्द की प्राप्ति तो होगी ही नहीं। परन्तु इस के अतिरिक्त उसे भौतिक सुख की प्राप्ति में भी अंत में चलकर व्यवधान उत्पन्न होगा। यजुर्वेद ने इस तथ्य को इस प्रकार प्रकट किया है :

'असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमासावृतः।
प्रेत्याभि गच्छन्ति ये के चात्म हनोजनः ॥

जो व्यक्ति अपनी आत्मा को मारते हैं आत्मा की आवाज के अनुकूल नहीं चलते वे घोर अंधकार अथवा कष्टों को और अंधकारमय योनियों (पशु-पक्षी आदि) को मरने के पश्चात प्राप्त होते हैं।

विद्यार्थी महात्मा जी ! क्या मानव भौतिक लक्ष्य तथा आत्मिक लक्ष्य में कोई सम्बन्ध है या एक दूसरे के विरोधी ही हैं ?

महात्मा भौतिक लक्ष्य और आत्मिक लक्ष्य में घनिष्ट सम्बन्ध है। शरीर के बिना आत्मा एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है। इसके अतिरिक्त यह भौतिक जगत ही आत्मा की वह परीक्षणशाला या कर्मक्षेत्र है जहां वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न व पुरुषार्थ करता है। अतः शरीर एवं भौतिक जगत की उपेक्षा करना मूर्खता है। आवश्यकता केवल भौतिक इच्छा तथा आत्मिक इच्छाओं में समन्वय उत्पन करने की है। इनके समन्वय हो जाने पर मानव के भौतिक तथा पारलौकिक दोनों ही जीवन सुखी बन जाते हैं।

विद्यार्थी—भौतिक इच्छाओं और आत्मिक इच्छाओं में समन्वय करने का उपाय क्या है ?

महात्मा उपाय एक ही है कि जब मनुष्य अपने लक्ष्य को सही रूप में समझ लेता है तो फिर वह उसके अनुकूल इच्छाओं, साधनों व आचरण को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चुनने में कठिनाई अनुभव नहीं करता। जब मनुष्य अपने लक्ष्य परमानन्द के सही स्वरूप तथा उसके फल को समझ जाएगा, तो फिर उसे अपनी भौतिक इच्छाओं के निर्धारण व परिमार्जन करने में कठिनाई उत्पन नहीं होगी। तब भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन एक से हो जायेंगे।

विद्यार्थी—क्या भौतिकवादी व्यक्ति अध्यात्मवादी बन सकता है ?

महात्मा—लोगों में यह बहुत बड़ी भ्रांति है कि अध्यात्मवादी बनने के लिए भौतिकवाद अर्थात भौतिक इच्छाओं व सुखों छोड़ना पड़ता है। भौतिकवाद और अध्यात्मवाद दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। भौतिकवादी रहते अध्यात्मवादी कैसे रहा जाता है, यह रहस्य योगीराज कृष्ण ने गीता में निष्काम कर्मयोग के द्वारा बड़े ही सुन्दर ढंग से उपस्थित किया है। वैदिक धर्म की दृष्टि से भौतिकवाद व अध्यात्मवाद का समन्वय ही आदर्श जीवन है।

विद्यार्थी—क्या आप भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के समन्वय की कोई ऐसी रूप रेखा बतला सकते हैं जिस पर एक साधारण व्यक्ति चल सके।

महात्मा—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह आदर्श जीवन का क्रम व रूप रेखा वैदिक धर्म में बतलाई गई है, अर्थात धर्म मार्ग से भौतिक साधनों को प्राप्त कर भौतिक इच्छाओं की पूर्ति करते हुए मोक्ष को प्राप्त करना ही अभीष्ट है।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! आपने अपने प्रवचन में सुख शान्ति व आनन्द का समय समय पर वर्णन किया है। तो क्या यह तीनों एक ही वस्तु के नाम हैं या इनमें कोई भेद भी है ?

महात्मा—इस प्रश्न का उत्तर बड़ा महत्वपूर्ण है। समयाभाव के कारण आज नहीं अगले अंक में इसका उत्तर दिया जाएगा।

शान्ती पाठ के पश्चात प्रार्थना सभा समाप्त हुई।

सब से बड़ा !

१. फरवरी, मार्च और नवंबर हर साल एक ही दिन शुरू होते हैं।
२. कोई भी शताब्दी बुध, शुक्र और रविवार से शुरू नहीं हो सकती है।
३. अक्टूबर की पहली तारीख को हमेशा वही दिन होगा जो उस साल की फरवरी की पहली तारीख को होगा।
४. इसी प्रकार अप्रैल की पहली तारीख और जुलाई की पहली तारीख एक ही दिन तथा सितंबर की पहली तारीख और दिसंबर की पहली तारीख एक ही दिन पड़ेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रचार–यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

विविध

१ श्री मोहन दास जालना २०)। २ श्री केदार नाथ मिश्र कलकत्ता १०)। ३ श्री थान सिंह भाटी, देसूरी ७)। ४ श्री रामपाल सिंह हापुड़ ३)। ५ श्री मदन मोहन प्रसाद, छपरा २)५०। ६ श्री कवलकृष्ण अमृतसर १०)। ७ श्री सेवकराम यात्री, नया नाँगल १५)। ८ श्रीमती विमला तलवाड़, लखनऊ ११)। ९ श्री जे० एन० विग अमृतसर ७) १० श्री प्रभुदीप प्रसाद वर्मा, समस्तीपुर ३)। ११ श्री चन्द्र जी लुधियाना १०)। १२ श्री पी० सी० शुक्ला गोरखपुर ११)। १३ श्री राम चन्द्र जी, हरगांव १०)। १४ श्री विशंभर सहाय जी, मैनपुरी १०)। १५ श्री बद्रीप्रसाद, किशोरीलाल खैरथल मंडी ६)। १६ पी० एस० भट्ट बल्हानूर १०)। १७ श्री रामानन्द झाड़ेश्वर २५)। १८ कैप्टन टी० आर सोलंकी इन्दौर १५)। १९ श्री केदार नाथ सेंगर खंडवा ४)। २० श्री जैसीराम, धर्मशाला ३)। २१ श्री राम सरन आहूजा १०)। २२ श्री मगन लाल भरूच १०)। २३ श्री कृष्णलाल एडवोकेट सहारनपुर १०)।

५ रुपए भेजने वालों की सूचि

१ श्री प्यारे लाल संटाखेड़ा। २ श्रीमती पुष्पलता मित्तल मुजफ्फर-नगर ३ श्री नन्दराम मानसिंह, मौलाना। ४ श्री बुद्ध सिंह, छपरौली ५ श्री देवकी नन्दन सिंह, मुहम्मदपुर ६ श्री सोमप्रकाश गिरि, मरौद ७ प्रिंसिपल डी० ए० वी० गर्ल्स कालिज, यमुनानगर ८ श्री एम. जी. भावसार, बड़ौद ९ श्री दलीप सिंह जी कानपुर १० श्री हरि सिंह आर्यं, दिल्ली ११ श्री यादराम गुर्डान १२ श्री धर्मेन्द्र शर्मा, बंबई १३ डा० सुरेन्द्र भोपाल १४ श्री रवीन्द्र पाल सिंह भयाएा १५ श्री टी० वासुदेव, वारंगल १६ श्री सेवक राम यात्री, नया नॉगल १७ श्री अमरनाथ बीकानेर।

२ रुपये भेजने वालों की सूचि

१ श्री राधे श्याम सिंदूरिया, रायपुर २ श्री भुवनेश चन्द्र बीकानेर ३ श्रीमती ललिता चिद्री अहमदाबाद ४ श्री लोकनाथ पंडित, परेव ५ श्री गुरुनाथ विश्वनाथ मिरजे कालसर ७ श्री बी० वासन, सेगांवी ८ श्री मनीराम चौहान गूगलवाड़ा ९ श्री रामप्रसाद साह समस्तीपुर १०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री मोहन लाल मदनजीत आर्य फिरोजपुर ११ श्री रघुवर प्रसाद, सीता मढ़ी १२ श्री राजपति, रामपुर अवस्थी १३ श्री चितरंजन, भार सिंह २)५० १४ श्री रामशरणलाल नवादा।

१ रुपया भेजने वालों को सूचि

१ श्री जनार्दन प्रसाद साह २ श्री राम प्यार साह ३ श्री राधेश्याम श्रीवास्तव पूरे दरियाव लाल ४ श्री उमाकान्त बगहा ५ श्री राम सरोज, बगहा ६ श्री गोपी चन्द कोटद्वार श्री गयादीन चौधरी मुखापुर ८ श्री कृपा शंकर कुलश्रेष्ठ ९ श्री नरेन्द्र भीम जी १० श्री सरताज बहादुर ११ श्रीमती विद्यादेवी १२ श्री चन्द्र कान्त धारूर १३ गुप्तदान।

धन्यवाद

किन्हीं सज्जन ने दो बार सादे लिफाफों में १० रुपये और ५ रुपये के नोट भेजे हैं। हम उनके हृदय से आभारी हैं। गुप्त दान का यह प्रकार अनुपम है। प्रभु उन्हें स्वस्थ जीवन प्रदान करे। सं०

दान के प्रत्येक अवसर पर

वेद प्रचार के पवित्र यज्ञ में

अपनी आहुति भेजिए

अनेकों ग्रन्थ प्रकाशन हेतु

आपके सहयोग को प्रतीक्षा कर रहे हैं

—भारतेन्द्र नाथ

संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंगाइए : बांटिए
और
देश को बचाइए

१. ईसाई पादरी उत्तर दें ।	—स्वामी श्रद्धानन्द	३) सैकड़ा
२. A challange to the christian Faith	,,	३) सैकड़ा
३. Bible in the Balance	—चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा
४. ज्ञान विज्ञान के शत्रु ईसाई मत	—ओमप्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
५. पोप की सेना का भारत पर हमला	—भारतेन्द्रनाथ	१०) सैकड़ा
६. ईसाइयों की प्रचार प्रणाली	—जगत् कुमार	१०) सैकड़ा
७. पादरियों को चुनौती	—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	१०) सैकड़ा
८. बाइबल को चुनौती	—ओम्प्रकाश त्यागी	१५) सैकड़ा
९. और पादरी भाग गया	—ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
१०. ईसाइयत की वास्तविकता	—शांति प्रकाश महोपदेशक	१०) सैकड़ा
११. बाइबल कसौटी पर········	चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा

अधिक से अधिक मगांकर बांटें

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

ईसाईयत रोकने में : उदारता पूर्वक सहयोग दें

कुछ क्षेत्रों में ईसाई विरोधी साहित्य तो चाहिए पर वे धन नहीं भेज सकते, अतः वहां साहित्य भेजने के लिए सहयोग चाहिए । आप अपनी ओर से ईसाई प्रभावित क्षेत्रों में वितरण के लिए अधिक से अधिक साहित्य भिजवायें । यह राष्ट्र की महत्वपूर्ण सेवा होगी । इसके लिए जितनी सहायता हमें प्राप्त होगी उतना ही साहित्य हम भेजते जायेंगे उदारता पूर्वक सहयोग दीजिए ।

राकेश रानी
—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" के नियम

१. "जन-ज्ञान" मासिक पत्रिका है। इसका उद्देश्य—(अ) महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूर्ण करना। (ब) संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद का पावन संदेश पहुँचाना। (स) अज्ञान, पाखण्ड की समाप्ति के लिए प्रत्येक सम्भव पग उठाना है।

२. "जन-ज्ञान" में व्यक्तिगत राग द्वेष और पार्टी बाजी के लेख व सूचनायें किसी भी स्थिति में प्रकाशित नहीं किए जायेंगे।

३. वैदिक सिद्धांतों के विरुद्ध विज्ञापनों का प्रकाशन भी किसी भी स्थिति में नहीं होगा।

४. "जन-ज्ञान" का वार्षिक शुल्क दस रुपया, एक प्रति ८० पैसे है। सदस्यों को विशेषाँक वार्षिक मूल्य में ही दिए जायेंगे।

५. प्रत्येक माह की दो तीन तारीख को 'जन-ज्ञान' भेज दिया जाता है। यदि दस तक भी न मिले तो समझिए आपका 'जन-ज्ञान' कोई और पढ़ रहा है। दस तारीख तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो अपने पोस्ट आफिस को पत्र लिखें और उसकी एक प्रति हमें भीभेजें। पत्र प्राप्त होने पर 'जन-ज्ञान' दुबारा बिना टिकट लगाये बैरंग भेजा जाएगा। **बीस तारीख के बाद या बिना पोस्ट मास्टर के पत्र की प्रतिलिपि के किसी भी शिकायती पत्र पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।**

६. विशेषांक सुरक्षित मंगाने के लिए १ रुपए के टिकट पन्द्रह दिन पूर्व आने चाहियें। विशेषांक किसी भी स्थिति में दुबारा न भेजे जायेंगे।

७. किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

८. समस्त चैक, मनीआर्डर आदि "**जन-ज्ञान-प्रकाशन**" के नाम भेजें।

९. नए सदस्य धन भेजते समय **'सदस्य नया'** शब्द अवश्य लिखें और मनिआर्डर कूपन पर पूरा पता अवश्य लिखें।

१०. "जन-ज्ञान" के सदस्यों को 'जन-ज्ञान प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य पीने मूल्य में दिया जायेगा।

प्रबन्धक

जन-ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यानसिंह रोड़, करौल बाग,
फोन : ५६६६३९ नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्री अमर स्वामी

वेद में विश्व शान्ति

यजुर्वेद अध्याय ३६ के मन्त्र १८ में मनुष्य-मात्र के करने योग्य कामना कही गई है —

दृते दृंह मामित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।।

अर्थ—अविद्या अन्धकार को नष्ट करने वाले हे परमेश्वर व विद्वान् ! मुझको संसार के सब प्राणी मित्र की दृष्टि से देखें अर्थात् मेरे साथ सब प्राणी स्नेह करें और अपना मित्र समझें। और मैं संसार के सब प्राणिग्रों को मित्र की दृष्टि से देखूं। तथा हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

कैसा सुन्दर उपदेश है, **'मिद् स्नेहने'** धातु से मित्र शब्द बनता है जो स्नेह करे और जिससे स्नेह किया जाय वह मित्र होता है। सब प्राणी मुझसे स्नेह और प्रेम करें, मैं सब प्राणियों से स्नेह और प्रेम करूँ तथा हम सब आपस में एक दूसरे के साथ स्नेह करें।

यह उपदेश किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है यह तो मनुष्य मात्र के लिए है कुरआन में उपदेश है कि—

"ला यत्तख़िज़ल मोमिनूनल् काफ़िरीन् औलिया मिन् दूनिल् मोमिनीन्"

कोई मुसलमान सिवा मुसलमान के किसी काफ़िर को हर्गिज दोस्त न बनाये अर्थात् मुसलमान मुसलमान से ही मित्रता करे किसी और से कदापि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मित्रता न करे। ऐसा उपदेश वेद में नहीं है। वेद का उपदेश तो यह है कि प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करे और उसको अपना मित्र समझे। यहीं तक नहीं कि मनुष्य मनुष्य से ही प्रेम करे, किन्तु प्राणीमात्र से प्रेम करे और प्राणीमात्र को अपना मित्र समझे।

प्रेम से प्रेम और द्वेष से द्वेष बढ़ता है। यह देखने में आता है कि मनुष्य यदि पशु और पक्षी से प्रेम करता है तो पशु और पक्षी भी उससे प्रेम करने लगते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि—

मुनिनु समीप विहंग मृग जांही। बाधक बधिक विलोकि पराहीं॥
हित अनहित पशु पक्षिहु जाना। मानुष तन गुण ज्ञान निधाना॥

पक्षी और मृग—ऋषियों-मुनियों के समीप प्रेम में बंधे हुए निर्भय होकर आ बैठते हैं और शिकारियों को देखते ही भाग जाते हैं क्योंकि—अपने हित और अनहित को पशु और पक्षी भी जानते हैं। मनुष्य तो गुण और ज्ञान का सागर है, उसको अपना हित अनहित समझना ही चाहिए। जब सब कोई मनुष्य एक दूसरे को अपना मित्र समझेगा तो वैर किसका किसके साथ होगा? कोई किसी को क्यों सतायेगा और क्यों कोई किसी पर अत्याचार करेगा? फिर क्यों कहीं अशान्ति होगी? फिर तो विश्वभर में शान्ति का ही साम्राज्य होगा।

अथर्ववेद काण्ड ६ सूक्त ९४ मन्त्र २ में कहा है कि—

"अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनुचित्तेभिरेत।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत॥

प्रत्येक मनुष्य यह भावना बनाये और यह कहने योग्य बने कि हे मनुष्यो! मैं आप सब लोगों के मनों को अपने मन से पकड़ता हूँ अपने मन के साथ जोड़ता हूँ आप सब लोग अपने ज्ञानयुक्त चित्तों से मेरे चित्त को प्राप्त होओ। अर्थात् मेरा चित्त आप सबके चित्तों के साथ हो। आप लोगों के हृदयों को मैं अपने प्रेम से अपने वश में करता हूँ, मेरी प्रगतियों के अनुकूल अपनी प्रगतियों को वर्त्तमान करते हुए आप लोग मुझको और मेरी समानता को प्राप्त होवें।

संसार के धनी और बली लोग अपने धन और अपने बल से लोगों के मनों को वश में करना चाहते हैं पर मन को न धन से वश में किया जा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता है न बल से, मन को तो मन से ही पकड़ा जा सकता है, हृदयों पर हार्दिक प्रेम ही प्रभाव डाल सकता है। हृदय और मन सब मनुष्यों के आपस में मिल जायें तो संसार से द्वेष समाप्त हो जाय। सारे विश्व में शान्ति स्थापित करने का यही एक ढंग है कि—मनों को मनों से पकड़ा जाय और हृदयों को हृदयों से मिलाया जाय। इसके लिए भावनाएँ जगाने की आवश्यकता है उन भावनाओं में एक भावना मित्रता की है उसी प्रकार एक भावना भ्रातृभाव की भी है—वेद कहता है कि—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधः, सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुधा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥

ऋ० ५।६०।५

सब मनुष्यों को यह समझना चाहिये कि—मनुष्यों में कोई जाति पांति आदि से बड़ा नहीं है और छोटा नहीं है, सब भाई-भाई हैं—ऐसा समझकर सभी सर्व प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए मिलकर बढ़ें और उन्नति करें। इन सब मनुष्यों का पिता परमात्मा सदा जवान और बलशाली अपने भक्तों की रक्षा करने वाला दुष्टों को दण्ड देकर रुलाने वाला है। इन वायुवत् बलवान् और कर्मण्य मनुष्यों के लिए (पृश्नि) सूर्य आकाश और पृथ्वी सुदुधा गौ के समान अन्न, जल, दूध और सुख देने वाले हों और सूर्य अच्छे दिन प्रकट करने वाला हो

सब मनुष्य सब मनुष्यों को अपना भाई समझें। कोई अपने आपको बड़ा और दूसरे को छोटा न समझे किन्तु यह समझे कि—हम सबका पिता परमेश्वर एक ही है। वह धर्मात्माओं की रक्षा करता और पापियों को दण्ड देता है। जो मनुष्य ऐसा समझेंगे उनको सूर्य, आकाश और पृथ्वी—घी, दूध, अन्न, जल आदि पदार्थ और सर्व प्रकार का सुख सदा देंगे तथा उनके लिए जीवन के सारे ही दिन सुदिन और सुखदायक होंगे।

हम सब मनुष्य ही नहीं किन्तु संसार के सारे प्राणी एक ही पिता के पुत्र हैं इस लिए सब ही भाई-भाई हैं।

वेद कहता है कि—

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसा रमुत स्वसा। अथर्व

अर्थात् कोई भाई भाई के साथ कदापि द्वेष न करे और कोई बहिन बहिन के साथ द्वेष न करे। यदि यह भावना भूमण्डल के सारे मनुष्यों की हो जाय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो सारा भूमण्डल स्वर्ग बन जाय। यह शरीरधारियों का परस्पर सम्बन्ध शरीरों की दृष्टि से है क्योंकि शरीर सबको एक ही पिता परमात्मा ने प्रदान किये हैं। दूसरी भावना आत्मा से आत्मा के सम्बन्ध की है। यजुर्वेद अध्याय ४०, मन्त्र ६ इस प्रकार कहता है—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानु पश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥

जो विद्वान् मनुष्य सर्व प्राणी-अप्राणियों को परमात्मा में देखता अर्थात् अनुभव करता है और सर्व प्राणी-अप्राणियों में परमात्मा को व्यापक देखता और मानता है वह संशय को प्राप्त नहीं होता है। जो मनुष्य यह समझ लेता है कि—हम सब उस परमात्मा में है और हम सब में वह परमात्मा है वह कभी किसी को सन्देह की दृष्टि से नहीं देखता है सबको ही अपना मानता है किसी को पराया नहीं समझता है। यदि यह भावना प्रत्येक मनुष्य के हृदय में हो जाय तो विश्व में सर्वत्र सुख और शान्ति का निवास हो जायगा। किसी कवि ने बहुत ही उत्तम कहा है कि—

जिसका कोई न हो हृदय से उसे लगावे।
प्राणि मात्र के लिये प्रेम की ज्योति जगावे॥
सब में प्रभु को व्याप्त जान सबको अपनावे।
है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे॥

महाकवि शंकर जी ने तो उक्त मन्त्र का भाव स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य बना दिया है—

शंकर स्वामी एक है सेवक जीव अनेक।
यह अनेक हैं एक में, वह अनेक में एक॥

मन्त्र का दूसरा भाव एक और है वह इस प्रकार है कि—प्रत्येक मनुष्य यह भावना बनाये कि—मेरा आत्मा सब आत्माओं के साथ है और सब प्राणी मेरे साथ हैं। मेरा सबके साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। मैं भी सबके लिए कुछ करता हूँ और संसार के मनुष्य ही नहीं अपितु सारे प्राणी मेरे लिये बहुत कुछ करते हैं इसकी व्याख्या बहुत बड़ी हो सकती है। संक्षेप में यह समझना चाहिए कि—मनुष्य के लिए सभी मनुष्य कुछ न कुछ करते हैं किसान अन्न उत्पन्न करता है और उसका उत्पन्न किया हुआ अन्न कुछ कपड़े के बदले, कुछ कपड़े की रंगाई, छपाई और सिलाई के बदले, कुछ सोने के बदले में, कुछ सोने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूषण बनवाने के बदले में, कुछ ईंट चूना, सीमेन्ट, लोहा, लकड़ी और शिल्पियों की शिल्पकारी के बदले में पता नहीं किस-किस प्रकार कहां-कहा कितनी-कितनी दूर पहुँचा। किसका निकाला हुआ सोना, लोहा, तांबा, जस्ता किसका उगाया हुआ अन्न, कपास आदि कितनी दूर किस-किसके पास पहुँचा। कस्तूरी कहाँ से आई और मृगचर्म कहाँ से किसका किसके पास पहुँचा। औषध कहाँ से आई और कहाँ किसके पास पहुँची। किस-किस वृक्ष ने मेरे लिये प्राणप्रद वायु को दिया और किस वृक्ष वा सर्प ने मेरे पास का विषैला वायु खींच लिया। किस-किस पक्षी ने खेतों में अन्नों को नष्ट करने वाले कीड़ों को मारा और मेरे अन्नादि पदार्थों की रक्षा की।

अमेरिका में मेरे लिये कौन क्या-क्या बनाता है और रूस, जापान और जर्मनी में कौन कौन मेरे लिये क्या-क्या बनाते है और क्या-क्या किस-किस के लिए कर रहा है। अभिप्राय यह है कि संसार का कोई प्राणी अकेला अपने आधार पर जीवित नहीं है, सबका सबके साथ किसी न किसी प्रकार से सम्बन्ध है, इसलिए **मैं सब में हूँ और सब मुझ में हैं**। इसको गीता में इस प्रकार कहा है—

सर्व भूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥ गीता ६।२६

सर्व प्राणियों में रहने वाले परमात्मा को और परमात्मा में रहने वाले सर्व प्राणियों को योगयुक्त मनुष्य सर्वत्र समान भाव से देखते हैं। अथवा—सर्व प्राणियों में अपने आत्मा को और अपने आत्मा को सर्वप्राणियों में जो सदा मिला हुआ देखता है वह वास्तव में योगी है।

आत्मौपम्य वा आत्मैकत्व—यजुर्वेद अध्याय ४०, मन्त्र ७ में इस प्रकार कहा गया है—

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः॥

जिस परमात्मा में अथवा ज्ञान-विज्ञान वा धर्म में ज्ञान-दृष्टि से देखने वाले मनुष्य को सब प्राणीमात्र अपने आत्मा के तुल्य ही सुख-दुःख अनुभव करने वाले प्रतीत होते हैं और जो परमात्मा में रहने वाले सारे प्राणियों को अपना आत्मा जानता और मानता है उसको मोह (अज्ञान) और शोक कहाँ हो सकते हैं अर्थात् उसको अज्ञान और शोक कदापि नहीं होते हैं। यदि सृष्टि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के सारे मनुष्य इस एकत्व भाव को अपना लें तो संसार में अज्ञान और शोक का लेश भी न रहे।

गीता में कहा गया है कि—

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।।

अर्थात् विद्या और विनय से युक्त ब्राह्मण, गौ और हाथी, कुत्ते और चाण्डाल इन सबमें जो आत्मा को समान देखते वा मानते हैं वह समदर्शी और पण्डित हैं। सबकी आकृति और प्रकृति में भी प्रत्यक्ष भेद दिखाई देता है पर वही पण्डित और समदर्शी है जो अप्रत्यक्ष आत्मा को इन सबमें समान समझते हैं और किसी को भी कभी नहीं सताते हैं। ऐसे समदर्शी पण्डितों का जहाँ बाहुल्य होगा वहाँ सुख और शान्ति का सर्वत्र राज्य होगा।

यजुर्वेद का जो मन्त्र आत्मौपम्य विषयक ऊपर दिया है उसका भाव गीता में इस प्रकार और भी कहा है—

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ।।

हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने आत्मा के समान अर्थात् अपने आत्मा की उपमा से सब प्राणियों को देखता और यह अनुभव करता है कि—सुख वा दुःख सब प्राणियों को उसी प्रकार होते हैं जिस प्रकार मुझको होते हैं वह मनुष्य मेरे मत में परम योगी है।

महात्मा बुद्ध का भी एक वचन इन मन्त्रों के ही अनुसार है—

यथा अहं तथा एते यथा एते तथा अहम् ।
अत्तानं उपमं कत्वा न हनेय्यम् न घातये ।।

जैसा मैं हूँ वैसे ही ये सब हैं और जैसे ये सब है वैसा मैं हूँ। अर्थात् अपने आत्मा की उपमा करके न मैं किसी का हनन करता हूँ न किसी से घात करता हूँ।

महर्षि वेद व्यास जी ने वेद मन्त्रों को संक्षेप में इस प्रकार कहा—

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।।

धर्म के सर्वस्व और सार को सुनो और सुनकर उसको धारण करो, जो कुछ अपने आत्मा के विपरीत हो उसे दूसरों के साथ कभी न वर्तो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगवान् मनु ने भी कहा है कि—

सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
समं पश्यन्नात्मयाजी स्वाराज्यमधि गच्छति ।।

मनु० अ० १२ श्लोक ९१

सर्व प्राणियों को अपने आत्मा में और अपने आत्मा को सर्व प्राणियों में देखने वाला आत्मयाजी-आत्मयज्ञ करने वाला मनुष्य स्वराज्य को प्राप्त होता है।

वेदों और वेद सम्बन्धी अन्य ग्रन्थों में विश्व-शान्ति का जैसा उत्तम उपाय बताया गया है वैसा अन्य मतों के किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलता है। स्वाध्यायशीलों को इस विषय पर कुछ सामग्री इकट्ठी मिल जाय—इस प्रयोजन से मैं इसी विषय के कुछ और मन्त्र भी यहाँ लिखता हूँ। पाठकगण पढ़ें, पढ़ावें और सुनें, सुनावें, लाभ उठावें तथा अन्यों को लाभ पहुँचावें जिससे विश्व का कल्याण हो। मन्त्र ये हैं— ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १९१, मन्त्र २-३-४

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सञ्जानाना उपासते ।।२।।

परमेश्वर अपने पवित्र ज्ञान वेद द्वारा मनुष्यमात्र को उपदेश और आदेश देते हैं कि—हे मनुष्यो ! आप लोग साथ-साथ मिलकर चलो साथ-साथ मिलकर आपस में वार्तालाप विचार-विनिमय, विचारों का आदान-प्रदान सदा किया करो। आप लोगों के मन साथ-साथ मिलकर अच्छे प्रकार से एक होकर समानभाव से ज्ञान प्राप्त किया करें, जिस प्रकार से आप लोगों से पहिले विद्वान् जन अन्न आदि का समविभाजन और परमेश्वर की उपासना मिलकर करते रहे वैसे ही आप लोग किया करो।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।३।।

सारे मनुष्यों के विचार समान हों, सबकी मिलकर विचार करने के लिए समिति और सभा भी समान हो। सबके मन समान और एकता वाले हों, आपस में भिन्नता न हो, इनके चित्त समान हों,एक दूसरे के साथ हों। मैं सबका साँझा वेदज्ञान देकर आप सबके विचारों को समान बनाने का उपदेश देता हूँ, आप सबके लिए समानता से यज्ञ होमता हूँ अर्थात् यज्ञ में आप सबको समान अधिकार देता हूँ और हवि से सबका पालन-पोषण करता हूँ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह जैसा-जैसा व्यवहार औरों से अपने साथ कराना चाहता है वैसा-वैसा स्वयं दूसरे के साथ करे जिन-जिन व्यवहारों को अपने साथ कराना न चाहे उन-उन व्यवहारों को दूसरों के साथ कभी भी न करे।

समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

आप लोगों की बुद्धि आप लोगों के संकल्प निश्चय सदा सर्वथा समान हों आप सबके मन समान हों (यथा) जिससे वा जैसे आप सबके सर्व (सह सु असति) परस्पर के उत्तम कार्य साथ-साथ अच्छे प्रकार से हो सकें।

ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के ४ मन्त्रों में से ये अन्तिम तीन मन्त्र हैं। **इसी प्रकार अथर्ववेद काण्ड ३, सूक्त ३० के पूरे सातों मन्त्र ये हैं—**

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यंत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥१॥

एक हृदय वाले होना एक मन वाले होना और द्वेष का सर्वथा न होना, मैं आप सबके लिये अपने उपदेश द्वारा करता हूँ। आप सब एक दूसरे को सब ओर से ऐसा प्यार करो जैसा गौ अपने नये उत्पन्न हुए बछड़े से करती है। प्यार के लिये इससे उत्तम उपमा दूसरी हो नहीं सकती है। सबके हृदयों में इस प्रकार का प्यार हो जाय तो अवश्य ही विश्व का कल्याण हो जाय।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥२॥

पुत्र पिता के व्रतों के अनुकूल आचरण करने वाला अर्थात् पिता के शुभ गुणों का अनुकरण और अनुसरण करने वाला हो दुर्गुणों का नहीं। माता के साथ पुत्र का अच्छा मन हो, पत्नी पति के लिये मधुभरी मीठी शान्ति देने वाली वाणी बोले पति भी इसी प्रकार पत्नी से मधुर और शान्तिदायक वचन बोला करे।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसार मुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥३॥

भाई-भाई से कभी द्वेष न करे और बहिन-बहिन से कभी न लड़े। समता-युक्त और साथ-साथ व्रत वाले होकर सबके साथ कल्याणकारिणी वाणी से बोलें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः ।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥४॥

जिससे विद्वान् लोग पृथक्-पृथक् अर्थात् वियुक्त नहीं होते हैं [मिलकर के रहते हैं] और आपस में कभी द्वेष नहीं करते हैं, मनुष्यों को एक मत बना देने के लिए वह वेदज्ञान हम विद्वान् लोग तुम्हारे हृदयों और घरों में देते हैं ।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः ।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोमि ॥५॥

बड़ों वाले (बड़ों की आज्ञा मानने वाले) समझदार लोग आपस में कभी न बिछुड़ें (लड़ें झगड़ें नहीं, पृथक्-पृथक् न हों) मिलकर कर्त्तव्यों के एक धुरे को उठाते हुए, सिद्धि को प्राप्त करते हुए, एक-दूसरे को मधुर और उत्तम बोलते हुए मिलें । मैं तुमको (अपने उपदेश से) साथ-साथ चलने वाले और एक मन वाले बनाता हूँ ।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि ।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥६॥

पानी पीने को तुम्हारी सबकी प्याऊ समान और साँझी हों, अन्नभाग समान और साथ-साथ हो, एक जूए में तुमको साथ-साथ जोड़ता हूँ । रथ के पहिये की नाभि में जिस प्रकार सब ओर से अरे जुड़े रहते हैं इस प्रकार जुड़-मिलकर उन्नति के धुरे को मिलकर उठाओ और सब मिलकर अग्नि(परमेश्वर अग्निहोत्र वा कलाकौशल) का सेवन करो ।

सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान् ।
देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु ॥७॥

अपने वश में करने वाले ज्ञानोपदेश से मैं तुम सबको एक-दूसरे का साथी एक मन वाले और समान भोगों वाले बनाता हूँ । देवों की भाँति अमृत की रक्षा करने वाले होते हुए तुम सब लोगों का प्रातः सायं पारस्परिक सौमनस्य प्रेम और शुभ चिन्तन सदा बढ़ता रहे ।

वेद और वैदिक धर्म विश्वशान्ति के उत्तमोत्तम उपाय बताता हैं । वेदों के पठन-पाठन प्रचार तथा वेदानुकूल आचरण, पारस्परिक वैदिक व्यवहार करने से ही विश्व में सुख और शान्ति की स्थापना हो सकती है दूसरा और कोई उपाय नहीं है । परमेश्वर कृपा करें कि—सारे विश्व के मनुष्य वेदानुयायी बनें, स्वयं सुखी रहें, औरों को सुखी रहने दें । स्वयं खायें, औरों को खाने दें । आप जियें, दूसरों को जीने दें । विश्व में शान्ति हो, विश्व का कल्याण हो ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जन-ज्ञान' की सहायता इस तरह भी करें

१. जब भी आपको चन्दा समाप्ति की सूचना मिले, आप अपना शुल्क तुरन्त भेज दें।

२. वी० पी० पी० की प्रतीक्षा न करें। वी० पी० पी०में आपको १)४० अधिक देना पड़ता है जो न हमें मिलता है न आपको। इसलिए धन मनिआर्डर से ही भेजें।

३. यदि किसी कारणवश आप सदस्य न रहना चाहें तो हमें सूचित तो कर ही सकते हैं। आपके १० पैसे का का कार्ड हमारे धन और समय की रक्षा कर सकता है।

४. मनिआर्डर के कूपन पर अपना पूरा नाम और पता अवश्य लिखें। सदस्य संख्या या "**नया सदस्य**" शब्द भी लिख दें।

५. 'जन-ज्ञान' आपका अपना पत्र है। इसमें जो कमी नजर आए वह हमें बताएँ। हम आपके बल पर इसके द्वारा संसार में आर्य समाज का संदेश फैलाना चाहते हैं। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है— —**व्यवस्थापक**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैया मोहे ला दो, चुनरी रंगदार

मैया मोहे ला दो, चुनरी रंगदार—

ओ३म् नाम का वृक्ष और गायत्री डाली-डाली हो,
सत्य नाम के पुष्प खिलें और वेदशास्त्र हरियाली हो,
भक्ति भाव का निर्मल धागा, सत्संग रंग में डार —
ऐसी चुनरी रंगदार...

ब्रह्म नाम के फल हों सुन्दर, चुनरी के हर कोने में
ओ३म् नाम लिखवा दो उस पर, छूट न जाये धोने में
उपनिषदों के बेल और बूटे, दर्शन की हो किनार—
ऐसी चुनरी रंगदार...

गंगा यमुना और नर्मदा, सरस्वती शिवकाशी हो
पातंजलि जैमिनी महर्षि दयानन्द संन्यासी हो
कणाद और पिपलाद कपिल, सब होंवे दर्शनकार—
ऐसी चुनरी रंगदार—

ऐसी ही चुनरी बंधवादो, जो सब विधि वैभवशाली हो
सत्यं, शिवं, सुन्दरं, उसमें शुद्ध प्रेम की जाली हो,
'विद्याशंकर' इस चुनरी पर न्योछावर सब श्रृंगार
ऐसी चुनरी रंगदार—

—समर्पणानन्द सरस्वती

सूरज सामने है,
अंधेरा जाएगा।
गाड़ी चलती है तो,
मंजिल आएगी।

प्रकाश और गति,
जीवन के लक्षण हैं।
इसलिए गति और प्रकाश को,
लाओ, फैलाओ,
घर-घर में पहुंचाओ।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी आयुर्वेदिक औषधियों के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी

सदा स्मरण रखें

बड़ा सूचि पत्र व एजेंसी नियम मँगाएँ।

व्यवस्थापक-गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी P.O. गुरुकुल काँगड़ी (सहारनपुर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दर्शन दो भगवान

भटक रहीं हूं डगर मगर में, ढूंढ रही तव धाम,
दर्शन दो भगवान ।।

किस ठौर मिलूँ, किस भाँति मिलूँ. मैं तो हूँ निपट अजान,
पग-पग पर है अन्धकार, पथ ढके हुए अज्ञान,
दीप बुझा कर कैसे पाऊँ, मन मन्दिर का ज्ञान,
दर्शन दो भगवान ।।

राह अकेली बढ़ती जाती, सोच-सोच तव ध्यान,
तूफ़ानों में भूल सकूं ना, दो प्रभु यह वरदान,
और निरन्तर चलते-चलते, सुन पाऊं मधु गान,
दर्शन दो भगवान ।।

अपनी वीणा के तारों से सुना सकूं झनकार।
बजा सकूं वह राग मिलन के, झंकृत जीवन तार,
तार-तार में सार तुम्हारा, तरणि तार भगवान,
दर्शन दो भगवान ।।

—राकेश

आप भी हंसिए

१. डाक्टर (एक मरीज को देख कर) : 'यह तो मर गया है ।' मरीज (होश में आकर) : 'मैं तो जीवित हूँ ।
सुनकर मरीज की पत्नी पति से बोली, 'कुछ तो सोच समझ कर बात करो ! इतने बड़े डाक्टर हैं, झूठ बोलेंगे क्या ?

२. एक नेता एक चुनाव आन्दोलन सभा में भाषण देते हुए कह रहे थे, इस बार आप हमें वोट दीजिए । हमारा विरोधी दल आपको काफी धोखा दे चुका है, अब हमें भी अवसर दीजिए ।

३. मरीज : सचसच बताइए डाक्टर साहब, 'मेरे बचने की कितनी सम्भावना है ?'
डाक्टर : 'सौ फीसदी । आंकड़े बताते हैं। कि इस रोग के इन मरीजों में से नौ मर चुके हैं । तुम दसवें हो ।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक आर्य समाज कालेज, स्कूल तथा वाचनालय
और आर्य परिवार में रहना ही चाहिए

वैदिक धर्म सम्बन्धी साहित्य

1. The Arya Samaj it's cult and creed.

आर्य समाज के गौरव, प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा लिखित अनमोल ग्रन्थ, जो प्रत्येक विरोधी विचार वाले व्यक्ति को वैदिक विचारधारा का बनाने की सामर्थ्य रखता है। भेंट के लिए सर्वोत्तम।

सजिल्द, पृष्ठ २७०, मूल्य १०)

Gems of Aryan Wisdom **मूल्य २.५०**

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री लिखित, अंग्रेजी में वैदिक विचारधारा वेद मंत्रों के आधार पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की गई है। शिक्षित वर्ग की आँखें खोलने के लिए अनुपम।

3. Vedic Caste System वैदिक वर्ण व्यवस्था पर आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री लिखित यह पुस्तक अनुपम है। **मूल्य केवल २५ पैसे**

4. **तत्वार्थदर्शी। पृष्ठ २७० सजिल्द** **मूल्य ५.००**

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ईश्वर, जीव, प्रकृति आदि सभी दार्शनिक विषयों पर विद्वान् लेखक ने अत्यन्त सुलझे और प्रभावशाली ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। ग्रन्थ प्रत्येक स्वाध्यायशील के लिए संग्रह योग्य है।

5. **वैदिक इतिहास—विमर्श** **मूल्य ७.२५**

वेद में इतिहास नहीं है, इस विषय पर सबसे अधिक प्रामाणिक ग्रन्थ। विरोधी विद्वानों के मस्तिष्क बदलने में समर्थ आचार्य वैद्यनाथ जी का लिखित,

6. **वैदिकयुग और आदि मानव** 'वैदिक एज में प्रकाशित विचारों का मुँह तोड़ उत्तर : आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की लेखनी से।

सजिल्द मूल्य ४.००

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित
आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा सम्पादित
अंग्रेजी में आर्य समाज के एक मात्र मासिक
VEDIC—LIGHT
के सदस्य बनिए
नमूना पत्र लिखकर बिना मूल्य मंगाइये
वार्षिक मूल्य १०), विदेश में १ पौंड

प्रकाशन विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चिन्तन

—रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य कौन है ?

'आर्य' न जाति है न धर्म, फिर वह क्या है और क्या है उसका अर्थ ? उत्तर जानने हेतु लेख पढ़िए।

आर्य शब्द का अर्थ निरुक्त में "ईश्वर पुत्र" दिया है जिसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर के सच्चे पुत्रों को "आर्य" नाम से सम्बोधित किया जाता है। एक पिता के अनेक पुत्र होते हुए भी उसकी आज्ञा पर चलने वाले सदाचारी विनम्र पुत्र को ही वास्तविक पुत्र कहा जाता है। ऐसे ही यद्यपि मनुष्य मात्र ईश्वर के पुत्र हैं तथापि आर्य अर्थात् सदाचारी पुरुषों को ही "ईश्वर पुत्र" का नाम दिया जाता है।

प्राचीन ग्रन्थों में 'आर्य' शब्द

वेद

(१) आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि (ऋग्वेद १०-६५-११)

(२) कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (ऋग् ०७।१।३०)

(३) विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् (१-४-१०-८)

इन मन्त्रों में सत्य, अहिंसा, पवित्रतादि उत्तम व्रतों को धारण करने वाले को "आर्य" कहा गया है और सारे संसार को इस प्रकार आर्य (श्रेष्ठ) बनाने का उपदेश है।

(४) आर्य वृत्त (गौतम धर्म सूत्र १६।६६)

सदाचारी के अर्थ में 'आर्य' शब्द है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाल्मीकि रामायण

(५) सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभि ।
आर्य, सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ।। (१-१-१६)

श्री रामचन्द्र जी सदा सत्पुरुषों के सहयोग में इस प्रकार वर्तमान रहते थे जैसे समुद्र नदियों से सदा मिला रहता है तथा वे 'आर्य' थे, समदृष्टि रखते थे, सबके प्रिय थे।

यहाँ सज्जनता से पूर्ण श्री रामचन्द्र जी को 'आर्य' कहा है।

विदुर नीति

(६) आर्यकर्माणि रज्यन्ते भूतिकर्माणि कुर्वते ।
हितं च नाभ्यसूयन्ति पंडिता भरतर्षभ ।।
न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं,
नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः,
दत्वा न पश्चात्कुरुतेऽनुतापं,
स कथ्यते सत्पुरुषार्यशीलः ।। (१-३०-१-११८)

इन वचनों में अत्यन्त धार्मिक को 'आर्य' कहा है।

चाणक्य नीति

(७) अभ्यासाद् धार्यते विद्या, कुलं शीलेन धार्यते ।
गुणेन ज्ञायते त्वार्यः, कोपो नेत्रेण गम्यते ।। (५-८)

यहाँ गुणी जन को 'आर्य' कहा है।

महाभारत

(८) स बाल एवार्यमतिर्नृपोत्तमः (आदि पर्व ४०-७)

इस वचन में उत्तम राजकुमार के साथ 'आर्य मति' विशेषण लगाया है जो श्रेष्ठ बुद्धि वाले के अर्थ में है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र

(९) व्यवस्थितार्यमर्यादः, कृतवर्णाश्रमस्थितः ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य मर्यादाओं को जो व्यवस्थित कर सके वह राज्याधिकारी है यहाँ ऐसा बताया गया है।

गीता

(१०) कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्य जुष्टस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन॥
(द्वितीय अध्याय—२।२)

यहाँ युद्ध में सन्नद्ध कायरता को प्राप्त हुए अर्जुन की वृत्ति को 'अनार्यों' की वृत्ति कहा है। इससे आर्य का अर्थ श्रेष्ठ का होता है।

धम्मपद

(११) अरियप्पवेदिते धम्मे सदा रमति पंडितो।

पंडित जन सदा आर्यों के बतलाये धर्म में रमण करता है।

न तेन अरियो होति येन पाणनि हिंसति।
अहिंसा सव्व पाणानंअरियोति पवच्चति। (२७०-१५)

प्राणियों की हिंसा करने से कोई आदमी 'आर्य' नहीं होता। जो किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करता वही 'आर्य' होता है।

आर्य शब्द और प्राचीन कोष

शब्द कल्पद्रुम

मान्यः उदारचरितः, शान्तचित्तः, न्यायपथावलम्बी, प्रकृताचारशीलः सततकर्त्तव्यकर्मानुष्ठाता यदुक्तम् "कर्त्तव्यमाचरन् कार्यम् अकर्त्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचरे स तु आर्य इति स्मृतः।" धार्मिकः धर्मशीलः। यथाह मनुः आर्यरूपमिवानार्य कमभिः स्वैर्विभावयेत्। १०।५७

मान्यः— जो अपने उत्तम गुणों के कारण सम्मान के योग्य हो।

उदारचरितः—जिनका चरित्र उदार हो। जिसके व्यवहार के अन्दर उदारता पाई जाय। जिसके भीतर संकीर्णता न हो किन्तु जिसका हृदय विशाल हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्तचित्त:—जिसका चित्त शान्त हो ।

न्यायपथावलम्बी—जो सदा न्याय के पथ पर चलने वाला हो । जो कभी भूलकर भी अन्याय का अनुसरण न करे ।

प्रकृताचारशील:—जिसका आचार और स्वभाव शास्त्रीय आज्ञाओं के अनुकूल हो ।

सततकर्त्तव्यकर्मानुष्ठाता—जो करने योग्य कार्यों को निरन्तर करने वाला हो । इसलिए प्राचीन ऋषियों ने कहा है कि जो पुरुष उत्तम कार्यों को करने वाला हो और बुरे कार्य को कभी न करे उसे आर्य कहते हैं । आर्य का अर्थ धर्मात्मा है ।

(१) माहाकुल कुलीनार्य सभ्य सज्जन साधन: । (अमर कोश)

जो आकृति-प्रकृति, सभ्यता-शिष्टता, धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार तथा शील स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे "आर्य" कहते हैं ।

(२) आर्य:—अर्तुं प्रकृतभाचरितुं योग्य:

अर्थात् शास्त्रोक्त उत्तम मार्ग पर चलने वाला 'पूज्य: श्रेष्ठ' इति । शब्द रत्नावली नामक संस्कृत कोष में आर्य अर्थ के पूज्य और श्रेष्ठ बतलाए गए हैं । 'संगत इत्यजय: अजय' नामक कोषकार ने आर्य का अर्थ संगत बताया है अर्थात् जिसके सिद्धान्त और व्यवहार बुद्धि संगत हों जिसके विश्वास और आचरण में परस्पर विरोध न हो । (पृष्ठ १९०)

पाश्चात्य विद्वानों की 'आर्य' शब्द की व्याख्या

A tall fair skinned, long headed race whose origin is still doubtful though it was probable in Central Asia and who spread in pre-historic times over the whole of Europe and parts of Asia and Africa. Almost all modern Europeans are of Aryan descent. The family also called Indo-European or Indo-Germanic but these names are open to objections from which the terms "Aryan" is free. (Harmsworth History of the World) (P. 328)

Pears' Cyclopedea.—

अंग्रेजी के Pears' Cyclopedea के General Information प्रकरण में 'आर्य' का अर्थ इस प्रकार दिया हुआ है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Arya—The word "Arya" derived from the Sanskrit, means an honourable lord of the soil'! अर्थात् संस्कृत के आर्य शब्द का अर्थ भूमि के माननीय स्वामी का है।

Gentleman :—अंग्रेजी में आर्य शब्द का पर्यायवाची Gentleman समझा जाता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक एमर्सन ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है :—

Whoever is open, loyal, true, of humane, and affable demeanor, honourable himself, and in his judgement of others, faithful to his word as to law and faithful alike to God and man, such a man is a true gentleman.

The flowering of civilization is the finished man—the man of sense, of grace, of accomplishment, of social power—the gentleman. (Emerson).

अर्थात् वही व्यक्ति सभ्य और आर्य होता है जो उदार, निष्ठावान्, सत्य-प्रेमी, दयालु और सरल हो, जो अपनी दृष्टि में स्वयं ऊँचा उठा हो और दूसरों का सम्मान करता हो। जो अपनी बात का धनी हो, जो परमात्मा और मनुष्य के प्रति सच्चा हो।

सुसंस्कृत मनुष्य वही होता है जो बुद्धिमान् हो, सुन्दर गुणों से अलंकृत हो और सामाजिक शक्ति सम्पन्न हो। (इमर्सन)

ऋषि दयानन्द सरस्वती और आर्य शब्द—

ऋषि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने अर्वाचीन काल में आर्य शब्द को उसके वास्तविक उच्च स्थान पर बिठाने का यत्न किया है, वेद भाष्य में "अहं भूमिमददामार्याय" पर जिसमें परमात्मा का आदेश है कि मैं भूमि का राज्य आर्य के लिए देता हूँ लिखते हुए आर्य शब्द की निम्न व्याख्या की है :—

आर्याः श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव युक्ता मनुष्याः। अर्थात् जो श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाले मनुष्य हैं वे ही आर्य संज्ञा के संज्ञी हैं।

गुण—

विद्या, विनय, प्रेम-व्यवहार, चातुर्य, योग क्षेम, प्रकृति का ज्ञान और उसके गुणों की पहचान, उनसे लाभ उठाने का सदैव ध्यान, समयानुकूल कार्य करना, जीव और मृत्यु की व्यवस्था को जानकर अधिक शोक, हर्ष में न पड़ना और ईश्वर आज्ञा भंग से डरना इत्यादि गुण हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्म—

इन गुणों के प्रसार में सदा उद्योग, इनकी वृद्धि के निमित्त तन, मन, धन का उपयोग, इसके उपाय के लिए सज्जन, गंभीर और उदार पुरुषों का सहयोग इत्यादि कर्म हैं।

स्वभाव—

प्रकृति, सौन्दर्य, ओजस्वी, तेजस्वी, वचस्वी, सहनशील, परहित विचार, स्वार्थ के वश होकर दूसरों के अपकार का भी ध्यान न आना इत्यादि स्वभाव हैं।

यह ठीक है कि उक्त गुण कर्म और स्वभाव से सम्बन्ध रखने वाले नियमों का सर्वांग में तो विकास नहीं होता तथापि जितने अंश में जिस भी समाज में इन गुणों का विकास होगा वह समाज उतनी ही खुशहाली की निराली आभा से चमकेगा।

'ऋ, गतौ', इस धातु से आर्य शब्द सिद्ध होता है जिसके अर्थ ज्ञान, गमन, प्राप्ति हैं। जिस मनुष्य का ज्ञान निर्दोष और उसके अनुकूल आचरण हो तो वह मनुष्य ''आर्य पद'' का अधिकारी है।

श्री अरविन्द घोष की 'आर्य' की सुप्रसिद्ध व्याख्या—

श्री अरविन्द घोष ने अपने सुप्रसिद्ध What is significance of the name of Arya लेख में 'आर्य' शब्द की बड़ी विशद व्याख्या की है। व्याख्या का मुख्यांश इस प्रकार है :—

The word Arya expressed a particular ethical and social ideal, an ideal of well-governed life, candour, courtesy, nobility, straight-dealing, courage, gentleness, purity, humanity compassion protection of the weak, liberality, observance of social duty, eagerness for knowledge, social accomplishment, there is no word in human speech that has a nobler History.

The Arya is he who strives and overcomes all outside him or within him that stand opposed to the human advance.

In every thing, he seeks truth, in every thing right, and freedom.

Arya Vol, I p. 61

अर्थात् 'आर्य' शब्द से एक सामाजिक तथा नैतिक आदर्श का, एक मर्यादित जीवन का, उदारता, नम्रता, सज्जनता, सरलता, साहस, सौजन्य, पवित्रता,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानवता, निर्बलों की सहायता, सामाजिक कर्त्तव्यों का अनुष्ठान, ज्ञान प्राप्ति की उत्कण्ठा इत्यादि गुणों का बोध होता है।

वस्तुतः मानवीय भाषा में अन्य कोई शब्द नहीं जिसका इतिहास इस शब्द से उच्च हो।

मनुष्य किसे कहते हैं ?

मननशील व्यक्ति को मनुष्य कहते हैं। मननशील व्यक्ति का यह स्वभाव होता है कि वह हिताहित, सत्यासत्य न्याय-अन्याय, हानि-लाभ का विचार करके आचरण करता है।

जो व्यक्ति विनय, विवेक और विचार से युक्त और वैर; विरोध विकार से मुक्त होता है वास्तव में वही मनुष्य वा आर्य कहलाये जाने योग्य है।

आर्य कोई भी हो सकता है—

आर्य संज्ञा वाले पुरुष किसी एक स्थान, किसी एक समाज या किसी एक जाति में नहीं होते प्रत्युत सर्वत्र पाए जाते हैं। इन्हीं के पुण्य प्रताप से सत्य भाषणादि गुणों से मनुष्य समाज का उत्थान होता है। ऐसे लोग प्रदर्शन के बन्धन से दूर रहने में अपना हित जानते और प्रशंसा के सामने आते ही अपना मुँह दूसरी ओर फेर लेते हैं। चुपचाप अपना कार्य करते हुए चुपचाप ही इस संसार से कूच कर जाते हैं, परन्तु संसार के लिए उन्नति और गौरव की सामग्री छोड़ जाते हैं। ये लोग प्रत्येक अच्छे कार्य को यज्ञ के रूप में करते हैं। अच्छे गुणों के स्वामी बनने और उनका व्यवहार में लाने पर भी अभिमान या घमण्ड से दूर रहते हैं।

आर्य और दस्यु—

यह वेद का उपदेश है "मनुष्यो तुम आर्य और दस्यु की पहचान करो।"

जो समाज इस परीक्षा में जितना सफल सिद्ध होगा वह उतना ही सुखी और जितना असफल सिद्ध होगा उतना ही दुःखी होगा। वेद का सार्वभौम नियम सदैव सर्वत्र समान रूप से रहता है इस नियम का सहारा पाकर मनुष्य-समाज, जाति व देश उन्नत और इससे हटकर अवनत होते देख गये हैं।

आर्यत्व का बीज प्रत्येक मनुष्य के भीतर समान रूप से विद्यमान होता है। यह बीज अनुकूल वातावरण से मनुष्य को अनार्यत्व की ओर और प्रतिकूल वाता-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वरण से अनार्यत्व की ओर ले जाता है। व्रत संगी को आर्य और व्रत भंग करने वाले को दस्यु कहा गया है। सत्यभाषाणादि आत्मा के उत्तम गुण हैं जिनके पालन करने को व्रत और भंग करने वाले को अव्रत कहते हैं। अतः मनुष्य को शुभ व्रतों और प्रत्येक प्रकार के कष्ट और बलिदान पर अपने व्रतों पर अटल रहने वाला होना चाहिए तभी आर्य संज्ञा प्राप्त हो सकती है।

आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य—

संगठित रूप से वेदों के प्रचार और विश्व को आर्य बनाने के महान् उद्देश्य को लक्ष्य में रख कर ही आर्य समाज की स्थापना हुई थी। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक है कि अपने को आर्य शब्द के ठीक-ठीक भाव में आर्य बनाने का यत्न करे और सदैव आत्म-निरीक्षण के द्वारा देखता रहे कि मैं अपने यत्न में कहाँ तक सफल व असफल हो रहा हूँ। अपने अन्दर जो अनार्यत्व हो उसे शीघ्र दूर करके प्रत्येक आर्य को आर्य शब्द की संज्ञा को सार्थक करना चाहिए। उसकी मनोवृत्ति ऐसी बन जानी चाहिये कि उसके जीवन के व्यवहार में आर्य शब्द का गौरव कभी कम न होने पाए।

क्या केवल संध्या हवन इत्यादि करना आर्यत्व का द्योतक है?

जो व्यक्ति नित्य सन्ध्या और हवन करता हो, आर्य समाज में जाता हो, समय-समय पर दान देता हो और वेदों का स्वाध्याय करता हो उसके लिए प्रायः कहा जायगा कि उसका आर्य जीवन है। यह तो आर्य जीवन का केवल एक पक्ष है, यद्यपि आवश्यक पक्ष है। इससे भी अधिक आवश्यक एक और पक्ष है।

पौराणिक जगत में जो पुरुष नित्य प्रातःकाल उठता है, संध्या, गायत्री या किसी विशेष देवता की स्तुति करता है या समयानुकूल यज्ञ करता है उसको लोग कर्मकाण्डी कहते हैं चाहे उसका अन्य जीवन कैसा भी क्यों न हो? ऐसे पण्डित और कर्मकाण्डी सज्जन बहुत से मिलेंगे जिनका अधिकाँश जीवन जप; तप तथा यज्ञ की भेंट हो जाता है परन्तु उनके शेष जीवन से धार्मिकता प्रकाशित नहीं होती। ऋषि दयानन्द ऐसे जीवन को कर्मकाण्डी न कहकर पाखण्डी कहते हैं। पाखण्ड क्या है? रूढ़ियों को मनाना और उनके तत्व को ग्रहण न करना। इसी प्रकार जो पुरुष केवल संध्या हवन आदि अनुष्ठान करता है परन्तु उसके शेष जीवन पर उसका प्रभाव न हो तो वह आर्यत्व का द्योतक नहीं है। वह तो उसी प्रकार का आर्य जीवन रखने वाला समझा जायगा जैसा कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खिलौने का ग्राम या काठ का हाथी। ऋषि दयानन्द का मत है कि जीवन में साम्प्रदायिकता न हो वही वास्तविक आर्य जीवन है। ऋषि ने कहा कि धर्म को सम्प्रदाय बना देने से आर्यों में भी वे दोष आ जायेंगे जो अन्यों में हैं। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में ६६६ मतों का वर्णन करते हुए धर्म के मुख्य तत्वों पर बल दिया है। प्रत्येक आर्य को उचित है कि वह साम्प्रदायिकता के दोषों से बचे और अपने जीवन में धर्म के तत्वों को धारण करे।

आर्यत्व की वास्तविक पहचान—सच्चा आर्य कौन है ? उसकी पहचान संध्या हवन तथा यज्ञों के करने से, मूर्तिपूजा और श्राद्ध न करने से, सब के साथ खा लेने से, जात-पांत तोड़ कर विवाह करने से, वेदों के पढ़ते रहने से, नित्य प्रचारार्थ व्याख्यान देने, लेखों के लिखते रहने और दान देते रहने से नहीं हो सकती। ये तो बाह्य चिह्न हैं और सरल काम हैं। वास्तविक पहचान उसके आर्योचित व्यवहार से ही हो सकती है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या आर्य समाज के सदस्य का व्यवहार अपने तथा परायों के साथ धार्मिक है ? क्या उसके व्यवहार से उसकी स्त्री, माता-पिता, बच्चे, नौकर-चाकर और हितू-बान्धव संतुष्ट हैं ? उसकी धर्म-पत्नी को उसके व्यवहार के प्रति कोई शिकायत तो नहीं है ? यदि उसके माता-पिता वृद्ध हैं तो क्या वह उनके साथ ऐसा व्यवहार करता है जिससे उनको प्रसन्नता हो कि हमारे बच्चे का आर्य समाज के सम्पर्क में आना हितकर हुआ ? यदि वह आर्य दुकानदार है तो क्या उसके ग्राहक उस पर अन्य दुकानदारों की अपेक्षा शुद्ध व्यवहार के लिए अधिक भरोसा रखते हैं ? क्या उसके मुहल्ले वालों को पता है कि उसके आर्य होने के कारण उनको अधिक आराम पहुँच रहा है।

यदि वह किसी सर्विस में हैं तो क्या उसके मालिक वा अफ़सर यह समझते हैं कि वह आर्य समाज का सदस्य है अतः वह अवश्य स्वामिभक्त, ईमानदार और परिश्रमी होगा ? क्या मुहल्ले की देवियां समझती हैं कि उसकी शरण में उसका किसी प्रकार का अहित न होगा ? इन प्रश्नों से धर्म के कतिपय तत्वों का आभास मिलता है जिनकी ऋषि ग्रन्थों और वेदों में पूरी-पूरी व्याख्या दी गई है और जिनके केवल जानने से नहीं वरन् आचरण से ही आर्यत्व प्राप्त होता है। तभी तो वेद कहता है :—

आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि। (ऋग् १०।६५।११)

अर्थात् आर्य वे कहलाते हैं जो इस पृथ्वी पर सत्य, अहिंसा परोपकार, पवित्रतादि उत्तम व्रतों को विशेष रूप से धारण करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आचार्य जगदीश विद्यार्थी एम० ए०

स्वास्थ्य शत्रु : अण्डा

क्या अण्डा मनुष्य का भोजन है ? या इसे खाकर हम मनुष्य रह सकते हैं ?

स्वास्थ्य एवं भोजन का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। 'चरकसंहिता' में ठीक ही कहा है—

त्रय उपस्तम्भा इत्याहाराः स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति ।

—चरक० सूत्रस्थान ११।३४

शरीर रूपी भवन तीन स्तम्भों पर खड़ा हुआ है। वे तीन स्तम्भ हैं—१. आहार २. निद्रा और ३. ब्रह्मचर्य।

इन तीन स्तम्भों में भी भोजन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। वस्तुतः आहार ही जीवन है। भोजन से शरीर हृष्ट-पुष्ट एवं बलवान् बनता है। स्मरण-शक्ति बढ़ती है, आयु दीर्घ होती हैं, उत्साह एवं धैर्य की वृद्धि होती हैं, सामर्थ्य बढ़ता है, शरीर का वर्ण, कान्ति और शोभा बढ़ती है।

भोजन शरीर के लिए आवश्यक है परन्तु 'क्या खायें और क्या न खायें', इस विषय में हमें वेद की आज्ञा देखनी होगी क्योंकि—

धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः । —मनु० २।१३

धर्म को जानने की इच्छा करने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण है।

आइए, हम वेद के पृष्ठ उलटें। अथर्ववेद में अण्डे खाने का जोरदार शब्दों में खण्डन किया गया है। देखिए—

य आमं मांसमन्दति पौरुषेयं च ये क्रविः ।
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि ।।

—अथर्व०८।६।२३।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(य ग्राम मांसं ग्रदन्ति) जो लोग कच्चा मांस खाते हैं, (ये च) ग्रौर जो (पौरुषेय क्रविः) मनुष्य का मांस खाते हैं तथा जो (केशवाः) लम्बे-लम्बे, सुन्दर बाल रखने वाले [वर्तमान युग के जैण्टलमैन][1] (गर्भान् खादन्ति) गर्भों=ग्रण्डों को खा जाते हैं (तान्) उन दुष्ट लोगों को (इतः) यहाँ से=मनुष्य समाज से (नाशयामसि) नष्ट कर देना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद में ग्रण्डों का सेवन करने वाले व्यक्तियों के लिए कठोर दण्ड का विधान है।

वेद की मर्यादाएँ गुप्तकाल तक चलती रहीं। प्रसिद्ध यात्री फाह्यान ने ग्रपने यात्रा विवरण में लिखा है—

"सारे देश में कोई ग्रधिवासी न हिंसा करता है, न मद्य पीता है ग्रौर न लहसुन-प्याज ही खाता है। जनपद में न तो लोग सूग्रर ग्रौर मुर्गी पालते हैं, न कहीं सूनागार (बूचड़खाना, मांस विक्रय की दुकान) हैं, न मद्य की दुकानें।"

प्राचीन भारत में मद्य, मांस, अण्डे ग्रादि का प्रयोग नहीं होता था। मांसाहार ग्रौर ग्रण्डे ग्रादि का सेवन मुसलमानों के संसर्ग से भारतीयों में प्रचलित हुग्रा।

ग्राज सर्वत्र ग्रण्डे खाने का प्रचार हो रहा है। ग्राज स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों में ग्रण्डों की प्रशंसा में लेख लिखे होते हैं। ग्रनेक डाक्टर ग्रण्डा खाने का प्रचार करते हैं। डाक्टरों का कहना है कि ग्रण्डे में ए. बी. सी. डी. सभी प्रकार के विटामिन्स पाए जाते हैं। उनका यह भी कहना है कि एक ग्रण्डे में एक सेर दूध के बराबर बल ग्रौर शक्ति होती है। इतना ही नहीं, ग्रब तो डाक्टर लोग यहाँ तक कहने लगे हैं कि अण्डे में जीव नहीं होता ग्रतः ग्रण्डा खाने से जीव हिंसा का पाप भी नहीं लगता ग्रतः ग्रण्डे खूब खाने चाहिएँ।

ग्राइए, डाक्टरों की इन ऊल-जलूल बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें। भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है—एक धर्मशास्त्रोक्त ग्रौर दूसरा वैद्यक शास्त्रोक्त पहले धर्म शास्त्रोक्त को लीजिये—

ग्रभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवानि च ॥—मनु० ५।५

---

१. वेद में बहुत ही स्वाभाविक रीति से वर्तमान युग के जैण्टलमैनों का चित्रण किया गया है। किसी कवि ने ग्राजकल के जैण्टलमैनों का चित्रण यूं किया है—

कोटं च पतलूनं च मुखे चुरटमेव च।
हैटबूटसमायुक्तो जैण्टलमैनलक्षणम् ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को विष्ठा-मूत्रादि के संसर्ग से मलिन देशोत्पन्न शाक तथा फल-मूल आदि नहीं खाने चाहिएँ।

इसी प्रकार—

वयेर्जन्मधुमांसं च ॥ —मनु० २।११७

मद्य और मांस आदि का सेवन छोड़ देना चाहिए।

वेद आदि शास्त्रों में अण्डे को अभक्ष्य कहा गया है अतः यह मनुष्य का भोजन नहीं है।

अब वैद्यकशास्त्र के दृटिकोण से देखिए—

बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते ।

—शार्ङ्गधर अ० ४ श्लोक २१

जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले, शारीरिक और मानसिक हानि पहुँचाने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें :

इस दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो अण्डा मनुष्य का भोजन नहीं है। अण्डा क्या है ? रज और वीर्य का सम्मिश्रण। क्या ऐसे गन्दे और दुर्गन्धयुक्त पदार्थ मनुष्य के भोजन हो सकते हैं ? कदापि नहीं। अण्डे की उत्पत्ति रज और वीर्य से होती है। यह मल एवं मूत्र द्वार से बाहर आता है। "कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः" (वैशेषिक दर्शन २/१/२४) इस सिद्धान्त के अनुसार कार्य में वही गुण होते हैं जो कारण में पाये जाते हैं। उदाहरण के रूप में गोधूम=गेहूँ में जो गुण हैं वे ही उसके बने पदार्थों रोटी, दलिया आदि में होते हैं। अन्य पदार्थों को उसमें मिलाने से उन पदार्थों के गुण-दोष भी उनमें आ जाते हैं। समस्त संसार में अण्डे प्रायः मुर्गियों के ही खाये जाते हैं और मुर्गी संसार भर के गन्दे-से-गन्दे पदार्थों को खा जाती है। मुर्गियाँ थूक, खकार, रैंट, विष्ठा और कीड़े-मकोड़े आदि सभी को चट कर जाती हैं। ऐसे भ्रष्ट पदार्थों को खाने वाले मुर्गे-मुर्गियों के रज-वीर्य भी वैसे ही दूषित होंगे। आश्चर्य है कि लोग इनके अण्डे और बच्चों को खा जाते हैं।

अण्डे और विटामिन—अण्डों में ए. बी. सी. डी. विटामिन होने की दुहाई दी जाती है। मुर्गी थूक, खकार, नाक का मल और टट्टी आदि खाती हैं अतः इनमें भी ये सभी विटामिन होने चाहिए। यदि इनमें विटामिन नहीं हैं तो मुर्गी के अण्डों में भी विटामिन नहीं हो सकते और यदि इनमें विटामिन हैं तो फिर अण्डे खाने की कोई आवश्यकता नहीं है। विटामिनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का भण्डार तो रज, वीर्य, थूक, खकार, विष्ठा, दुर्गन्धयुक्त गले-सड़े पदार्थ हुए, इन्हें घर से बाहर फेंकने की बजाय खा लेना चाहिए। ऐसा करने से मुर्गी आदि के प्राण बच जायेंगे और मांसाहारियों के विटामिन्स की पूर्ति बिना हिंसा के ही हो जायेगी।

कुछ लोग अण्डों में प्रोटीन होने की बात कहकर अण्डे खाने पर बल देते हैं। ऐसे लोगों की सेवा में निवेदन है कि आवश्यकता से अधिक प्रोटीन का सेवन करने से जोड़ों का दर्द, कैंसर अमाशय के जख्म=Gastric Ulcer आदि अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

अण्डे श्लेष्मा=कफ उत्पन्न करने वाले पदार्थ हैं। अण्डा अत्यधिक Acidic Diet=अम्ल उत्पन्न करने वाला भोजन है जब कि हमारे शरीर के लिए क्षार गुणयुक्त भोजन की आवश्यकता है। अतः अण्डों के सेवन से शरीर में विटामिन्स की कमी हो जाती है। अण्डे में प्रोटीन (protein) होते हैं परन्तु वे ऐसे मिश्रित होते हैं कि उनको पचाना बड़ा कठिन होता है। अण्डों का सेवन शरीर के रस-स्राव प्रबन्ध को सुस्त कर देता है फलतः जठराग्नि मन्द हो जाती है, पाचन-संस्थान निर्बल हो जाता है और भोजन का परिपाक ठीक रूप से नहीं हो पाता। इस प्रकार अण्डे लाभदायक नहीं अपितु हानिकारक हैं।

अण्डा और वीरता—लोगों में ऐसी धारणा फैली हुई है कि अण्डे खाने से वीरता आती है, अण्डे बल और शक्ति का स्रोत हैं परन्तु यह धारणा सर्वथा मिथ्या एवं निर्मूल है। अण्डे और वीरता का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। बल, शक्ति और वीरता तो शाकाहार में ही है। हाथी शाकाहारी है। शेर भी उस पर सहसा आक्रमण करते हुए डरता है अतः सम्मुख न होकर पीछे से आक्रमण करता है। बन्दर और लंगूर दोनों ही शाकाहारी हैं। क्या लंगूर जैसी छलांग[1] लगाने की शक्ति किसी मांसाहारी प्राणी में पाई जाती है।

मास्टर चन्दगीराम ने दो बार सन् १९६८ और ६९ में 'भारत केसरी' उपाधि प्राप्त कर मांसाहारियों पर शाकाहारियों की विजय की दुन्दुभि बजा दी है। जिस समय मा० चन्दगीराम मेहरदीन के मुकाबले में अखाड़े में उतरे तो वे मेहरदीन के समक्ष बालक से लगते थे। मांसाहारी आरम्भ में ५-१० मिनट तो खूब उछल-कूद करता है परन्तु फिर उसका दम फूल जाता है और

---

१. लंगूर के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि लंगूर छलांग लगाकर अपने अभीष्ट स्थान पर न पहुँच सके तो बीच से ही उलट कर अपने स्थान पर वापस आ जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह हांफने लगता है। मेहरदीन भी आरम्भ में खूब जोश के साथ लड़ा। ३५ मिनट तक घोर संघर्ष हुआ परन्तु अन्त में चन्दगीराम ने अपने भार से १६० पौण्ड भारी मेहरदीन को मिट्टी सुंघा दी। दूसरी बार मेहरदीन को पुनः परास्त कर मा० चन्दगीराम ने यह सिद्ध कर दिया कि "घृतं वै बलम्"—घी में ही बल है अण्डे और मांस में नहीं। शक्ति आत्म-संयम में है।

इस सम्बन्ध में मुझे आर्यसमाज के संस्थापक, निरामिष-भोजी महर्षि दयानन्द के जीवन की एक घटना स्मरण हो आई है, जिसे लिखने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता।

शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा विमल व्योम में अपनी चन्द्रिका छिटका रहा था। शीत अपना साम्राज्य जमाये हुए था। ऊपर से चन्द्रमा शीतलता की वृष्टि कर रहा था तो नीचे गङ्गा की रेती शीत उगल रही थी। ऐसी शीत-रात्रि में महर्षि दयानन्द कर्णवास में गङ्गा के दूसरे तट पर गङ्गा की सिकता पर आसन लगाये हुए समाधिस्थ थे। जैसे चाँदी की विशाल शिला पर तप्त-स्वर्ण की प्रतिमा विराजमान हो उसी प्रकार दिव्य दयानन्द का देह बालू पर देदीप्यमान हो रहा था। ऐसे समय में, दो अंग्रेज आखेट के लिए उधर आ निकले। एक तो उनमें बदायूं का कलक्टर था और दूसरा उसका मित्र कोई पादरी था। वे दोनों उस संन्यासी को कोपीन मात्र धारण किये हुए, गङ्गा की ठण्डी बालुका में बैठा देखकर आश्चर्य में निमग्न हो गये और बहुत देर तक टकटकी लगाये हुए उनकी ओर देखते रहे। जब ऋषि ने आँखें खोलीं तो कलेक्टर महोदय कहने लगे—"हमें बड़ा आश्चर्य है कि आप गङ्गा के तट पर, ठण्डी बालुका पर रात्रि के समय, केवल एक लंगोट लगाये हुए ऐसे शीतकाल में बैठे हैं, क्या आपको सर्दी नहीं लगती ?" स्वामीजी उत्तर देने ही लगे थे कि उनका पादरी मित्र बोल उठा—"ये अण्डे और मांस आदि पौष्टिक पदार्थ खा-खाकर मुटा गये हैं, इन्हें जाड़ा कैसे लग सकता है ?" स्वामी जी ने हँसकर कहा—"हम दाल-रोटी के खाने वाले क्या माल खा सकते हैं ? बहुत जोर लगाया तो कुछ दूध पी लिया। माल तो आप खाते हैं, मांस और अण्डे उड़ाते हैं, मदिरा भी पी जाते हैं। यदि शीत का लगना न लगना मांस-अण्डे खाने पर ही निर्भर है, तो आइए, वस्त्र उतार कर थोड़ी देर मेरे साथ बैठ जाइए।" महर्षि के ऐसा कहने पर वह लज्जित हो गया और विषय बदल कर कहने लगा—"अच्छा तो फिर आपको शीत न लगने का क्या कारण है ?" स्वामीजी ने कहा—'इसका मुख्य कारण अभ्यास है। आपका मुख सदा खुला रहता है इसलिए उसे ढकने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की इस समय भी आपको आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।" कलेक्टर ने अपने मित्र को आगे कुछ कहने से रोक दिया और वे दोनों नमस्कार करके चले गये।

'निरामिष भोजन मनुष्य को शारीरिक अथवा मानसिक रूप में निर्बल बनाता है' इस विचार को मस्तिष्क से निकाल देना चाहिए। इस विषय में गांधीजी ने ठीक ही लिखा है—

The greatest Hindu Reformers have been the activest in their generation and they have invariably been vegetarians. Who could show greater activity than say Shanker or Dayanand in their times ?

Young India, 7 Nav. 1926

सबसे महान् हिन्दू सुधारक अपने युग में सबसे अधिक चुस्त हुए और वे सभी शाकाहारी थे। शंकर अथवा दयानन्द से बढ़कर अपते समय में किसने अधिक प्रगतिशीलता और चुस्ती दिखाई ?

अण्डा हिंसा और अहिंसा की कसौटी पर—कुछ लोगों का विचार है कि अण्डे और मछलियाँ मांस नहीं हैं। इन लोगों का यह भी कहना है कि अण्डे में जीव नहीं होता और मछलियाँ तो जल तोरियाँ हैं। मछलियाँ तो चलते-फिरते जन्तु हैं फिर इनमें जीवन क्यों नहीं ? मछली का मांस भी अभक्ष्य है और सबसे खराब होता है। मछली का तेल Fish Liver Oil भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यदि अण्डे पक्षियों का गर्भ नहीं तो क्या गाजर-मूली की भांति कन्दमूल हैं अथवा किसी वृक्ष पर लगने वाले फल हैं ? अण्डे में यदि जीव नहीं होता तो अण्डज-सृष्टि पक्षी-सर्प, मछली, मेंढक, कछुआ आदि की उत्पत्ति कैसे होती है ? बिना जीव के जीवन हो ही नहीं सकता और जीवन के बिना शरीर की वृद्धि तथा विकास नहीं हो सकता। जिन अण्डों में जीव नहीं होता वे कुछ ही समय में सड़कर समाप्त हो जाते हैं।

इस विषय पर दो विद्वानों की सम्मति पढ़िए। पं० श्री गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए. लिखते हैं—

पूर्वपक्ष—कुछ ऐसे अण्डे भी होते हैं जो मुर्गी बिना मुर्गे के साथ मैथुन किये ही स्वयं देती है और उनमें से बच्चा नहीं होता। वे बेजान (निर्जीव) होते हैं। उनके खाने में तो कोई हानि नहीं ?

उत्तरपक्ष—हम नहीं जानते। यह आप जानें। यदि कोई निर्जीव अण्डा हो तो उसमें हिंसा का प्रश्न नहीं उठेगा परन्तु उसे खाना चाहिए या नहीं यह और प्रश्न है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर्वपक्ष—यह क्यों ?

उत्तरपक्ष—देखिए खाने का निषेध दो कारणों से होता है—एक वैद्यक सम्बन्धी कारणों से, दूसरा आचार-सम्बन्धी कारणों से। शुद्ध-पवित्र दूध स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होते हुए भी यदि चोरी का है तो त्याज्य है और विष चोरी का न होते हुए भी त्याज्य है। पहली अवस्था आचार शास्त्र से सम्बन्ध रखती है और दूसरी वैद्यक से।

अब देखना चाहिए कि यदि मुर्गी बिना मुर्गे के संसर्ग के एक ऐसा अण्डा देती है जो निर्जीव है (मैं यह नहीं कह सकता कि ऐसा सम्भव है, मैं थोड़ी देर के लिए आपका विश्वास किये लेता हूँ) तो वह अण्डा क्या होगा ? किसी प्राणी के शरीर में चार प्रकार के पदार्थ बनते हैं। पहले वे जो उसके शरीर के वास्तविक अङ्ग हैं और शरीर को शक्ति पहुँचाते हैं। दूसरे वे जो मल के रूप में बनते हैं और जो भिन्न-भिन्न मार्गों से मल-मूत्र आदि के रूप में निकलते रहते हैं। तीसरे वे जो शरीर में रोग के रूप में उत्पन्न होते हैं और जिनसे शरीर को हानि पहुँचती है। चौथे वे जो माता के शरीर में सन्तति का शरीर बनाते हैं जैसे गर्भ या अण्डा। अब बताइए आपका बताया हुआ अण्डा किस कोटि में आता है ? पहली कोटि में आ नहीं सकता क्योंकि वह मुर्गी के शरीर का अङ्ग नहीं है। चौथी कोटि में भी नहीं आता क्योंकि वह निर्जीव होने तथा बाप से उत्पन्न न होने के कारण सन्तति का शरीर नहीं है। अब दो कोटियाँ रह गईं या तो वह मुर्गी के शरीर का मल है या रोग का अंश है। दोनों दशाओं में उसका खाना हितकर न होगा। मैं तो समझता हूँ कि अण्डे का चस्का जिनको लग गया है वे उचित-अनुचित का विचार न करके नये-नये बहाने निकालते रहते हैं। जो अण्डे खाते हैं वे यह तो विवेक करते नहीं कि इसमें से बच्चा पैदा होगा या नहीं। जो बच्चे को मारकर खा जाएँ उनको अण्डे की क्या परवाह! उन्हें तो खाने से काम। वे तो जीभ के गुलाम हैं। फिर यदि कोई ऐसा विवेक रक्खे भी कि मैं केवल निर्जीव अण्डा ही खाऊँगा तो उसको बिना मुर्गों के मुर्गियाँ पालनी होंगी, फिर देखिए कितने अण्डे खाने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे उसका अनुकरण करने के लिए अन्य प्रकार के अण्डे भी खायेंगे। इस प्रकार अण्डे खाने की प्रथा चल पड़ेगी।

—हम क्या खायें, घास या मांस, द्वितीय संस्करण पृष्ठ ६७-६८

अब एक अमेरिकन युवक के विचार भी पढ़िए—

अण्डे दो प्रकार के होते हैं—एक उत्पादक [Fertile] और दूसरे अनुत्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[Unfertile]। यदि ग्रण्डा उत्पादक है तो वह एक शिशु मुर्गी के भ्रूण का घोंसला है और उसे खाना यानी एक भ्रूण को गिराना और एक छोटे जीव की (जिन्दगी की) हत्या करना है। इस प्रकार का तत्त्व किसी भी तरह से शाकाहार के अन्तर्गत नहीं माना जा सकता। यदि दूसरी ओर ग्रण्डा ग्रनुत्पादक है तब भी हमें उसमें स्थित शरीर रचना और शारीरिक तत्त्व पर ध्यान देना होगा। वह किसी झाड़ी या पेड़ पर पैदा नहीं होता यानी वनस्पति नहीं है। वह ऐसी चीज नहीं है (जैसे दूध) जिसे एक मादा जानवर ने ग्रपने बच्चों के लिए खाने की सामग्री के रूप में दिया हो। फिर वह क्या है? कचरे का एक रूप, जिसे उस पक्षी ने ग्रपने शरीर से बाहर निकाल फेंका है।

ग्रगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो ग्रण्डा शरीर में ग्रधिक बलगम यानी कफ़ पैदा करने वाले पदार्थों में से है और मानव शरीर में कोलैस्टरोल की मात्रा बढ़ाने में सहायक होता है। जब मुर्गी ग्रपनी प्रौढ़ावस्था में पहुँचती है और ग्रधिक ग्रण्डे नहीं देती तो ज़्यादातर उन्हीं को हलाल कर दिया जाता है या हलाल करने के लिए बेच दिया जाता है और उनका माँस लोग बड़े मजे से खाते हैं।

वैसे कई पाश्चात्य देशों में ग्रण्डा शाकाहारी माना जाता है क्योंकि वह वास्तविक प्राणी का माँस नहीं है। मेरे दृष्टिकोण से किसी भी प्रकार का ग्रण्डा किसी भी हालत में शाकाहारी नहीं माना जा सकता।

—ग्रमेरिकन शाकाहारी युवक एच० जे० दिनशा
धर्मयुग ११ मई १९६९

आइए, हिंसा और ग्रहिंसा की एक ग्रन्य दृष्टिकोण से विवेचना करें। पाप तीन प्रकार के होते हैं—१. कृता २. कारिता और ३. ग्रनुमोदिता।

१. **कृता**:—वे पाप हैं जिन्हें मनुष्य स्वयं करता है।

२. **कारिता**:—वे पाप हैं जिन्हें मनुष्य स्वयं तो नहीं करता परन्तु दूसरों के द्वारा कराता है।

३. **ग्रनुमोदिता**:—वे पाप हैं जिनके करने में मनुष्य सम्मति देता है, ग्रनुमोदन करता है।

पापों के इस वर्गीकरण को ध्यान में रखते हुए ग्रब ग्राप मुर्गियों की ओर आएँ। भारत में एक मुर्गी सामान्यतया एक वर्ष में २०० ग्रण्डे देती है। विदेशों में एक मुर्गी प्रायः ३०० अण्डे देती है। ग्रब भारतवर्ष में भी होड़ लगी हुई है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि एक मुर्गी से प्रतिवर्ष तीन सौ अण्डे प्राप्त किये जाएँ। इन अण्डों की प्राप्ति के लिए इन्हें इस प्रकार के खाद्य पदार्थ दिये जाते हैं जिनसे इनके प्रजनन-अंगों को अधिक कार्य करना पड़ता है। क्या यह हिंसा नहीं है? पोल्ट्री फार्मों में बच्चों की चौंच काट दी जाती है क्या यह हिंसा नहीं है? जब किसी घर में कोई बच्चा उत्पन्न होता है तो क्या कोई उसके नाक-कान काट सकता है? मुर्गियों को इन्जैक्शन्स लगाये जाते हैं क्या यह हिंसा नहीं है? उनकी अच्छी प्रकार देख-भाल भी नहीं की जाती। यदि आप अण्डे खाते हैं तो आप उन सब पापों के भागी भी बनेंगे जो आपके लिए किये जा रहे हैं (कारिता)। साव-धान! इन निरपराध पक्षियों को सताने में सहायक मत बनो। स्मरण रखो—धर्मो रक्षति रक्षितः—रक्षा किया हुआ धर्म मनुष्य की रक्षा करता है।

यह तो हुई हिंसा और अहिंसा की बात। यदि मुर्गे के संसर्ग के बिना भी मुर्गी अण्डा दे देती है जिसे Faked Egg, निर्जीव अण्डा अथवा Vegetable Egg, शाकाहारी अण्डा कहा जाता है उसे भी नहीं खाना चाहिए, इस विषय का स्पष्टीकरण मैं एक दृष्टान्त द्वारा करूँगा।

कहते हैं कि एक बनियाँ अपने मकान में सो रहा था। जब वह सो रहा था तब किसी बिल से एक साँप निकला और बनिये की छाती पर से होकर निकल गया। साँप के छाती पर से निकलने पर लालाजी की आँख खुल गई और यह जान कर कि साँप मेरी छाती पर से निकल गया है, वे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। लालाजी के रोने-पीटने की आवाज सुनकर लोग इकट्ठे हो गये और लालाजी से उनके रोने का कारण पूछने लगे। लालाजी ने कहा—एक साँप मेरी छाती के ऊपर से निकल गया इसलिए रो रहा हूँ। लोगों ने कहा—साँप छाती के ऊपर से निकल कर ही तो गया है उसने तुम्हें काटा तो नहीं। लालाजी ने धाड़ मार कर रोते हुए कहा, काटा तो नहीं है परन्तु रास्ता तो देख लिया है किसी दिन काट भी लेगा।

दृष्टान्त का तात्पर्य यह है कि निर्जीव अण्डा खाने का स्वभाव बन गया तो फिर सजीव अण्डा भी खाने लग जायेंगे अतः किसी प्रकार का भी अण्डा नहीं खाना चाहिए।

अण्डों के सेवन से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक हर प्रकार की हानि होती है। अण्डे मनुष्य का भोजन नहीं हैं। जैसे मनुष्य अन्न, फल और कन्दमूल खाकर निर्वाह कर सकता है वैसे केवल अण्डे खाकर ही जीवित नहीं रह सकता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्त में हम, अण्डे नाना प्रकार के रोगों को उत्पन्न करने वाले हैं, इस विषय में कुछ सम्मतियाँ उद्धृत कर रहे हैं। पढ़िए और विचारिए—

डा० कैथराइन निम्मो, डी. सी. आर. एन, ओसियनो कैलिफ़ोरनिया (यू० एस० ए०) लिखती हैं—

Even if we had the best of eggs we would be better off without them as they are too high in Cholesterol, one important cause of arteries, heart, brain, kidney diseases and gall stones. Fruits and Vegetables and Vegetable Oils have none or hardly any Cholesterol.

—Dr. Katherine Nimmo D. C. R. N., Oceano, California
(How Healthy are Eggs P. 7)

यदि उत्तम-से-उत्तम अण्डे भी प्राप्त हो सकें तो भी हम उनके बिना ही अधिक स्वस्थ रहेंगे क्योंकि अण्डों में कोलैस्टरोल की मात्रा इतनी अधिक होती है कि अण्डों के सेवन से रक्तवाहिनी शिराओं के रोग, हृदय की बीमारियाँ, हाई ब्लड-प्रैशर=अधिक रक्तचाप, गुर्दों की बीमारी, पित्त की थैली में पथरी आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। फलों, सब्जियों और वनस्पति तेलों में केलैस्टरोल बिल्कुल नहीं होता अथवा नाम मात्र को होता है।

डा० जे० एमन विल्किज, इंगलैण्ड लिखते हैं—

Eggs are also harmful. You may say that "The Egg and I get along well" but a Chemical Analysis proves differently. The yolk of the egg contains Cholesterol—a waxy alcohol, which deposits in the liver and blood vessels, producing corrosion and hardening of the artries.

—Dr. J. Aman Wilkins, England
(How Healthy Are Eggs P. 6—7)

अण्डे भी हानिकारक हैं। तुम कह सकते हो कि "अण्डों से मेरे स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं होती" परन्तु अण्डों का रसायनिक विश्लेषण तुम्हारी धारणा के विरुद्ध निर्णय देता है। अण्डे की जर्दी में कोलैस्टरोल नामक तत्त्व पाया जाता है जो एक चिकना अल्कोहल (शराब) होता है। यह जिगर में एकत्र होता है और फिर रक्तवाहिनी शिराओं में जख्म और कड़ापन उत्पन्न करता है।

डा० रॉबर्ट ग्रास तथा प्रो० इरविंग डैविडसन, इंग्लैंड घोषणा करते हैं—

An egg contains about 4 grains of Cholesterol. When eggs are

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

eaten, the Cholesterol content of the blood rises and the tendency towards the development of gall stones and perhaps other diseases increases.

—Dr. Robert Gross & Prof. Irving Davidson, England
(How Healthy Are Eggs. P. 3)

एक अण्डे में लगभग ४ ग्रेन कोलेस्ट्ररोल होता है। अण्डे खाने से रक्त में कोलेस्टरोल की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण पित्ताशय में पथरी और दूसरे रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

डा० रॉबर्ट ग्रास एक और महत्त्वपूर्ण बात लिखते हैं—

The egg-white is the most harmful portion of the egg. Animals fed on fresh egg-white developed a severe skin inflammation and paralysis.

—Dr. Robert Gross, England
(How Healthy Are Eggs P. 3--4)

अण्डे की सफ़ेदी अण्डे का सबसे अधिक खतरनाक भाग है। जिन पशुओं को अण्डे की सफ़ेदी खिलाई गई उनकी चमड़ी सूज गई और उन्हें लकवा मार गया।

डा० आर० जे० विलियम्स, इंग्लैण्ड लिखते हैं—

The factor in egg-white that causes eczema is **AVIDIN.**

—Dr. R. J. Williams, England
(How Healthy Are Eggs. P. 3--4)

अण्डे की सफ़ेदी में 'एवीडिन' नामक तत्त्व होता है जो ऐग्जिमा का कारण होता है।

महान् आयुर्वेद शास्त्रज्ञ डा० ई० वी० मैक्कॉलम की सम्मति है—

Eggs are deficient in calcium and do not contain Carbohydrates. So their tendency is to favour putrefactive decomposition in the intestines rather than to encourage fermentative organism to develop.

—Dr. E. V. McCollum—A Great Medical Authority
(Never Knowledge of Nutrition P. 17)

अण्डों में कैलशियम=चूने की मात्रा बहुत कम तथा कार्बोहाइड्रेट्स का सर्वथा अभाव होता है अतः वे बड़ी आंतों में जाकर जठराग्नि को प्रदीप्त करने की बजाय वहाँ दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डा० गोविन्दराज का कथन है—

Eggs are acid forming having an excess of Nitrogen, fat and phosphoric acid and cannot therefore form the natural diet of man.

—Dr. Govind Raj (How Healthy Are Eggs P. 8)

अण्डों में नाइट्रोजन, फास्फ़ोरिक ऐसिड (तेज़ाब) और चरबी की अधिक मात्रा होती है अतः ये शरीर में तेज़ाबी द्रव्य उत्पन्न करते हैं और मनुष्य को रोगी बनाते हैं।

प्रो० ओकाड़ा, इंग्लैंड की खोजों का परिणाम निम्न है—

Both the bile and pancreatic juice are indifferent to egg--white. Nearly 30 to 50% of the egg-white passes through the digestive tract undigested.

—Prof. Okada, England (How Healthy Are Eggs P. 3)

पित्त और पाचन-रस—ये दोनों अण्डे की सफ़ेदी के साथ नहीं घुलते फलतः अण्डे की सफ़ेदी का ३० से ५० प्रतिशत भाग भोजन नालिका से बिना हजम हुए ही निकल जाता है।

डा० जे० एमन विल्किंज ने एक बहुत सुन्दर बात लिखी है—

The egg is the unborn chick. Egg eating is prenatal poultry robbery or chicken foeticide.

—Dr. J. Amon Wilkins (How Healthy Are Eggs P. 6)

अण्डा उत्पन्न न हुआ (भावी) मुर्गी का बच्चा है। अतः अण्डा खाना एक प्रकार से गर्भ पर डकैती डालने के समान है अथवा यूं कहिए कि मुर्गी के बच्चे की हत्या के बराबर है।

डा० डब्ल्यू० जे० जयासूरिया, लंका ने बहुत ही मार्मिक बात लिखी है—

Natural law cannot be changed from time to time. A good act bears good fruit and evil act bears bad friut. To that order the destruction of life bring an evil effect on the doer. Hence do not eat meat and eggs which cause destruction of life.

—Dr. W. J. Jayasureya, Ceylon (How Healthy Are Eggs P. 5)

प्रकृति के नियम अटूट एवं अटल हैं, समय के अनुसार उन्हें बदला नहीं जा सकता। 'उत्तम कर्मों का फल उत्तम होता है और बुरे कर्मों का फल बुरा' इस नियम के अनुसार दूसरों के जीवन को नष्ट करनेवाला अपने लिए आपत्तियों को निमन्त्रण देता है। अण्डे और मांस का सेवन मत करो क्योंकि ये दूसरों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन को नष्ट करके मिलते हैं।

डा० कामता प्रसाद, अलीगंज, एटा, (उ० प्र०) लिखते हैं—

The origin and growth of eggs is from filthy substance which man abhors even to touch. Their eating involves cruelty and robbery. They are more harmful to human health than anything else. Man can recoup his health and make his plate tasteful by various vegetables, fruits and nuts.

-Dr. Kamta Prasad Aliganj (Etah) (How Healthy Are Eggs P. 8)

अण्डे की उत्पत्ति और विकास ऐसे गन्दे पदार्थों के मेल से होती है जिन्हें छूते हुए भी मनुष्य को घृणा होती है। अण्डों का सेवन डकैती और क्रूरता है। मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने के लिए इनसे बढ़कर और कोई पदार्थ नहीं है। मनुष्य अपना स्वास्थ्य विभिन्न प्रकार के फलों, सब्जियों एवं सूखे मेवों से प्राप्त कर सकता है और इन्हीं से जीभ के स्वाद की पूर्ति भी हो सकती है।

डा० आनन्द निमल सूरिया की सम्मति भी पठनीय है—

The food value of milk is high as excellent proteins are available in it. There is little that eggs can supply which milk cannot. In the age of Science practically all the minerals and the vitamins can be supplied artificially and these could supplement milk where necessary. I feel confident that a Lacto Vegetarian diet properly constructed is as nourishing a diet as containing meat or egg. Dependence on meat and eggs for minerals and vitamins is no longer necessary.

—Dr. Anand Nimal Suria (How Healthy Are Eggs P. 5--6)

दूध में उत्तम कोटि के प्रोटीन होते हैं अत: दूध में पौष्टिक तत्त्व भारी मात्रा में होते हैं। ऐसा कोई पौष्टिक तत्त्व नहीं है जो अण्डे में होता हो और दूध में न मिले। वर्तमान वैज्ञानिक युग में सभी प्रकार के विटामिन्स और खनिज लवण कृत्रिम रूप में मिल सकते हैं और जहां उनकी आवश्यकता हो वे दूध के साथ सहायक के रूप में लिये जा सकते हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि सन्तुलित शाकाहारी भोजन उतना ही पोषक एवं शक्तिदायक है जितना कि मांस और अण्डे। अत: विटामिन्स और खनिज लवणों के लिए अण्डे और मांस पर निर्भर रहना व्यर्थ है। सभी विचार कर अण्डे खाना छोड़ें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वरदा वेदमाता की

शिक्षा और आशीर्वाद

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ ।।

अथर्ववेद १४-१-२२

तुम दोनों सदा एक दूसरे में मगन रहो। कभी एक दूसरे से अलग न होवो। दीर्घ आयु तक सांसारिक सुखों का उपभोग करो। पुत्र और पौत्र तुम्हारे आनन्द व कल्याण की वृद्धि करें।

You both shall find a source of immense pleasure in each other. Unite never to separate. Enjoy a long blissful life. May God bless you with sons and grandsons !

युवं भगं सं भरतं समृद्धमृतं वदन्तावृतोद्येषु ।
ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय चारु संभलो वदतु वाचमेताम् ।।

अथर्ववेद १४-१-३१

वाणी व व्यवहार में सदा एक दूसरे के प्रति सरल रहो। दाम्पत्य-सुख का यही वास्तविक रहस्य है।

मधुर व शिष्ट वाणी द्वारा सदा पत्नी को प्रफुल्लित रखो। पत्नी से प्रशंसा प्राप्त करने का यही मूलमन्त्र है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Be plain and simple in your speech and action. That will lead you to real happiness of married life.

Adore your wife with sweet and polished tongue. And, your wife will ever be full of admiration.

देवस्ते सविता हस्तं गृह्णातु सोमो राजा सुप्रजसं कृणोतु ।

अथर्ववेद १४-१-४९

पाणिग्रहण के अवसर पर तुम्हारा पति सूर्य के समान तेजस्वी है । संतानोत्पत्ति के अवसर पर चन्द्रमा के समान कमनीय ।

Like Sun he holds your hand. Like Moon he makes his love.

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः ।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव ।।

अथर्ववेद १४-२-२७

तुम सास और ससुर के लिए सुखदायिनी होवो । पति और घर के लिए आनन्ददायिनी होवो । घर का प्रत्येक प्राणी तुमसे पुष्टि प्राप्त करे ।

You shall add to the comforts of your parents-in-law, to the happiness of your husband, and to the strength of every creature in the home.

अमोहमस्मि सा त्वं सामाहमस्मि ऋक् त्वम् द्यौरहं पृथ्वी त्वम् ।
ताविह सं भवाव प्रजामा जनावहै ।।

अथर्ववेद १४-२-७१

मैं श्वास हूँ, तू शक्ति है । मैं साम हूँ, तू ऋचा है । मैं आकाश हूँ, तू पृथ्वी है । आओ, हम एक हो जाएं । एक नवीन सृष्टि का सूत्रपात करें ।

I am the breath, you are the vitality. I am the song, you are the meaning. I am the sky, you are the earth.

Come, let us be one, and embark on a new creation.

—प्रो० वेदव्रत द्वारा अपनी कन्या मृदुला के विवाह पर प्रसारित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लन्दन की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री **श्रीमती लीलावती जी** का अचानक ही दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। २८ सितम्बर को आप लन्दन प्रस्थान के लिए सामान बांध रही थीं कि विधि की भाग्य-रेखा ने उन्हें अपने पास बुला लिया। आप भारत के प्रसिद्ध विधि-विशेषज्ञ श्री सोमनाथ एडवोकेट की बड़ी बहन थीं। प्रभु संतप्त परिवार को कष्ट-वियोग सहने की शक्ति दें और दिवंगतात्मा को शान्ति प्रदान करें।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग
करौल बाग, नई दिल्ली-५

कार्तिक संवत् २०२७
नवम्बर सन् १९७०

Regd. No D.
1631

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् और अन्वेषक

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

आप राष्ट्र की प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था महाविद्यालय ज्वालापुर के उप-कुलपति चुने गए हैं। 'जन-ज्ञान' इस सम्मान पर आचार्य जी का हार्दिक अभिनन्दन करता है।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi